माघ माह , कृष्ण पक्ष 2 1 वर्ष, अंक 15 पृष्ठ 8 मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज सोमवार 07 फरवरी 2022 विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

सागर में जा मिलीं सुरों की स्वरगंगा...

अनंत यात्रा पर स्वर कोकिला; राजकीय सम्मान के साथ हुआ अंतिम संस्कार, भाई और भतीजे ने दी मुखाग्नि

लता मंगेशकरः शब्द, सुर, और लय के महायोग की प्राण -प्रतिष्ठा करने वाला स्वर, प्रधानमंत्री मोदी ने लता दीदी को प्रणाम किया, लताजी के पैर छूकर शाहरुख ने दी श्रद्धांजलि, पढ़ी दुआ, लोगों ने रोते हुए उनके गीत गुनगुनाए, भारत रत्न स्वर कोकिला लता मंगेशकर के निधन पर दो दिनों के राष्ट्रीय शोक की घोषणा

उपलब्धियों भरा सफर

- 1969 में पद्मभूषण से सम्मानित
- 1989 में दादा साहब फाल्के पुरस्कार प्राप्त करने वाली फिल्म इंडस्ट्री की पहली महिला
- वर्ष 1974 में लंदन के सुप्रसिद्ध रॉयल अल्बर्ट हॉल में गाने वाली पहली भारतीय गायिका
- सन 1974 में दुनिया में सबसे अधिक गीत गाने का 'गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड
- 1999 में विभूषण से सम्मानित
- 2001 में देश के सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न से सम्मानित
- 2001 में महाराष्ट्र रत्न से सम्मानित
- 36 भाषाओं में 30,000 से अधिक गाने गाएं
- 1984 में मध्य प्रदेश सरकार ने उनके नाम पर संगीत का पुरस्कार रखा

मुंबई

ये बसंत हमसे रूठ गया, सदा के लिए... भारत ने अपना रत्न खो दिया... लता जी नहीं रहीं। ये सरस्वती का सुर विराम है। उमर 92 साल हो चुकी थी। कोरोना और निमोनिया से 29 दिन लड़ीं भी, लेकिन आखिरकार रविवार सुबह सवा आठ बजे हम सबको, देश को, दुनिया को ना कह गईं। इलाज मुंबई के ब्रीच कैंडी अस्पताल में चल रहा था। लता जी के निधन पर 2 दिन का राष्ट्रीय शोक रहेगा। देशभर में झंडा आधा झुका रहेगा।

पंचतत्व में विलीन हुईं लता दीदीः स्वर कोकिला भारत रत्न लता मंगेशकर रविवार की शाम अपनी अंतिम यात्रा पर रवाना हो गईं। भाई हृदयनाथ और भतीजे आदित्य ने मुंबई के शिवाजी पार्क में शाम 7 बजकर 16 मिनट पर उन्हें मुखाग्नि दी। इस दौरान उनकी बहनें उषा, आशा, मीना मौजूद थीं।

प्रधानमंत्री मोदी ने लता दीदी को प्रणाम कियाः लता जी का पार्थिव शरीर शिवाजी पार्क पहुंचा जहां उनके भाई हृदयनाथ मंगेशकर के

बेटे आदित्य ने मुखाग्नि दी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शिवाजी पार्क पहुंचकर स्वर कोकिला को श्रद्धांजलि दी। इसके बाद वे शिवाजी पार्क से रवाना हो गए। यहां शाहरुख खान और सचिन तेंदुलकर समेत कई कलाकार, राजनेता और फिल्म इंडस्ट्री से जुड़े मौजूद रहे।

अंतिम यात्रा में शामिल हुए हजारों लोगः इससे पहले, सेना के जवान लता जी के पार्थिव शरीर को तिरंगे में लपेटकर घर से बाहर लाए। इसके बाद आर्मी, नेवी, एयरफोर्स और महाराष्ट्र पुलिस के जवानों ने उनकी अर्थी को कंधा दिया। उनका पार्थिव शरीर फूलों से सजे सेना के ट्रक में रखकर शिवाजी पार्क ले जाया गया। मुंबई के हजारों लोग लता ताई को अंतिम विदाई देने सड़कों पर उतर आए। लता जी की पार्थिव देह दोपहर 1.10 बजे ब्रीच कैंडी अस्पताल से उनके घर पहुंची थी।

लता जी का निधन संगीत जगत के एक स्वर्णिम युग का अंत

लता मंगेशकर को फिल्मों में उनके द्वारा दिए गए अभूतपूर्व योगदान के लिए उन्हें कई पुरस्कार से सम्मानित किया गया। लता मंगेशकर को साल 1969 में पद्म भूषण पुरस्कार ,साल 1989 में दादा साहब फाल्के पुरस्कार , साल 1999 में पद्म विभूषण(1999) और साल 2001 में 'भारत रत्न' से भी सम्मानित किया गया। वे अविवाहित रहीं। महान गायिका व भारत की अनमोल रत्न लता मंगेशकर सभी के लिए आदर्श हैं और उनका जीवन कई लोगों के लिए प्रेरणादायक है। अपनी सुरीली आवाज से दर्शकों के दिलों को छूने वाली लता मंगेशकर के चाहने वालों की संख्या लाखों में है। लता मंगेशकर का निधन संगीत जगत के एक स्वर्णिम युग का अंत है।

विलक्षण लता जी... केवल एक दिन गई थीं स्कूल

मुंबई

स्वर कोकिला लता मंगेशकर का रविवार को मुंबई के ब्रीच कैंडी अस्पताल में निधन हो गया। बीते दिनों कोरोना से संक्रमित होने के बाद उन्हें ब्रीच कैंडी अस्पताल में भर्ती कराया गया था। लता मंगेशकर के जीवन की अनेक ऐसी घटनाएं हैं जो नई पीढ़ी को भविष्य में भी प्रेरणा देती रहेंगी। यह बहुत कम ही लोगों को मालूम होगा कि अपने जीवन में पढ़ने के लिए वह केवल एक दिन स्कूल गई थीं। इस बारे में भी एक दिलचस्प वाकया सामने आता है। एक किताब के हवाले से बताया है कि अपने स्कूल के पहले दिन लता मंगेशकर अपनी छोटी बहन आशा को अपने साथ ले गई थीं। बहन को साथ लाने पर शिक्षिका ने विरोध तगड़ा विरोध किया था। इस पर वह गुस्से में घर वापस लौट आई थीं और फिर कभी भी स्कूल नहीं लौटीं। इस घटना के वक्त लता जी की छोटी बहन आशा जी लगभग 10 महीने की थीं। बाद में लता जी ने घर पर ही परिजनों की मदद से मराठी वर्णमाला सीखी। मराठी में ही गायिका ने मूल बातें पढ़ना और लिखना सिखा। 'लता मंगेशकर... इन हर ओन वाइस' नामक किताब में लेखिका और फिल्म निर्माता नसरीन मुन्नी कबीर कहती हैं ।

त्याग, समर्पण, संघर्ष, उसूल, रसूख इनसे बुनकर तैयार हुई लता मंगेशकर

कई सारी यादों से भरा लता जी का सफर...

मुंबई

लता मंगेशकर ने अपने लंबे करियर में अनगिनत गाने गाए हैं। हर कोई उनकी आवाज का दीवाना है। देश की पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी से भी लताजी की मुलाकात होती थी। इंदिरा गांधी को लता मंगेशकर की आवाज बेहद पसंद थीं। लता मंगेशकर और इंदिरा गांधी दोनों ही आज इस दुनिया में नहीं हैं लेकिन उनकी एक तस्वीर में दोनों का मधुर रिश्ता साफ नजर आता है। लता मंगेशकर की आवाज को तत्कालिन प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू भी काफी पसंद करते हैं। एक बार जब लता मंगेशकर ने नेशनल स्टेडियम में प्रधानमंत्री नेहरू के सामने 'ऐ मेरे वतन के लोगों जरा आंख में भर लो पानी' गाना गाया था, तो नेहरू जी की आंखों से आंसू आ गए थे। लता जी की आवाज में इस गाने को सुनने के बाद नेहरू जी गायिका से बात करना चाहते थे। इस दौरान जब जवाहरलाल नेहरू ने लता जी से मुलाकात की थी, तब उन्होंने स्वर कोकिला से कहा कि लता तूने मुझे रुला दिया। लता जी अक्सर सफेद साड़ी में ही देखी जाती थीं। आज भी अगर उनकी पुरानी तस्वीरों को उठाकर देखा जाए, तो अधिकतर में वह इसी लिबास में नजर आती हैं। जब लता मंगेशकर को सिल्वर डिस्क से सम्मानित किया गया था। उस मौके की तस्वीर में भी वह इसी अंदाज में नजर आई थीं।

डूंगरपुर के राजा को दिल दे बैठी थीं लता जी

जयपुर

स्वर कोकिला लता मंगेशकर की आवाज की दुनिया दीवानी है, लेकिन उनके निजी जीवन के बारे में कम ही लोग जानते हैं। उन्होंने ताउम्र शादी नहीं की, लेकिन प्यार से वे भी दूर नहीं रह पाईं। प्यार भी ऐसा कि, पूरी जिंदगी उसी के नाम कर दी। उन्हें राजस्थान के पूर्व डूंगरपुर राजघराने के राज सिंह से प्यार हुआ था। राज उन्हें प्यार से मिट्ठू बुलाते थे।

दोनों क्रिकेट के शौकीन थेः लता मंगेशकर और राज सिंह डूंगरपुर की दोस्ती कब प्यार में बदल गई, इसका अंदाजा तो उन दोनों को भी नहीं था। राज लता के गानों के दीवाने थे। वे एक टेप रिकॉर्डर हमेशा अपनी जेब में रखते थे और उनके गाने सुनते थे। लता की क्रिकेट के प्रति दीवानगी भी छिपी नहीं है। अक्सर वे मैदान पर राज को क्रिकेट खेलते देखने जाती थीं। दोनों अक्सर मिला करते थे।

पहली मुलाकात में ही दिल दे बैठे थेः राज 1959 में लॉ करने मुंबई गए थे। क्रिकेट खेलने के भी शौकीन थे। 1955 से ही राजस्थान रणजी टीम के सदस्य थे। मुंबई के क्रिकेट मैदान में लता के भाई हृदयनाथ मंगेशकर से मुलाकात हुई। उनके भाई अक्सर राज को अपने साथ घर लेकर जाते थे। राज सिंह पहली मुलाकात में ही लता को दिल दे बैठे थे। धीरे-धीरे बात शुरू हुई। लता रिकॉर्डिंग में बिजी रहती थीं। बिजी शेड्यूल के कारण ज्यादा मिल नहीं पाती थीं।

जब भूखे पेट लता दीदी ने गाए 26 गाने

जयपुर

भारत रत्न लता मंगेशकर का 92 साल की उम्र में निधन हो गया। उनकी राजस्थान और जयपुर से भी यादें जुड़ी हुई हैं। यहां की संस्कृति और भाषा से उन्हें बहुत लगाव था। लता जी के प्यार का अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि अकाल पीड़ितों की मदद के लिए उन्होंने जयपुर के एसएमएस स्टेडियम में मुफ्त शो किया था। उन्होंने शो की फीस लेने के बजाए अपनी तरफ से अकाल पीड़ितों के लिए पैसे का योगदान दिया था। इस शो में लता मंगेशकर ने 26 गाने गाए थे, खास बात यह है कि उपवास पर होने के कारण उन्होंने पूरे दिन कुछ भी नहीं खाया। 26 नवंबर 1987 को हुए इस शो को देखने के लिए तत्कालीन मुख्यमंत्री हरिदेव जोशी भी टिकट खरीदकर पहुंचे थे। शो से 1 करोड़ 1 लाख रुपए की कमाई हुई, जिसका चेक उट को अकाल पीड़ितों के लिए भेंट किया गया था।

चार दिन रहीं थीं राजस्थान के दौरे पर : राजस्थान में 1987 के दौरान लगातार अकाल पड़ रहा था। अकाल पीड़ितों की मदद के लिए सुर संगम संस्था ने जयपुर के एसएमएस स्टेडियम में शो रखा। संस्था के आग्रह पर लता मंगेशकर ने बिना फीस लिए प्रोग्राम करना स्वीकार कर लिया। उस प्रोग्राम में सभी कलाकारों ने मुफ्त परफॉर्म किया था। उस समय लता जी चार दिन तक राजस्थान दौरे पर रहीं और ज्यादातर समय जयपुर में बिताया था। वे अजमेर भी गई थीं। लता मंगेशकर अकाल पीड़ितों के लिए शो करने 24 नवंबर 1987 को जयपुर पहुंचीं थीं ।

क्रिकेट पर लता जी के एहसान...

मुंबई

लता मंगेशकर अब नहीं रहीं, लेकिन उनका एक एहसान क्रिकेट प्रेमियों को हमेशा याद रहेगा। 1983 में पहली बार भारतीय क्रिकेट टीम ने वर्ल्ड कप जीता था। दुनिया की सबसे अमीर क्रिकेट बोर्ड बीसीसीआई के पास उस समय इनाम देने के लिए पैसे तक नहीं थे। तब लता जी ने प्रोग्राम कर खिलाड़ियों के लिए इनामी राशि जुटाई थी। यही नहीं उन्होंने गाने के लिए बीसीसीआई से एक भी पैसा नहीं लिया था। दरअसल 1983 वर्ल्ड कप जीतकर आई भारतीय टीम को बीसीसीआई के तत्कालीन अध्यक्ष एनकेपी साल्वे पुरस्कार देना चाहते थे, लेकिन पैसों की कमी के चलते वह विवश थे। साल्वे ने इस गंभीर स्थिति से निकलने के लिए स्वर कोकिला लता मंगेशकर से मदद मांगी। भारतीय टीम की जीत के जश्न के लिए दिल्ली के इंदिरा गांधी इनडोर स्टेडियम में लता मंगेशकर कॉन्सर्ट आयोजित किया गया। यह कॉन्सर्ट काफी हिट रहा और इससे 20 लाख रुपए की कमाई हुई। बाद में भारतीय टीम के सभी सदस्यों को इनाम के तौर पर एक-एक लाख रुपए दिए गए। इस कॉन्सर्ट में लता मंगेशकर ने कई गाने गाए, लेकिन 'भारत विश्व विजेता' गाने को खूब सराहा गया। इस गाने का संगीत लता मंगेशकर के भाई हृदयनाथ मंगेशकर ने दिया था।

खबर संक्षेप

भारत रत्न स्वर कोकिला' लता मंगेशकर के निधन पर सांसद प्रो. रीता बहुगुणा जोशी ने किया शोक व्यक्त

नैनी। इलाहाबाद सांसद के मीडिया प्रभारी अभिषेक शुक्ला ने एक विज्ञप्ति जारी कर बताया कि सुप्रसिद्ध गायिका लता मंगेशकर जी के निधन पर इलाहाबाद सांसद प्रोफेसर रीता बहुगुणा जोशी ने गहरा शोक व्यक्त करते हुए कहा कि भारत रत्न स्वर कोकिला गायिका लता मंगेशकर के निधन से प्रत्येक भारतवासी शोक स्तब्ध है। वह एक शहस्त्राब्दी महिला थी जिनकी मधुर आवाज करोड़ों दिलों में बसती है वह भारत की शान थीं। भारत रत्न स्वर्गीय लता मंगेशकर जी को सबसे बड़ी श्रद्धांजलि यह है कि *बीटिंग द रिट्रीट में उनका सुप्रसिद्ध राष्ट्र भक्ति गीत ए मेरे वतन के लोगों जरा याद करो कुबार्नी को शामिल किया गया है।

लता मंगेशकर के निधन से शोक,दी श्रद्धांजलि

सहसों। संगीत कोकिल पार्श्व गायिका लता मंगेशकर के निधन पर रविवार को सहसों बाजार में सामाजिक कार्यकताओं ने आलोक कुमार सिंह की अध्यक्षता में एक गोष्ठी के माध्यम से श्रद्धांजलि सभा का आयोजन कर उनके छायाचित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर नम आंखों से उन्हें सभी ने श्रद्धांजलि अर्पित की। श्रद्धांजलि सभा में वक्ताओं ने कहा की हमने एक महान शख्सियत खोई है। जिसके स्वर का दुनिया हमेशा कायल रहेगी, उनके निधन से संगीत जगत के एक युग की समाप्ति हो गई। उनकी कमी हमेशा लोगों को खलेगी उन्हें हम सब मिलकर शत-शत नमन करते हैं। श्रद्धांजलि अर्पित करने वालों में सामाजिक कार्यकर्ता हिमांशु सिंह, अभय राज सिंह, सक्षम मोदनवाल, शेरू केसरवानी, कृष्ण बल्लभ द्विवेदी, चिंतामणि शुक्ला, अशोक कुमार पांडे, फूल चंद्र साहू, सोहनलाल केसरवानी, बाबा सिंह, मनीष सिंह, शबनम बानो सहित आदि लोग मौजूद रहे।

अनियंत्रित बोलेरो ने बाइक सवार को रौंदा, मौत

एक्सीडेंट के पश्चात सड़क पर पड़ी डेड बॉडी

अखंड भारत संदेश

मेजा रोड। क्षेत्र के दिघिया पुलिस चौकी के समीप प्रयागराज-मिजार्पुर राजमार्ग पर शनिवार की देर रात तकरीबन साढ़े बारह बजे के आसपास तेज रफ्तार में जा ही बोलेरो ने अनियंत्रित होकर बाइक सवारों को रौंद दिया। इससे बाइक सवार दोनों युवकों की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई। हादसा इतना भयावह रहा कि बाइक सहित शवों के परखच्चे उड़ गए। जबकि बोलेरो चालक गाड़ी सहित रात्रि का फायदा उठाकर भाग निकला। वहीं घटना की जानकारी पर थानाध्यक्ष मेहश मिश्रा, दिघिया पुलिस चौकी उपनिरीक्षक सुभाष सिंह यादव दलबल सहित घटनास्थल पहुचें। पुलिस ने दोनों शवों को कब्जे में लिया। समाचार लिखे जाने तक पुलिस मृतकों के शिनाख्त एवम अग्रिम कार्यवाही में जुटी रही।

नहर में डूबे युवक की कोरांव में मिली लाश, हुई शिनाख्त

मिजार्पुर जिले के हलिया थाना के मघोर गांव का है मृतक

अखंड भारत संदेश

कोरांव। नहर में डूबे युवक की लाश कोरांव थानांतर्गत पचेड़ा गांव के पास बेलन नहर में मिली। शव की शिनाख्त हो गई है।

ग्रामीणों की जानकारी पर इलाकाई पुलिस ने मौके पर पहुंच कर शव को अपने कब्जे में ले लिया, और कार्यवाही करते हुए पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।मिली जानकारी के मुताबिक हलिया थाना के मघोर गांव का 23वर्षीय कमलाशंकर हरिजन पुत्र बैजू को पूना में रहकर प्राइवेट नौकरी करता था। 22 जनवरी को वह घर आया और उसी दिन मोटरसाइकिल से अपनी ससुराल बारीपुर बरबसा चला गया।वहाँ से अपने भाई की ससुराल कूदर गया। बताया जाता है कि जहाँ से चार फरवरी को घर लौटते समय शाम को बरौंधा बेलन नहर में गिर गया। जिसकी जानकारी परिजनों ने पुलिस को दे दी थी।

उस समय काफी खोजबीन के बाद भी शव को बरामद नहीं किया जा सका था। किंतु रविवार को उसका शव पचेड़ा गांव में स्थित नहर में पाया गया।जानकारी पर पुलिस पहुँच कर शव को कब्जे में लिया और पीएम के लिए भेज दिया।मृतक के बच्चे नहीं हैं।वह तीन भाइयों में तीसरे नम्बर का था।

अखिल भारतीय प्रधान संगठन ने ठोंकी ताल

एमएलसी इलाहाबाद कोशांबी निर्वाचन क्षेत्र से कमल मिश्र प्रत्याशी,मिला पंचायत प्रतिनिधियों का खुला समर्थन

अखंड भारत संदेश

कोरांव। अखिल भारतीय प्रधान संगठन उत्तर प्रदेश ने सर्व सम्मति से कमलेश मिश्रा मेजा प्रयागराज ग्राम प्रधान ओंवता को कौशांबी इलाहाबाद एमएलसी सीट से अपना उम्मीदवार चुनाव मैदान में उतारा है। जिससे सभी ग्राम प्रधानों,बीसीसी मेंबर्स,काफी संख्या में नगर पंचायत सभासद,जिला पंचायत सदस्यों ने हर्ष व्यक्त करते हुए अपना पंचायत संगठन के हितार्थ एमएलसी चुनने का फैंसला लिया है। इस निमित्त जिला अध्यक्ष प्रधान संगठन प्रयागराज सुरेश त्रिपाठी के ग्राम पंचायत चपरो ब्लॉक मेजा कोराव के बॉर्डर पर प्रधानों ने मेजा, कोरांव, उरुवा, मांडा, करछना, शंकर गढ़ तथा कौशांबी जिले के काफी संख्या में प्रधान, बीडीसी एकत्रित हुए और कमल मिश्र के नाम पर अपनी सहमति जताई।

बैठक में संगठन के प्रदेश अध्यक्ष राम सेवक यादव,उपाध्यक्ष सत्येंद्र त्रिपाठी,प्रत्याशी कमल मिश्र मंडल प्रभारी,प्रदेश संगठन के संगठन मंत्री दिलीप सोनी, इलाहाबाद मंडल के मंत्री अहद अहमद सिद्दीकी उर्फ शहजादे

एमएलसी उम्मीदवार कमल मिश्र के समर्थन में प्रधान संगठन का दृश्य

प्रधान अल्हवा, प्रदेश महा सचिव विजय शंकर पटेल, मंडल अध्यक्ष शाहआलम, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सभा सद एसोसियेशन असादुल्लाह, जिलाध्यक्ष सुरेश तिवारी, जिला विधिक सलाहकार प्रशांत पांडेय, यमुनापार महा मंत्री फतेह बहादुर निषाद, शंकर दयाल त्रिपाठी जनपदीय पदाधिकारी, ब्लॉक कोराव के अध्यक्ष रामानुज यादव सहित तथा बीसीसी संघ के पदाधिकारी भरी संख्या में भाग लिए। कार्यक्रम की सदारत प्रधान टुंडियार अनिल मिश्र ने किया। मुख्य अतिथि रामसेवक यादव ने कहा कि संगठन का जनप्रतिनिधि जब उच्च सदन में जायेगा तो पंचायतों का वजूद बढ़ेगा और विकास होगा सम्मान होगा,सभी एकजुट होकर कमल मिश्र को विजई बनाएं। शहजादे संगठन मंडलीय मंत्री ने कहा कि कमल मिश्र भारी मतों से विजई होंगे। संगठन के एमएलसी चुने जायेंगें तो ग्राम और क्षेत्र पंचायतों,नगर पंचायतों,का चहुमुखी विकास होगा। प्रधान गण किसी अन्य के सामने गिड़गिड़ाने नहीं जायेगा। साथ ही शोषण भी खत्म होगा। उन्होंने मिस्र को जीत की अग्रिम बधाई भी दी।

यमुनापार के चारों विधानसभा के भाजपा अपना दल निषाद पार्टी के प्रत्याशी का आज होगा नामाकन

लालापुर। भारतीय जनता पार्टी,निषाद पार्टी,अपना दल यमुनापार की बारा, करछना, मेजा, कोरावं चारो विधानसभा के प्रत्याशियो का होगा नामाकंन। भारतीय जनता पार्टी यमुनापार जिला मीडिया प्रभारी दिलीप कुमार चतुवेर्दी ने बताया कि बारा विधानसभा अपना दल प्रत्याशी वाचस्पति,करछना विधानसभा निषाद पार्टी प्रत्याशी पियूष रंजन निषाद,मेजा भाजपा प्रत्याशी विधायक नीलम करवरिया,कोराव विधानसभा भाजपा प्रत्याशी आरती कोल सोमवार को दोपहर नामाकनं करेगी। जिलाध्यक्ष विभवनाथ भारती ने सभी प्रत्याशियो को अग्रिम शुभकामनाएं देते हुए कार्यकर्ताओ से नामाकंन मे सम्मलित होने का आग्रह किया है।

तीन दिवसीय क्रिकेट टूनार्मेंट का हुआ शुभारंभ

सहसों। क्षेत्र के रुदापुर गांव में क्रिकेट क्लब देवनहरी प्रयागराज के सौजन्य से रविवार को तीन दिवसीय क्रिकेट टूनार्मेंट खेल का आयोजन किया गया। जिसका शुभारंभ बतौर मुख्य अतिथि कांग्रेस के पूर्व जिला उपाध्यक्ष अशफाक अहमद ने फीता काटकर किया। इस अवसर पर क्रिकेट प्रतियोगियों को संबोधित करते हुए अशफाक अहमद ने कहा खेल को खेल की भावना से खेलना चाहिए खेल में हार जाने का मतलब यह नहीं होता कि आप में ईर्ष्या और द्वेष की भावना आ जाए। हारने के बाद प्रत्येक प्रतिभागी को और मेहनत व लगन से खेल को जीतने के लिए प्रयास करना चाहिए तथा सबको एक होकर खेल को खेल की भावना से खेलना चाहिए। जिससे देश व प्रदेश एवं समाज का नाम रोशन हो सके। इस अवसर पर क्रिकेट क्लब के आयोजक अनिल कुमार ने अपने क्लब के सदस्यों सहित मुख्य अतिथि का माल्यार्पण कर स्वागत एवं अभिनंदन किया। आयोजक ने बताया कि इस क्रिकेट टूनार्मेंट प्रतियोगिता में कई गांवों से लगभग दर्जनभर प्रतिभागी खेल में प्रतिभाग कर रहे हैं। तथा इस प्रतियोगिता में जो भी टीमें विजेता उपविजेता होंगी उनको उचित ससम्मान पुरस्कार दिया जाएगा। इस मौके पर वरिष्ठ एडवोकेट देवराज उपाध्याय, प्रणय शुक्ला, अभिषेक कुमार, प्रियांशु , मयंक कुमार, पंकज बाबू , शुभम, रोहित, नितिन कुमार सहित आदि सम्मानित गण एवं प्रतियोगी उपस्थित रहे।

हंडिया में निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर का हुआ आयोजन

निःशुल्क स्वास्थ शिविर में 200 से अधिक लोगो ने पहुंच कर उठाया लाभ

अखंड भारत संदेश

हंडिया। यूफोरिएल यूथ सोसाइटी एवं हुमैनिटी इंडिया ट्रस्ट के संयुक्त तत्वाधान में लक्षागृह, हंडिया में श्याम फामेर्सी एवं हंडिया केमिस्ट एंड क्लिनिक के सहयोग से निःशुल्क स्वास्थ शिविर का आयोजन किया गया। गांवों में कई बार एक अच्छे डॉक्टर न होने की वजह से कई लोगों को सही स्वास्थ सुविधाएं प्राप्त नहीं हो पाती है और कई बार ऐसा भी होता है की डॉक्टर का क्लिनिक गाँव से अधिक दूरी पर होने से कई लोग अपने काम में व्यस्त होने के कारण बीमारियों के प्रारंभिक स्तर पर इलाज करवाने मे असमर्थ रहते हैं जिस कारण से बिमारियाँ और गंभीर हो जाती है।

यहाँ पूछने से यह भी पता चला की कई सारे परिवार ऐसे भी है जो आर्थिक स्थिति सही ना होने के कारण अपना इलाज करवाने में असमर्थ हैं और समय निकाल कर शहर भी नहीं जा सकते क्योंकी वह सब रोज कमाने रोज खाने वाले लोग हैं। डॉक्टरों का कहना था कि लोग असंतुलित खानपान के साथ ही दिनचर्या के कामों में तनाव लेने से इस तरह के रोगों की चपेट में आते हैं। इनसे बचाव के लिए लोगों को समय-समय पर अपनी जांचें करानी चाहिए। अधिक उम्र के लोगों को विशेष सावधानी बरतने की आवश्यकता है।आज के इस निःशुल्क स्वास्थ शिविर में 200 से अधिक हर वर्ग के बच्चों, महिलाओं तथा

निःशुल्क शिविर में उपस्थित डॉक्टर

आदमियों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया एवं अपना मुफ्त इलाज करवाया और मुफ्त दवियायों का लाभ उठाया।इस शिविर में डॉ. पी के मौर्या (हड्डी रोग विशेषज्ञ, एस. आर. एन), डॉ. सूर्य भान कुशवाहा (जनरल फिजिशियन, एस. आर. एन एवं अध्यक्ष, हुमैनिटी इंडिया ट्रस्ट), डॉ. अंशु मौर्या (स्त्री रोग विशेषज्ञ, एस. आर. एन एवं स्वास्थ अफसर, हुमैनिटी इंडिया ट्रस्ट), डॉ. शुभम कृष्ण तिवारी (जनरल फिजिशियन, एस. आर. एन), डॉ. संदीप राजभर (जनरल फिजिशियन, एस. आर. एन), रत्नाकर गुप्ता (फार्मेसिस्ट) साथ ही साथ यूफोरियल यूथ सोसाइटी के अध्यक्ष देवेश जायसवाल, उपाध्यक्ष अनीश पांडेय , मो. सुभान, अमन कुमार और हुमैनिटी इंडिया ट्रस्ट के सी. इ. ओ. अमन यादव, उपाध्यक्ष अभिषेक सिंह, आशुतोष कुमार, डेविड, योगेंद्र कुमार, सत्यम, क्षितिज, आकाश, विजय भान मौजुद रहे और इस भव्य शिविर को मिल के सफल बनाया।

मदरसा रहमानिया शिवगढ़ में दहाड़ी क्षेत्र की शेरनी गीता पासी

अखंड भारत संदेश

सोरांव। इस समय सभी पार्टियों के उम्मीदवार अपने-अपने तरीकों से जनता को अपने पक्ष में मतदान करने के लिए सभी प्रकार के हथकंडे अपना रहे हैं। तो वहीं सोरांव विधान सभा में इस समय समाजवादी पार्टी का झंडा बुलंद करने के लिए तथा अपनी नीतियां को घर-घर तक पहुंचाने के लिए समाजवादी पार्टी की प्रत्याशी गीता पासी अपने विधान सभा के सभी गांव में टाइम टेबल के हिसाब से दौरा कर रही हैं। और जनता का आशीर्वाद प्राप्त कर रही हैं। हालांकि सोरांव विधान सभा की जनता भी समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी को जिताने में पूरी ताकत से लगे हुए हैं।रविवार को गीता पासी का दर्जनों गांव में कार्यक्रम रहा। और इस कार्यक्रम में प्रत्याशी ने वर्तमान सरकार को किसान,मजदूर, पिछड़ा आदि की विरोधी सरकार बताई और सरकार की सैकड़ों कमियों को भी जनता के बीच बताई। तो वहीं साथ में रहे समाजवादी पार्टी के जिला पंचायत सदस्य खिन्नी लाल पासी ने भी समाजवादी पार्टी की खूबियों और नीतियों को जन-जन तक पहुंचाने के लिए सुबह से शाम तक क्षेत्र में लगे रहते हैं। तथा वर्तमान सरकार को जड़ से उखाड़ फेंकने की बात करते हैं। तथा आगामी 27 फरवरी को साइकिल पर बटन दबाकर कर गीता पासी को विधायक बनाने की जनता जनार्दन से अपील भी कर रहे हैं। और पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव को मुख्यमंत्री बनाकर प्रदेश में अमन,चैन और शांति व्यवस्था कायम रहने की बात कही। तथा रविवार को मदरसा रहमानिया

मंच पर मौजूद गीता पासी संग पार्टी के पदाधिकारी गण

शिवगढ़ में सोरांव विधान सभा की दमदार और जनता की वफादार तथा विश्वसनीय प्रत्याशी गीता पासी ने लोगों से समाजवादी पार्टी के पक्ष में मतदान करने की अपील की। इस मौके पर समाज सेवी व सपा नेता हाजी इलियास खान,उर्मिला यादव,अरमान एडवोकेट,डॉक्टर के एल पटेल, शिव प्रसाद पासी,राजू वारसी, अखंड प्रताप सिंह,योगेश पटेल,राहुल यादव,राम मिलन यादव,मुन्ना पहलवान, भास्कर सरोज,संतोष बीडीसी, शंभू गुप्ता, विनोद माली, सोनू यादव, इरफान अहमद, ज्वाला सिंह यादव, पंकज यादव आदि समाजवादी पार्टी के पदाधिकारी व कार्यकर्तागण मौजूद रहे।

सपा प्रत्याशी संदीप पटेल ने किया जनसंपर्क

सिरसा। प्रयागराज मेजा विधानसभा में समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी संदीप पटेल ने देहात और शहरी क्षेत्रों में दर्जनों गांवो का जनसंपर्क अभियान चलाया। इसमे ग्रामीणों की समस्याएं सुनी सपा प्रत्याशी संदीप पटेल ने कहा कि राजनीतिक उनका रोजगार नहीं हैं। वे विधानसभा मेजा क्षेत्र के जनता की सेवा करने चाहते हैं। सपा प्रत्याशी संदीप पटेल ने भाजपा सरकार को घेरते हुए कहा कि महंगाई चरम पर हैं, गैस सिलेंडर का दाम बढ़ गया है, खाद्द वस्तुओ के दाम आसमान छू रहा हैं। नौवजवान पढ़ लिख कर बेरोजगार घूम रहे हैं। सपा प्रत्याशी संदीप पटेल ने विधानसभा मेजा के गांवो बधौरा, कठौली, टीकुरी, समाहन, बलुहा, अमिलिया खुर्द आदि गांवों में सपा कार्यकर्ताओ के साथ जनसंपर्क करते हुए सपा के किये हुए कार्यो को जनता को समझते हुए सपा के नीतियों और विकास के मुद्दों पर लोगो से बात किये। कहा कि आप सब लोग साइकिल का बटन दबाकर समाजवादी पार्टी को विजयी बनाइये और अखिलेश सिंह यादव को मुख्यमंत्री बनाइये। प्रदेश की जनता सब जान चुकी हैं भाजपा सरकार पांच साल में गरीबों का घर उजाड़ने का काम किया है और भाजपा सरकार में अपराध, मंहगाई, बेरोजगारी का बोलबाला हैं। जनसंपर्क अभियान में मुख्य रूप से नगर पंचायत सिरसा चेरमैन श्याम कृष्ण सिंह (पप्पू यादव) अध्यक्ष समाजवादी पार्टी मेजा, नीरज सिंह यादव, अनिल कुमार यादव, गुड्डू यादव, ज्ञान यादव, विमल यादव, प्रदीप पटेल, फूल चंद्र यादव, विजय राज सिंह यादव, फते बहादुर , कमलेश, हिमांशु आदि कार्यकर्ता जनसंपर्क में रहे।

मंच पर मौजूद गीता पासी संग पार्टी के पदाधिकारी गण

न्यूज झरोखा

स्वर कोकिला लता मंगेशकर के निधन पर सिने जगत से जुड़े लोगों ने शोक व्यक्त किया

प्रतापपुर। भारत रत्न से विभूषित स्वर कोकिला लता मंगेशकर के निधन पर पूरा देश शोक की लहर में डूब हुआ है।प्रतापपुर निवासी बॉलीवुड फिल्म निमार्ता व निर्देशक धीरज मिश्रा ने उनके निधन पर शोक व्यक्त करते हुए कहा उनका जाना भारतीय सिनेमा के साथ सम्पूर्ण देश के लिए अपूर्णीय क्षति है उन्होंने संगीत एवं गायन को नई ऊंचाई प्रदान किया वह वह भले ही इस दुनिया मे नही है मगर उनके गाये गीत उन्हें हमारे आस-पास होने का एहसास कराते रहेंगे।वही संतोष सिंह, इमरान हसनी, यूजीन डिसूजा, कबीर खान, दधि पांडेय, राज सोनी, मंजेश पांडेय, सूर्या यादव, अखिलेश जैन, गौरव, अज्जू मिश्रा ने भी एवं कला टीचर प्रतापपुर कुसुम लता भास्कर द्वारा द्वारा पेंटिंग बनाकर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए शोक व्यक्त किया।

वित्तीय साक्षरता कार्यक्रम को लेकर किया जागरूक, प्रबंधक ने दी बैंकिग की जानकारी

करछना। क्षेत्र के बसरिया गांव में डिस्ट्रिक्ट कोआपरेटिव बैंक लिमिटेड करछना शाखा द्वारा वित्तीय साक्षरता जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान मुख्य कार्यपालक अधिकारी सुनील कुमार श्रीवास्तव ने ग्राहकों को बैंक की लाभकारी योजनाओं के बारे में अवगत कराया। उन्होंने उर्वरक खाद बीज जैसी जरूरतों को लेकर किसान भाइयों के लिए न्यूनतम 3% अल्पकालीन ऋण के अलावा बचत को जमा करने के लिए सहकारी निक्षेप सुविधा के बारे में विस्तृत जानकारी दी। कार्यक्रम में किसान बीमा योजना सहित पुराने बकाया ऋण को जमा करने संबंधी बातों के बारे में भी जानकारी दी गई। नाबार्ड की वित्तीय समावेशन निधि के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में नुक्कड़ नाटक के माध्यम से किसानों के लिए बैंक द्वारा चलाई जा रही विभिन्न प्रकार की योजनाओं के बारे में जानकारी दी गई। शिक्षिका नीतू चौबे एवं नुक्कड़ नाटक टीम के नवीन मिश्रा और कलाकारों द्वारा लाभकारी योजनाओं के बारे में ग्राहकों को अवगत कराया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ प्रबंधक संजय कुमार जैसवार ने किया। राम आसरे यादव, पुन्नालाल, प्रदीप यादव, कृष्ण बिहारी गुप्ता रिचा पांडे, भोला सिंह राठौर, रोहित कुमार समीर बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे।

जसरा में चुनाव कार्यालय के उद्घाटन पर जुटे कार्यकर्ता

जसरा। जसरा के गौहनिया में भारतीय जनता पार्टी के चुनाव कार्यालय के उद्घाटन के अवसर पर अपना दल, निषाद पार्टी व भाजपा के सैकड़ों कार्यकर्ता उपस्थित रहे । इस अवसर पर विधानसभा बारा के प्रत्याशी अपना दल के वाचस्पति ने कार्यकताओं का उत्साह बढ़ाया ।रविवार को गौहनिया बाजार में अपना दल भाजपा व निषाद पार्टी के संयुक्त प्रत्याशी वाचस्पति ने फीता काटकर चुनाव कार्यालय का उद्घाटन किया। इस अवसर पर तीनों दल के कार्यकताओं ने भाग लिया। प्रत्याशी वाचस्पति ने कहा कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के हाथों को मजबूत करने के लिए बारा विधानसभा से अपना दल के कप प्लेट के निशान पर बटन दबाकर भारी बहुमत से जीत दर्ज कराएं। उन्होंने जानकारी दी कि सोमवार को प्रयागराज में बीजेपी गठबंधन के चार प्रत्याशियों का नामांकन संयुक्त रुप से किया जाएगा। इस अवसर पर मीडिया प्रभारी दिलीप चतुवेर्दी ,जिला मंत्री कमलेश त्रिपाठी, मण्डल अध्यक्ष जगत नारायण शुक्ल,संतोष त्रिपाठी, राजाबाबू पाठक ,रंग बली पटेल, अपना दल के बृजेश पटेल, फूलचंद, आकाश केसरवानी, सुभाष केसरी, सतीश साहू, सचिन श्रीवास्तव आदि लोग उपस्थित रहे।

समाजसेवी दिनेश लालचंद उमरवैश्य ने बुजुर्गों को करवाया संगम स्नान

जंघई। सेमरी भोगीपुर निवासी वरिष्ठ समाजसेवी दिनेश लालचंद उमरवैश्य ने भोगीपुर एवं आस पास के गांव के बुजुर्गों को बस से ले जाकर करवाए संगम स्नान बता दें कि दिनेश उमरवैष्य पिछले 4 वर्षों से क्षेत्र के बुजुर्गों को संगम स्नान करवा रहे हैं।दिनेश उमरवैश्य ने कई नए कार्यो की शुरूआत अपने जन्मभूमि जंघई एवं भोगीपुर में किया है।जैसे कि बुजुर्गों को संगम स्नान करवाना सरस्वती पूजा मनाना सार्वजनिक ध्वजारोहण एवं जरूरत मंद परिवारों में कंबल वितरण करना आदि।दिनेश का साथ भोगीपुर के युवा भी बढ़ चढ़कर देते रहते हैं।इस अवसर पर रवि तिवारी, संजय तिवारी, डंगर तिवारी, कन्हैया उमरवैश्य, विजय कुमार तिवारी, फूलचंद तिवारी, रोहित ब्राह्मण, विशाल तिवारी, प्रवीण तिवारी एवं समस्त ग्रामवासी उपस्थित रहे।

भारद्वाज एकेडमी जंघई में बसंत पंचमी मनाई गई

जंघई। बंसत पंचमी के पावन अवसर पर भारद्वाज एकेडमी जंघई में पूरे विधि विधान के साथ माँ सरस्वती की पूजा अर्चना सम्पन्न हुई।एकेडमी के संरक्षक रविन्द्र तिवारी पिंटू ने बंसत पंचमी की महिमा का वर्णन करते हुए बच्चों को प्रेरित किया।इस अवसर पर संस्था के संचालक शैलेश पाठक, डॉ विनीत उषा डेंटल केयर, लैलेश पाठक , दीपक तिवारी, पंडित संदीप पांडेय शास्त्री, मतीश मिश्रा, शशि पांडेय व समस्त विद्यार्थी उपस्थित रहें।

खबर संक्षेप

सुरों की मलिका को व्यापारियों ने दी श्रद्धांजलि

प्रयागराज। लता मंगेशकर के निधन पर व्यापारिक संगठनों ने उन्हें श्रद्धांजलि दी। अखिल भारतीय उद्योग व्यापार मंडल, उत्तर प्रदेश युवा उद्योग व्यापार मंडल, व्यापारी एकता समिति, प्रयाग व्यापार मंडल और महिला व्यापार मंडल की पदाधिकारियों ने श्रद्धांजलि अर्पित की। व्यापारी नेता राजीव कृष्ण श्रीवास्तव, अनूप वर्मा, सुशांत केसरवानी, रमेश चंद्र केसरवानी, मुसाब खान आदि ने शोक जताया है। चौक में व्यापारियों ने बैठक की। मीडिया प्रभारी मो. अकरम के मुताबिक, श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया।

हॉस्पिटल के बाहर से बाइक चोरी

हंडिया। हंडिया तहसील के थाना उतराव के महरूपुर गांव निवासी एक व्यक्ति हनुमानगंज स्थित के एक निजी हॉस्पिटल में दवा लेने गया था। दवा लेकर वह व्यक्ति जब आया तो हॉस्पिटल के बाहर खड़ी बाइक उसकी नहीं दिखी। चोरों व्यक्ति के मोटरसाइकिल पर हाथ साफ कर लिया। मामला 30 जनवरी का है। पीड़ित अपनी पत्नी को थाना सराय इनायत के अन्तर्गत आने वाले हनुमानगंज स्थित एक निजी अस्पताल में दवा लेने गया था। बाइक हॉस्पिटल के बाहर खड़ा करके अंदर अपनी पत्नी को लेकर डाक्टर को दिखाने चला गया।

माघ मेला शिविर पहुंचे अंतरराष्ट्रीय क्रिया योग गुरु स्वामी श्री योगी सत्यम

दीप प्रज्वलित कर शिविर का किया शुभारंभ, वसुधैव कुटुंबकम का दिया संदेश

अखंड भारत संदेश

शिविर में दीप प्रज्वलित करते स्वामी श्री योगी सत्यम

क्रिया योग शिविर में मौजूद साधक

प्रयागराज। माघ मेला क्षेत्र पुल नंबर दो त्रिवेणी रोड स्थित पावन गंगा के तट पर सेवारत क्रियायोग शिविर में विश्वव्यापी एकता स्थापित करने हेतु क्रियायोग प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ गुरुदेव स्वामी श्री योगी सत्यम जी के द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया ,इस अवसर पर भारत देश के अनेक प्रांतों से आए विभिन्न लोगों के साथ-साथ कनाडा यूरोप अमेरिका ब्राजील साउथ अफ्रीका सिंगापुर आदि देशों से पधारे साधकों ने भाग लिया ' तथा स्वामी जी ने क्रियायोग शिविर में बैठे हुए समस्त साधकों को क्रियायोग अभ्यास कराया तथा साधकों को यह भी बताया कि जिसे वह हाड़ मांस की शरीर समझते हैं वह सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापी, परमशांति एवं परम आनंद तत्व का साकार स्वरुप है ' इसके पश्चात स्वामी जी ने क्रियायोग रिचार्जिंग के कुछ प्रमुख बिंदुओं पर प्रकाश डालते हुए साधकों को बताया की रिचार्जिंग एक ऐसी साधना है जिसको करने पर मनुष्य प्रतिपल नवीनतम अपने आपको महसूस करने लगता है।

एसएससी की सीजीएल परीक्षा में 57 फीसदी अभ्यर्थी शामिल

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। कर्मचारी चयन आयोग की ओर से रविवार को आयोजित कंबाइंड ग्रेजुएट लेवल (सीजीएल)-2020 की टियर-श्री परीक्षा में 57.33 फीसदी अभ्यर्थियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। पेपर-पेपर मोड में यह परीक्षा प्रयागराज के 72 केंद्रों में आयोजित की गई। इस परीक्षा के तहत केंद्र सरकार के विभिन्न विभागों में 7035 पदों पर भर्ती होनी है।सुबह 11 से दोपहर 12 बजे की पाली में हुई परीक्षा के लिए 29801 अभ्यर्थी पंजीकृत थे ओर इनमें से 17086 परीक्षार्थी उपस्थित रहे। सबसे अधिक 75.69 फीसदी उपस्थिति जीनियस पब्लिक इंटर कॉलेज, झलवा स्थित परीक्षा केंद्र में रही। एसएससी के क्षेत्रीय निदेश राहुल सचान के अनुसार सभी केंद्रों पर परीक्षा शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न हुई और कहीं से किसी प्रकार की घटना की सूचना नहीं है।सीजीएल 2020 के तहत केंद्र सरकार के विभिन्न विभागों में 7035 पदों पर भर्ती होनी है। इनमें 2891 पद अनारक्षित वर्ग के हैं, जबकि एससी वर्ग के लिए 1046, एसटी वर्ग के लिए 510, ओबीसी वर्ग के लिए 1858 और ईडब्ल्यूएस श्रेणी के लिए 730 पद आरक्षित हैं। सेंट्रल बोर्ड ऑफ इनडायरेक्ट टैक्सेस एंड कस्टम्स में इंस्पेक्टर सेंट्रल एक्साइज के सर्वाधिक 1216 और इंस्पेक्टर प्रिवेंटिव अफसर के 878 पद है। वहीं, सेंट्रल बोर्ड ऑफ डायरेक्ट टैक्सेस के तहत टैक्स असिस्टेंट के 1085, एकाउंटेंट/जूनियर एकाउंटेंट के 661 पद हैं।

पूर्व मंत्री राकेशधर त्रिपाठी को अपना दल एस ने प्रतापपुर से बनाया प्रत्याशी

अखंड भारत संदेश

प्रतापपुर। अपना दल एस ने प्रतापपुर विधानसभा सीट से पूर्व विधायक राकेश धर त्रिपाठी को टिकट दिया है। अपना दल से राकेश धर को प्रत्याशी बनाए जाने के साथ भाजपा गठबंधन ने अब तक जिले की 12 विधानसभा सीट में से 11 में प्रत्याशियों के नाम की घोषणा कर दी है। प्रतापपुर सीट से राकेश धर पहली बार चुनाव लड़ेंगे। इसके पूर्व विधानसभा चुनाव हंडिया विधानसभा से लड़ा था।राकेश धर का राजनीतिक कॅरियर काफी पुराना है। सैदाबाद विकास खंड के चौराबडेरा गांव के निवासी राकेश1धर पहली बार जनता पार्टी के टिकट पर 1985 में विधायक बने। 1989 में वह जनता दल से दूसरी बार विधायक चुने गए। इसके बाद 1991 के चुनाव में उन्हें हार का सामना करना पड़ा। 1993 का चुनाव वह निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में लड़े, जबकि 1996 में वह भाजपा के टिकट पर हंडिया सीट से विधायक निर्वाचित हुए।हालांकि वर्ष 2002 के चुनाव में वह भाजपा के टिकट पर चुनाव हार गए। इसके बाद 2007 का चुनाव वह बसपा से लड़े और जीते भी, लेकिन 2012 में उन्हें एक बार फिर से हार का सामना करना पड़ा। 2014 में भदोही संसदीय क्षेत्र से उन्होंने लोकसभा का चुनाव लड़ा लेकिन उसमें वह पराजित हो गए थे। अब एक बार फिर से वह भाजपा गठबंधन की सीट प्रतापपुर से चुनाव लड़ने जा रहे हैं। बता दें कि हंडिया विधानसभा सीट में पूर्व मंत्री राकेशधर त्रिपाठी तथा उनके परिवार का दबदबा रहा है। वर्ष 1985 से लेकर अब तक उन्हें चार बार जीत मिली, जबकि पांच में वे उपविजेता रहे। वहीं 1991 के चुनाव में तीसरे स्थान से संतोष करना पड़ा। सपा व बसपा के वर्चस्व वाली इस सीट पर भाजपा व कांग्रेस मात्र एक बार ही सेंध लगा सकीं। दोनों ही प्रमुख दलों को दोबारा इस सीट पर जीत का इंतजार है। राकेशधर ने सपा को छोडकर हर प्रमुख पार्टी से चुनाव लड़ा। 1989 के चुनाव में वजह जनता दल के टिकट पर विधायक चुने गए तो 1993 में वह निर्दलीय उम्मीदवार रहे। हालांकि दूसरे स्थान पर रहे। 1985 से 2012 के बीच राकेशधर आठ बार चुनाव लड़े और चार बार विधायक चुने गए। 2002 के चुनाव से 2012 के बीच का चुनाव राकेशधर बनाम महेश नारायण सिंह रहा।

सपा छोड़ सभी दलों से चुनाव लड़ चुके हैं पूर्व मंत्री

अनुप्रिया पटेल के साथ राकेश त्रिपाठी

राकेशधर को मिली थी महेश नारायण से शिकस्त

2002 के चुनाव में सपा के महेश नारायण सिंह ने राकेशधर को मात दी थी तो 2007 में राकेशधर ने महेश नारायण को हराया। इसके बाद 2012 के चुनाव में फिर महेश नारायण सिंह विजयी हुए। वहीं राकेशधर दूसरे स्थान पर रहे लेकिन कुछ समय बाद ही महेश नारायण का निधन हो गया।इसके बाद 2013 में हुए उपचुनाव में महेश नारायण के बेटे प्रशांत सपा से चुनाव लड़े और विजयी हुए। वहीं राकेशधर त्रिपाठी के भतीजे पंकज बीएसपी से चुनाव लड़े और दूसरे स्थान पर रहे। 2017 के चुनाव में राकेशधर की पत्नी प्रमिला त्रिपाठी ने अपना दल से चुनाव लड़ा, लेकिन बसपा के हाकिम लाल बिंद से हार गईं।

पहली बार हंडिया से नहीं मिला टिकट

राकेशधर के अलावा परिवार के दो सदस्यों ने इस सीट से दावेदारी की लेकिन जीत नहीं मिली। इस चुनाव में भी राकेशधर त्रिपाठी तथा महेश नारायण सिंह के बेटे प्रशांत सिंह टिकट के दावेदारों में शामिल हैं। पहली बार राकेशधर को उनके गृह विधानसभा हंडिया से हटाकर पड़ोस की प्रतापपुर सीट से उम्मीदवार बनाया गया है।हंडिया सीट भाजपा ने अपने ही दूसरे सहयोगी दल निषाद पार्टी को दे दी है। निषाद पार्टी ने दो दिन पहले ही हंडिया से पूर्व विधायक महेश नारायण सिंह के पुत्र पूर्व विधायक प्रशांत सिंह राहुल को उम्मीदवार बनाया था, जिन्होंने शनिवार को नामांकन पत्र भी दाखिल कर दिया।

सौरभ सिंह का टिकट कटा अब संजय पाण्डेय विश्वनाथगंज से होंगे सपा प्रत्याशी

अपना दल एस ने जीतलाल पटेल को दिया टिकट

प्रतापगढ़। विश्वनाथ गंज विधानसभा सीट से समाजवादी पार्टी ने सौरभ सिंह का टिकट काटकर पूर्वमंत्री राजाराम के पुत्र संजय पाण्डेय को टिकट दे दिया है। रविवार को देर शाम सपा मुखिया अखिलेश यादव ने संजय पाण्डेय को बुलाकर उनके आग्रह को स्वीकार कर लिया अब सौरभ सिंह को सदर विधानसभा से सपा उम्मीदवार बनाये जाने की संभावना है। उधर भाजपा अपना दल एस के गठबंधन ने जीतलाल पटेल को अपना प्रत्याशी घोषित किया है। इस तरह विश्वनाथ गंज सीट पर सीटों के बंटवारे का गठजोड़ समाप्त हो गया है। अब भाजपा अपना दल गठबंधन समाजवादी पार्टी कांग्रेस बसपा ने प्रत्याशी घोषित कर दिये हैं।

माफिया दिलीप मिश्रा सहित बंसल हत्याकांड के पांच आरोपियों पर गैंगस्टर

प्रयागराज। जीवन ज्योति अस्पताल के निदेशक डॉ. अश्वनी कुमार बंसल हत्याकांड के पांच आरोपियों पर गैंगस्टर की कार्रवाई की गई है। इनमें लखनऊ से गिरफ्तार शूटर शोएब के अलावा कैबिनेट मंत्री नंद गोपाल गुप्त नंदी पर हमले का आरोपी दिलीप मिश्रा भी शामिल है। इसके अलावा हत्याकांड के मुख्य साजिशकर्ता आलोक सिन्हा समेत तीन अन्य पर भी गैंगस्टर लगाया गया है।पिछले साल अप्रैल में लखनऊ में शूटर शोएब को गिरफ्तार कर एसटीएफ ने इस हत्याकांड का खुलासा किया था। जिसके कुछ महीनों बाद हत्याकांड का मुख्य सूत्रधार आलोक सिन्हा व साजिशकर्ता अबरार मुल्ला भी गिरफ्तार कर जेल भेजे गए थे। इसके अलावा दो साजिशकर्ता दिलीप मिश्रा और अख्तर कटरा जेल में पहले से ही बंद हैं।पिछले साल अक्तूबर में उनके खिलाफ चार्जशीट लगाई गई थी। कीडगंज पुलिस ने अब उपरोक्त पांचों के खिलाफ गैंगस्टर एक्ट की कार्रवाई की है। एसओ मनोज कुमार यादव की तहरीर पर यह केस दर्ज किया गया है। तहरीर में उन्होंने बताया है कि आरोपियों का एक संगठित गिरोह है, जिसके जरिए वह आपराधिक वारदातें अंजाम देते हैं।

कीडगंज में युवक ने लोहे की जंजीर से लगाई फांसी

प्रयागराज। आर्थिक तंगी से परेशान होकर शनिवार रात एक युवक ने फांसी लगाकर जान दे दी। कृष्णा नगर, कीडगंज निवासी गोपाल कृष्ण के दो बेटे हैं। बड़ा बेटा दिव्यांशु पिछले कुछ दिनों से तनाव में था। शनिवार रात टीन शेड में लोहे की जंजीर से फांसी लगाकर जान दे दी। रात में अचानक उसके परिजनों ने फांसी पर लटका देखा तो उनके होश उड़ गए। सूचना पर पहुंची पुलिस ने छानबीन करके शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा। पुलिस को उसके परिजनों ने बताया कि पढ़ाई छोड़ने के बाद हिमांशु परेशान था। उसे काम धंधा भी नहीं मिल पा रहा था। रुपये के लिए परिवार में विवाद भी हुआ था। आर्थिक तंगी से परेशान होकर उसने जान दे दी। **मास्टरमाइंड की खोज में पुलिस :** कीडगंज पुलिस ने बताया कि गैंगस्टर का केस दर्ज होने के बाद बंसल हत्याकांड के मास्टरमाइंड आलोक सिन्हा की तलाश फिर से शुरू कर दी गई है। वह पिछले दिनों जमानत पर रिहा हो चुका है। जबकि दिलीप मिश्रा फतेहगढ़, अख्तर कटरा सोनभद्र, शूटर शोएब लखनऊ और अबरार मुल्ला नैनी जेल में बंद हैं। पटना निवासी आलोक सिन्हा ने ही 55 लाख रुपये के विवाद में सुपारी देकर प्रतापगढ़ निवासी शूटरों शोएब, मकसूद व यासिर से इस हत्याकांड को अंजाम दिलवाया था। जिसमें से यासिर की उसके ही दोनों दोस्तों ने हत्या कर दी थी। मकसूद अब भी पकड़ा नहीं जा सका है।

कैथी गांव में किसान की जमीन पर माफियाओं एवं दबंगों का कब्जा डीएम से शिकायत

अखंड भारत संदेश

जमीन पर जबरन कब्जा से गांव में तनाव की स्थिति

करछना। तहसील के अंतर्गत ग्रामसभा कैथी में एक किसान की भूमि पर गांव के ही दबंग किस्म के माफियाओं ने कब्जा कर लिया है जिसकी शिकायत पीड़ित ने जिलाधिकारी से लेकर मुख्यमंत्री तक व स्थानीय प्रशासन को अनगिनत बार शिकायत करने के बावजूद भी दबंगों के खिलाफ प्रशासन कोई ठोस कार्रवाई नहीं की गई वहीं पीड़ित को जान से मारने की भी धमकियां मिल रही है प्राप्त जानकारी के अनुसार विजय कुमार पुत्र विद्या कांत निवासी गांव हथसरा की जमीन तहसील क्षेत्र करछना के ही कैथी में भूमि धरी जमीन है, प्रार्थी की जमीन पर आराजी संख्या 587 व 493 चक मार्ग व नाली है प्रार्थी मूल रूप से हथसरा में रहता है यहां पर पाही काश्तकार है जिस कारण गांव कहीं के निवास करने वाले माफिया दबंग शस्त्र धारी सृष्टि नारायण व महेंद्र प्रसाद कमलेश कुमार पुत्र गण श्री शियंमबरनाथ वह नंबर पुत्र विश्वनाथ उक्त चक मार्ग पर नाली सहित प्रार्थी की भूमि धरी जमीन को बाउंड्री वाल बना कर अवैध रूप से कब्जा कर लिया है जिसके बाबत प्रार्थी ने तहसीलदार करछना, एसडीएम करछना, डीएम इलाहाबाद, एसो थाना करछना सहित मुख्यमंत्री तक फरियाद कर चुका है इसके बावजूद भी उक्त जमीन पर प्रशासन अतिक्रमण वह माफियाओं से कब्जा मुक्त कराने में विफल रहा है वही माफिया लोग जान से मारने की भी धमकियां दे रहे हैं पीड़ित ने संक्षम अधिकारियों को इस ओर ध्यान ध्यान केंद्रित करने व अपनी भूम भरी जमीन दबंगों से मुक्त कराए जाने की अपील की है, वही लम्बे अरसे से इस वाद को प्रशासन निस्तरण कराने में विफल रहे हैं, जिसको लेकर दोनों पंक्षो में तनाव की स्थिति बनी हुई है।

विद्युत संविदा कर्मियों का मानदेय न मिलने से आक्रोश

लेडियारी। अपनी जान जोखिम में डाल कर बिजली का काम करने वाले तहसील कोराँव के विद्युत उप केन्द्र लेडियारी, हाटा, बडोखर आदि पर कार्यरत संविदा कर्मियों को दो महीने का मानदेय न मिलने से उनके सामने भूखमरी की नौबत आ गई है। उप खण्ड कोराँव के एस डी ओ की मनमानी तथा धन उगाही के बदौलत अपनी जान जोखिम में डालकर कार्य करने वाले तथा बिजली के खम्भे पर काम करते हुए संविदा कर्मियों, लाईन मैनों को अपनी जान को गवाँना पड़ जाता है,या अंग, भंग हो कर हाथ-पैर गवाँना पड़ता है।इतना जोखिम भरा काम करने के बाद भी एस डी ओ कोरांव ने उप केन्द्र हाटा, बडोखर, लेडियारी आदि पर काम करने वाले संविदा कर्मियों का दो महीने का वेतन नहीं लगाया।इस समय संविदा कर्मी बेचारे भूखमरी से जूझ रहे हैं।लेकिन उनकी सुनने वाला कोई नहीं है।

दरोगा भर्ती की आयु सीमा बढ़ाने के लिए अड़े अभ्यर्थी

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। भर्तियों में भ्रष्टाचार एवं बेरोजगारी के मुद्दे पर भर्ती संस्थाओं के खिलाफ मोर्चा खोल चुके प्रतियोगी छात्र पुलिस भर्ती के लिए निर्धारित अधिकतम आयु सीमा बढ़ाए जाने की मांग पर अड़े हैं। प्रतियोगियों को इस बात से समस्या है कि भर्ती हर साल नियमित रूप से न कराए जाने के कारण अभ्यर्थी ओवरएज हो रहे हैं और जब चार-पांच साल बाद भर्ती का विज्ञापन जारी किया जाता है तो अधिकतम आयु सीमा पूरी कर चुके अभ्यर्थी भर्ती में शामिल होने से वंचित रह जाते हैं।प्रतियोगी छात्र संघर्ष समिति की ओर से पुलिस प्रोन्नति एवं भर्ती बोर्ड और शासन को पत्र भेजकर यह मुद्दा उठाया गया है। समिति की ओर से मांग की गई है कि पुलिस आरक्षी/उपनिरीक्षक की भर्ती प्रति वर्ष निकाली जाए। अगर किसी वर्ष रिक्तियां न हों तो आगामी भर्ती में आयु अधिकतम आयु सीमा की गणना पूर्व भर्ती के आधार पर की जाए। पुलिस आरक्षी की अधिकतम आयु सीमा 22 वर्ष से बढ़ाकर 25 वर्ष की जाए और उप निरीक्षक भर्ती की अधिकतम आयु सीमा 30 वर्ष की जाए।समिति के अध्यक्ष अवनीश पांडेय का कहना है कि जब सबसे कठिन आईपीएस की ट्रेनिंग को सामान्य वर्ग के अभ्यर्थी 30 वर्ष और आरक्षित वर्ग के अभ्यर्थी 35 वर्ष में पूरी कर सकते हैं तो दरोगा एवं सिपाही भर्ती के युवा क्रमशः 30 सवं 25 वर्ष की आयु में ट्रेनिंग क्यों नहीं कर सकते हैं।समिति के मीडिया प्रभारी प्रशांत पांडेय ने दरोगा भर्ती के अभ्यर्थियों की तरफ से यह मांग भी की है कि परीक्षा में प्रत्येक खंड में उत्तीर्ण होने के लिए 50 फीसदी अंकों की अर्हता समाप्त की जाए और संपूर्ण प्रश्नपत्र के 50 फीसदी अंकों को उत्तीर्ण होने की अर्हता का मानक बनाया जाए। साथ ही जिस तरह उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग और संघ लोक सेवा आयोग हर वर्ष भर्ती कराते हैं, उसी तरह दरोगा एवं आरक्षी भर्ती कराई जाए।

शिक्षक भर्ती के अचयनितों ने सरकार के खिलाफ खोला मोर्चा

प्रयागराज। बीएड एवं टीईटी 2011 के क्वालीफाई और 72800 शिक्षक भर्ती के अचयनित अभ्यर्थियों ने प्रदेश सरकार के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है। वर्षों तक शिक्षक भर्ती प्रक्रिया में शामिल होने से वंचित रह गए। इन अभ्यर्थियों ने रविवार को चंद्रशेखर आजाद पार्क में बैठक की। अभ्यर्थियों ने कहा कि वर्तमान सरकार में उनकी कोई सुनवाई नहीं हो रही और न ही किसी तरह की राहत मिली। अभ्यर्थियों के प्रतिनिधिमंडल ने समाजवादी पार्टी के जिला कार्यालय में ज्ञापन देकर सपा को समर्थन की घोषणा की। जिलाध्यक्ष ने उन्हें आश्वस्त किया कि सपा की सरकार बनी तो अभ्यर्थियों को न्याय मिलेगा। ज्ञापन देने वालों में चंद्रमोहन त्रिपाठी, हरिमोहन त्रिपाठी, संजीव तिवारी, अटल बिहारी यादव, प्रमोद यादव, अनीश श्रीवास्तव, कुंज बिहारी उपाध्याय, दिलीप सरोज आदि शामिल रहे।

महिला प्रधान सिपोवा की रपट न लिखने का आरोप

कोरांव। ग्राम पंचायत प्रधान सिपउआ ब्लॉक कोरांव मालती देवी कोल के घर में घुस कर सरहगों ने हमला किया और जेवर आदि उठा ले जाने का आरोप है,जिसकी रपट थाना कोरांव में दी गई किंतु पुलिस ने रपट अपने हिसाब से दर्ज किए जाने की बात कही,अलबत्ता पुलिस ने आरोपियों की रिपोर्ट लिख कर डाक्टरी जांच के लिए भेजा ,ऐसा आरोप महिला प्रधान ने लगाया है। बता दें कि गांव के ही श्यामजी पुत्र रूप चंद्र आदि ने मिल कर मालती देवी कोल ग्राम प्रधान सिपोवा के घर चढ़ कर भद्दी गालियां देते हुए मारा पीटा और घर के अंदर से जेवरात भी उठा ले गए। तहरीर थाना कोरांव में दी किंतु आरोपियों की तहरीर पर डाक्टरी जांच आदि कार्यवाही की किंतु प्रधान की तहरीर महीन दर्ज की गई। प्रधान ने बताया कि पुलिस अपने हिसाब से तहरीर दर्ज करना चाहती है। प्रधान ने सीधे मुख्यमंत्री जनसुनवाई पोर्टल पर दर्ज कराई है। ग्राम प्रधान संगठन कोरांव ने पुलिस अफसरों से रपट प्रधान की दर्ज कर झलेरो के खिलाफ कानूनी कार्यवाही की मांग की है।

ममोली में ग्रामीणों ने शत प्रतिशत मतदान करने का लिया संकल्प

मतदान करने का संकल्प लेते ग्रामीण

अखंड भारत संदेश

मेजा रोड। विकास खण्ड मेजा के ग्राम पंचायत ममोली में जनसुनवाई फाउंडेशन एवं ग्राम पंचायत के तत्वावधान में जनपंचायत का आयोजन किया गया,जिसमें ग्रामीणों के बीच मतदाता जागरूकता से संबंधित दस विन्दुओं की समीक्षा हुई। जिसमें 18वर्ष से अधिक उम्र के युवाओं का शतप्रतिशत मतदाता पंजीयन होने की बात प्रमाणित हुई,साथ ही समस्त योग्य महिला मतदाता के पास मतदाता पहचान पत्र उपलब्ध बताया गया। हालाकि 2प्रतिशत ग्रामीणों ने बताया कि मतदाता सूची में नाम तो है किन्तु मतदाता पहचान पत्र नहीं प्राप्त हुआ है। फिर भी आधार कार्ड जैसे अन्य आईडी से मतदान किया जाता है। जनसुनवाई फाउंडेशन के संजय मिश्र द्वारा मतदाताओं को विधिक अधिकार की बात बिन्दुवार बताई गयी एवं नोटा व राइट टू रिकाल के बिंदु पर भी ग्रामीणों की मंशा जानने का प्रयास किया गया।जागरूक मतदाताओं ने शतप्रतिशत कोविड वैक्सीनेशन होने की भी बात बताई।ग्राम पंचायत प्रधान जानकी देवी के साथ ग्रामीणों ने गांव में जागरूकता रैली निकाली एवं शत- प्रतिशत मतदान करने का संकल्प भी लिया।जनसुनवाई फाउंडेशन के जनपद प्रभारी अधिवक्ता विवेक सिंह 'रानू' ने बताया कि जिन गांवों में विगत विधान सभा चुनाव का मतदान प्रतिशत कम रहा है, वहां के गांवों में संस्था द्वारा मतदाता जागरूकता कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है।साथ ही मतदान स्थल की व्यवस्था का आंकलन करते हुए प्रशासन तक रिपोर्ट भेजी जा रही है।इस मौके पर कल्लन, राजेन्द्र प्रसाद,शिवचरण, कन्हैया लाल, छक्कनलाल, बसन्तलाल, रामसेवक, मोहित कुमार, शोभनाथ , रामलक्षन,सुमन देवी, रंजनादेवी,सुशीला देवी सहित भारी संख्या में ग्रामीण एवं जनसुनवाई फाउंडेशन के ग्राम जनमित्र एवं जनशक्ति उपस्थित रहे।

रोड नहीं तो वोट नहीं, ग्रामीणों ने भरी हुंकार

सहसों। उत्तर प्रदेश के इस बड़ी विधानसभा के चुनाव को देखते हुए फूलपुर विधानसभा के अलमापुर गांव के ग्रामीण मतदाता ने किसी भी पार्टी को इस चुनाव में वोट ना देने का फैसला लिया है। उनका कहना है कि रोड नहीं तो वोट नहीं, वोट सभी ने लिया रोड किसी ने नहीं दिया। अलमापुर गांव की सम्मानित मतदाता जनता की तरफ से स्वतंत्र अभिव्यक्ति मंच के माध्यम से अधिवक्ता अनुज पांडे एवं अधिवक्ता सौरभ श्रीवास्तव ने समस्त जनप्रतिनिधियों से अपील किया है कि आजादी के बाद से हर आम चुनाव में चुने गए क्षेत्रीय सांसद, विधायक ने चुनाव जीतने के बाद कभी भी इस गांव की सड़क व रास्ते के बारे में कभी नहीं सोचा ना ही कभी इस गांव की ओर मुड़कर देखा। इस लिहाज से हम उन जनप्रतिनिधियों से अपील करते हैं कि रोड नहीं तो वोट नहीं और सभी ने वोट तो लिया पर रोड किसी ने नहीं दिया के साथ हमारे बीच उनका वोट मांगने का अधिकार नहीं बनता है और ना ही वह लोग वोट मांगने के लिए इस गांव की मतदाताओं की तरफ मुड़ कर दें क्योंकि इस गांव का सम्मानित मतदाता समस्त जनप्रतिनिधियों से बेहद आक्रोशित हैं।

योगी के आवारा जानवर किसानों की आय दुगनी कर रहे हैं : विनय कुशवाहा

अखंड भारतसंदेस

करछना। किसानों की नींद योगी सरकार ने छीन लिया दिन भर खेत में मेहनत कर फसल उगाता हैं प्राकृतिक आपदा से फसल बचती है तो आवारा पशु झुंड के झुंड फसल को खा जाते हैं किसान खेत की तकवाली रात रात भर ठंड में जाग कर करते हैं उक्त बातें सपा पूर्व प्रदेश प्रवक्ता जिलाउपाध्यक्ष विनय कुशवाहा ने सपा मुखिया अखिलेश यादव के आवहान रगांव-गांव, पग-पग,सपा का झंडा, साईकिल का प्रचारअभियान के तहत सपा प्रत्याशी उज्जवल रमण सिंह के चुनाव प्रचार के दौरान डीहा ग्राम करछना में आवारा पशुओं के झुंड द्वारा फसलों को चरते देख कर कहीं।उन्होंने कहा कि योगी-मोदी सरकार इसी तरह किसानों की आय दुगनी करेंगे आज किसानों की रात की नींद आवारा जानवर और दिन किसान परेशान हैं। प्रवक्ता ने कहा कि प्रचार के दौरान ग्रामीण महिलाओं में योगी-मोदी सरकार के प्रति बहुत ही नाराजगी है ओ अशब्दों का भी प्रयोग कर रही हैं क्योंकि उनकी रसोई का बजट मोदी सरकार ने बिगाड़ दिया और कमाई के साधन घट गए इसलिए ग्रामीण महिलाओं में भाजपा सरकार के प्रति बहुत रोष है।जनसम्पर्क के दौरान बीएसपी छोड़ कर सपा मे आये रंजीत सोनकर, जिला पंचायत सदस्य डॉक्टर विजय बाबू,बीपी सिंह, लल्लन यादव,राजेश यादव,अमित राही पासी ,पुष्कर जी,इंदू यादव के साथ महिलाएं आदि लोग रहे।

किसानों की फसल चट करते आवारा गौवंश

रानीगंज क्षेत्रः टिकट के इंतजार में भाजपाईयों की पथरा गई आंखें

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। भाजपा का रानीगंज में प्रत्याशी कौन होगा? रविवार की शाम तक इसकी भनक नहीं मिल पाई। क्षेत्र के भाजपा समर्थकों की टिकट के आस में आखें पथरा गई है और वह घरों में बैठे हुए हैं। जबकि सपा, बसपा और कांग्रेस के लोग क्षेत्र में प्रचार में जुट गये हैं।

वैसे राजनीतिज्ञों की मानें तो सोमवार तक स्थिति साफ हो गई क्योंकि मंगलवार तक ही नामांकन होगा। बता दें कि रानीगंज के विधायक अभय कुमार उर्फ धीरज ओझा और समाजवादी पार्टी से भाजपा में आए प्रो0 शिवाकांत ओझा के बीच टिकट का अंतिम फैसला होना बाकी है। भाजपा के वरिष्ठ नेताओं का कहना है कि पहले चरण के चुनाव में व्यस्तता के कारण टिकट के अंतिम बंटवारे में कुछ विलम्ब हुआ है। सोमवार तक स्थिति साफ हो जाने की पूरी आशा है। उधर अपना दल एस से समाजवादी पार्टी में शामिल होने वाले विश्वनाथगंज विधायक आरके वर्मा को विश्वनाथगंज से टिकट नहीं मिला लेकिन समाजवादी पार्टी ने उन्हें रानीगंज से घोषित प्रत्याशी विनोद दुबे का टिकट काटकर अब विधायक आरके वर्मा को प्रत्याशी बनाया है। इससे विनोद दुबे व उनके कार्यकर्ता दुखी हैं। अब देखना है कि विनोद दुबे कौन सा राजनैतिक पैंतरा खेलते हैं। रविवार को रानीगंज में घोषित प्रत्याशी आरके वर्मा ने दर्जनों गाड़ियों के काफिले के साथ अपने नये निर्वाचन क्षेत्र रानीगंज में दस्तक दी। सपा प्रत्याशी आरके वर्मा ने दुर्गागंज, मेढौली, चकसारा, पावर हाउस व विश्वंभरपुर में जनसम्पर्क किया। रानीगंज में घोषित प्रत्याशी का सपा कार्यकर्ताओं ने जोरदार स्वागत किया। बता दें कि डा0 आरके वर्मा दो बार विश्वनाथगंज से अपना दल से विधायक बने थे। इस बार सपा में जाने पर वह विश्वनाथगंज से टिकट मांग रहे थे लेकिन समाजवादी पार्टी ने उन्हें रानीगंज का टिकट दे दिया और

सपा प्रत्याशी बने आरके वर्मा, विनोद दुबे का टिकट कटा

प्रो0 शिवाकांत ओझा।

धीरज ओझा।

आशुतोष त्रिपाठी आज करेंगे नामांकन

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिले में पहली बार बसपा ने आशुतोष त्रिपाठी को 248 सदर विधानसभा का प्रत्याशी बनाया है। आशुतोष त्रिपाठी सात फरवरी को लगभग 11 बजे से एक बजे के बीच में कोरोना गाइडलाइन और चुनाव आचार संहिता का पालन करते हुए अपना नामांकन करेंगे।

सपा, बसपा, कांग्रेस ने रानीगंज में शुरू किया प्रचार

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। रानीगंज में सपा प्रत्याशी डा0 आरके वर्मा का नाम घोषित होने के बाद समाजवादी पार्टी, बहुजन समाज पार्टी तथा कांग्रेस प्रत्याशी का प्रचार शुरू हो गया है लेकिन भाजपाई टिकट घोषित न होने से असमंजस में हैं। भाजपा से गठबंधन करने वाली अपना दल एस ने भी सदर व विश्वनाथगंज में अपने प्रत्याशी घोषित नहीं किये हैं। सदर, विश्वनाथगंज व रानीगंज में भाजपा व अपना दल एस के टिकट का इंतजार किया जा रहा है। सोमवार व मंगलवार नामांकन के लिये दो दिन बचे हैं इसलिये सोमवार तक टिकट घोषित हो जाने की आशा है।

डा0 आरके वर्मा।

भाजपा नेता श्याम जी जायसवाल भी टिकट के दावेदार

प्रतापगढ़। व्यापार प्रकोष्ठ के सहसंयोजक श्यामजी भाजपा से टिकट के लिए सदर विधानसभा से मजबूत दावेदारी की है। श्यामजी जायसवाल समाज के अध्यक्ष भी हैं। उन्होंने कहा कि अगर पार्टी ने भरोसा जताया तो मजबूती से चुनाव लड़ूंगा। बता दें कि चिलबिला के प्रतिष्ठित व्यापारियों में श्यामजी गिने जाते हैं।

विश्वनाथगंज में सौरभ सिंह निवासी बहुंचरा को प्रत्याशी बना दिया। सौरभ सिंह का सैफई में सम्बन्ध होने की चर्चा है। समाजवादी पार्टी के इस निर्णय से पूर्व मंत्री स्व0 राजाराम पाण्डेय के पुत्र संजय पाण्डेय का मामला अभी घोषित नहीं हुआ है। कहा जाता है कि सदर से उन्हें प्रत्याशी बनाने की पेशकश की गई थी लेकिन वह विश्वनाथगंज सीट के लिये अड़े हुए हैं। उनका कहना है कि सौरभ सिंह सदर से और हमें विश्वनाथगंज का प्रत्याशी घोषित किया जाए।

सपा प्रत्याशी पर हमले की साजिश से एसपी ने किया इंकार

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। कुंडा से सपा प्रत्याशी गुलशन यादव के आरोपों के मामले में एसपी सतपाल अंतिल ने गम्भीरता से एक्शन लिया। सीओ सिटी अभय पांडेय की अगुवाई में इंस्पेक्टर कोतवाली नगर एवं स्वाट टीम ने शुरू किया जांच आरोपी का सीसीटीवी फुटेज, मोबाइल डिटेल और पूरे दिन के मूवमेंट की डिटेल सामने आने पर एसपी ने खुलासा किया। जांच में पता चला कि चाय देर से देने में दुकानदार से कहासुनी हुई थी जिसमें पुलिस ने जांच के दौरान अवैध पिस्टल बरामद किया था। पुलिस ने अवैध पिस्टल के साथ आशु सिंह उर्फ जार्डन को गिरफ्तार किया है। एसपी का कहना है कि सपा प्रत्याशी गुलशन यादव से संबंधित कोई कनेक्टिविटी नहीं मिली। समस्त जांचों के आधार पर पुलिस ने सपा प्रत्याशी के ऊपर हमले की बात को सिरे से खारिज किया है।

इलाज के दौरान लोकगायक का हुआ निधन

छह माह पूर्व आत्म हत्या का किया था प्रयास

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। शनिवार की रात इलाज के दौरान लोकगायक कलाकार का निधन हो गया।युवक ने छः माह पूर्व आत्म हत्या का प्रयास किया था।घटना को लेकर परिजनों में कोहराम मच गया। स्थानीय कोतवाली क्षेत्र के अगई गांव के भोजपुरी गानों व शूटिंग कर यूट्यूब पर कम समय में लोकप्रियता हासिल करने वाले नितिन राज रोमियो (35) की इलाज के दौरान लखनऊ में मौत हो गई। पारिवारिक विवाद के चलते छह माह पूर्व अपने घर में फासी का फंदा लगाकर आत्महत्या करने का प्रयास किया था। उस समय परिजनों के देख लेने पर उसे जल्द फंदे से नीचे उतारा। उसका इलाज चल रहा था। परिजनों के मुताबिक हादसे के बाद से वह बोल नहीं सका। उसके गले की कोई नस फट गई थी। शनिवार को देर रात उसकी मौत हो गई। यूट्यूब पर नितिन राज रोमियो पर कई हजार फॉलोवर्स भी हैं। उन्हें भोजपुरी फिल्मों में भी काम करने का मौका भी मिला। उनके आवास पर प्रधान राम किंकर सरोज, सागर गौतम, संजय पटेल आदि शोक व्यक्त किया।

कलयुगी बेटे ने मां बाप को मारपीट कर घर से भगाया

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। कोतवाली क्षेत्र के नोही गांव के बूढ़े माता-पिता को कलयुगी बेटे ने मारपीट कर घर से भगा दिया। क्षेत्राधिकारी पट्टी से पीड़ित ने लगाई न्याय की गुहार लगाई है। पट्टी कोतवाली क्षेत्र के नोही गांव निवासी रामदत्त ने क्षेत्राधिकारी पट्टी को प्रार्थना पत्र देकर आरोपित किया है कि मेरे दो बेटे राजेंद्र व भागेलु मुझे व मेरी बूढ़ी पत्नी को मारपीट कर आए दिन हैरान परेशान कर रहे हैं और घर से भगा रहे है। इस संदर्भ में कोतवाल को प्रार्थना पत्र दिया गया पर कोई कार्यवाही नहीं हुई क्षेत्राधिकारी ने आश्वासन दिया इसके बाद दोनों पति पत्नी कोतवाली पट्टी आए वहां कार्यवाही ना होने पर नाराज होकर दोनों पति पत्नी कोतवाली गेट के सामने लेट गये। पुलिस मामले की जांच में जुटी हुई है।

आमने-सामने ट्रक की भिड़ंत राहगीर सहित एक चालक घायल

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। रविवार की सुबह घने कोहरे की वजह से आमने सामने ट्रक की टक्कर में चालक सहित राहगीर घायल हो गया। कंधई थाना क्षेत्र के नरसिंहपुर गांव के पास बिहार प्रांत के छपरा जिले से खाली ट्रक लेकर प्रतापगढ़ लोड करने जा रहे ट्रक और बालू लादकर पट्टी की तरफ जा रहा दूसरा ट्रक चालक जावेद खान निवासी श्रीनाथपुर थाना कंधई की दोनों आमने सामने टक्कर हो गई। कंधई थाना क्षेत्र के मनैता पुर गांव निवासी राजबहादुर सरोज 40 वर्ष को बचाने के चक्कर में दोनों ट्रक आमने सामने टकरा गई जिसमें साइकिल सवार राहगीर राजबहादुर गड्ढे में जा गिरा। बिहार प्रांत के इंदल यादव को हल्की चोटें आई दोनों घायलों को स्थानीय चिकित्सकों के यहां इलाज के लिए ले जाया गया। घटना की जानकारी चैकी दीवानगंज पुलिस को मिली मौके पर चैकी पहुंची पुलिस ट्रकों को हटाने में काफी मशक्कत करनी पड़ी लगभग एक घंटे तक पट्टी प्रतापगढ़ पर यातायात बाधित रहा। ट्रक की टक्कर से आसपास लोगों की भीड़ जमा हो गई डेढ़ सप्ताह पूर्व उसी स्थान पर नरसिंहपुर गांव के एक बुजुर्ग की मौत भी हो चुकी है। ग्रामीणों का कहना है कि सड़क की खुदाई के कारण आए दिन दुर्घटना हो रही है शासन और प्रशासन की लापरवाही का खामियाजा सड़क के किनारे रहने वाले ग्रामीणों को झेलनी पड़ रही है। इस संबंध में थाना प्रभारी सत्येंद्र सिंह से बात की गई उन्होंने बताया कि ट्रक की टक्कर की सूचना मिली है ट्रक हटाने के लिए जेसीबी बुलाई गई है जल्द यातयात बहाल होगा।

डिस्ट्रिक्ट कन्टैक्ट सेन्टर व सी-विजिल सेल 24 घंटे अनवरत संचालित

प्रतापगढ़। मुख्य राजस्व अधिकारी/प्रभारी अधिकारी शिकायत इन्द्र भूषण वर्मा द्वारा अवगत कराया गया है कि विधानसभा सामान्य निर्वाचन-2022 को सकुशल, निष्पक्ष, शांतिपूर्ण एवं पारदर्शी ढंग से सम्पन्न कराने के उद्देश्य से जिला सेवायोजन कार्यालय परिसर में डिस्ट्रिक्ट कन्टैक्ट सेन्टर बनाया गया है जो 24 घंटे अनवरत संचालित है। विधानसभा निर्वाचन से सम्बन्धित किसी भी जानकारी/शिकायत टोल फ्री नम्बर 1950 पर दर्ज करायी जा सकती है। इसी तरह आयोग द्वारा विकसित शिकायत एप सी-विजिल का संचालन भी जिला सेवायोजन कार्यालय में किया जा रहा है। निर्वाचन के सम्बन्ध में सी-विजिल पर आनलाइन शिकायत दर्ज करायी जा सकती है जिसका त्वरित निस्तारण आनलाइन किया जा रहा है। इसी तरह मीडिया सर्टिफिकेशन एवं मानीटरिंग सेल 24 घंटे कार्य कर रहा है, जिसके माध्यम से सोशल मीडिया, इलेक्ट्रानिक मीडिया एवं प्रिन्ट मीडिया में प्रचारित एवं प्रसारित होने वाले समाचारों पर सतर्क दृष्टि रखी जा रही है। आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन एवं पेड न्यूज से सम्बन्धित प्रकरणों की गहन जांच विशेषज्ञों द्वारा की जा रही है। इसके अतिरिक्त निर्वाचन से सम्बन्धित आफलाइन शिकायतें सम्बन्धित पटल पर उपलब्ध करायी जा सकती है जिसका त्वरित निस्तारण कराया जा रहा है।

शिक्षा, स्वास्थ्य के साथ साथ खेल भी जरुरीः राकेश

अखंड भारत संदेश

कटरा गुलाब सिंह, प्रतापगढ़। शहीद भगत सिंह स्मारक क्रिकेट प्रतियोगिता का उदघाटन मैच हुलासगढ़ और मवई कला की टीम के बीच जगदीश नारायण इंटरमीडिएट कालेज ढिंगवस के मैदान में सम्पन्न हुआ, जिसमें मवई कला की टीम विजयी रही। मैन ऑफ दी मैच अंकित तिवारी रहे। दिन का दूसरा मैच प्रमोद तिवारी यूथब्रिगेड रामपुर खास और डेरवा के खिलाड़ियों के बीच खेल गया। जिसमे रामपुर खास की टीम विजयी रही।

प्रतियोगिता के उदघाटन समारोह की अध्यक्षता करते हुए जगदीश नारायण इंटरमीडिएट कालेज ढिंगवस के प्रधानाचार्य राकेश तिवारी ने खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन करते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की व उपस्थित लोगों का धन्यवाद ज्ञापित किया। उक्त अवसर पर राकेश तिवारी ने खेल के हर क्षेत्र में देश का नाम रोशन करने वाले खिलाड़ियों से प्रेरणा लेकर प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को खेल के क्षेत्र में अपनी पहचान कायम करने पर बल देते हुए शिक्षा, स्वास्थ्य के साथ साथ मनोरंजन एवं स्वास्थ्यवर्धक खेलों के महत्व पर प्रकाश डाला। खेल से स्कूल, कालेज, माता-पिता गुरु, परिवार के साथ देश का नाम रोशन करने का अवसर मिलता है। जो समय का सदुपयोग करते हुए आलस्य प्रमाद त्यागकर संघर्ष करते हैं वही आगे चल कर देश के नाम रोशन करते हैं। इस अवसर पर कार्यक्रम के संचालक गोलू बेलौरा, वीरू सिंह, राजेश पाण्डेय, पुष्कर, धीरज, गब्बर सिंह, रज्जन सहित सैकड़ों लोग उपस्थित रहे।

क्रिकेट प्रतियोगिता में मवईकला की टीम रही विजयी

क्रिकेट खिलाड़ियों का उत्साहवर्द्धन करते प्रधानाचार्य राकेश तिवारी।

सदा सर्वदा के लिए अदृश्य हो गई स्वरकोकिला लता मंगेश्कर

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। फिल्म जगत की मशहूर गायिका, विश्व में स्वर की मल्लिका कहलाने वाली भारत रत्न 92 वर्षीया लता मंगेश्कर के मुंबई में निधन होने का समाचार मिलने पर शोक में डूबे प्रतापगढ़ के साहित्यकारों, संगीतकारों व अधिवक्ताओं ने शोक संवेदना प्रकट करते हुए भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की है।

साहित्यिक संस्था कविकुल के अध्यक्ष परशुराम उपाध्याय सुमन ने कहा है कि लता मंगेशकर ने फिल्म जगत को अपने काव्य लेखन एवं मधुरिम स्वर से बड़ी ऊंचाइयां प्रदान की है। आज भी रेडियो टेलीविजन, यूट्यूब एवं फेसबुक पर उनके मनोहरी स्वरों का जादू दिखाई व सुनाई पड़ता है। संस्कार भारती के अध्यक्ष शिशिर खरे ने कहा कि आज संगीत की दुनिया का एक अध्याय समाप्त हो गया। संगीत की दुनिया में वे बेजोड़ प्रतिभा की धनी थीं। स्वतंत्र कवि मंडल सांगीपुर के अध्यक्ष अर्जुन सिंह ने अपने को लता मंगेशकर का फैन बताते हुए कहा कि मैं लगभग प्रतिदिन रात्रि के समय उनका प्यारा संगीत अवश्य सुनता हूं। उनकी मुजरिम धोनी सदैव कानों में गूंजती रहती है।

शोक संवेदना प्रकट करने वालों में लोकतंत्र रक्षक सेनानी बरिष्ठ साहित्यकार पंडित राम सेवक त्रिपाठी प्रशांत एवं यशभारती पुरस्कार से सम्मानित शास्त्रीय संगीत की मर्मज्ञ शिवानी मातनहेलिया सहित जितेंद्र बहादुर सिंह, श्यामल दादा, प्रतिमा त्रिपाठी, डॉ दयाराम मौर्य रत्न, सुरेश संभव, सत्येंद्र नाथ मिश्र मृदुल, ओमप्रकाश पांडेय गुड्डू, सुनील प्रभाकर आदि मौजूद रहे। उधर वरिष्ठ संगीतज्ञ डॉ शिवानी मातनहेलिया ने कहा कि भारत की सांस्कृतिक पहचान रहीं लता जी का नाम उनके जीवनकाल में ही संज्ञा से विशेषण बन चुका था। लोकप्रियता प्रसिद्धि तथा जनस्वीकार्यता के जिस शिखर पर वो पहुंच चुकी थीं, वह आने वाली कई पीढ़ियों के लिए प्रतिमान स्वरूप होगा। मधुरता की जीवन्त प्रतिरूप लता जी कभी नहीं मर सकतीं, अपने स्वरों के माध्यम से वे अमर और हर हर व्यक्ति के दिलों में जीवित रहेंगी।

साहित्यकारों, संगीतकारों एवं अधिवक्ताओं ने प्रकट की शोक संवेदना

लता मंगेश्कर (फाइल फोटो)

प्रमुख पत्रकार के पिता के निधन पर जताया शोक

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। एक प्रमुख हिन्दी दैनिक के संवाददाता दिनेश सिंह के पिता उमाशंकर सिंह का इलाज के दौरान मृत्यु हो गई। इसकी सूचना पर पत्रकारों ने गहरा शोक व्यक्त किया है। बताया जाता है कि कुछ दिनों से वह बीमार चल रहे थे जिन्होंने एक दिन पहले लखनऊ में अंतिम सांस ली। उनके शव को गत दिवस लाया गया जहां पत्रकारों व शुभचिंतकों ने पहुंचकर शोक जताया। शोक जताने वालों में आशुतोष त्रिपाठी, राजन शुक्ला, शैलेन्द्र मिश्र, रमेश त्रिपाठी, सुमित मिश्रा, हरिकेश मिश्र प्रमुख रुप से शामिल रहे।

पुलिस ने विभिन्न चौराहों पर की वाहनों की चेकिंग

रानीगंज पुलिस ने जिला बदर अभियुक्त को गिरफ्तार

चार पहिया वाहनों की चेकिंग करती पुलिस।

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। रविवार को पुलिस विभिन्न चैराहों पर वाहनों को रोककर चेकिंग कर रही थी। इसके अलावा जो लोग मास्क नहीं लगाए थे, उन्हें भी पुलिस टोक रही थी। इसके अलावा पुलिस वाहन चेकिंग में नम्बर प्लेटों को भी देख रही थी। जिनके नम्बर प्लेट अभी तक नहीं बदले गये हैं, उन्हें चेतावनी देकर छोड़ा गया। तीन सवारी बैठाकर चलने वालो को भी चेतावनी दी गई। चार पहिया वाहनों की भी चेकिंग की गई। अम्बेडकर चैराहा, मीरा भवन चैराहा पर चेकिंग करने में अधिकारी लगे रहे।

प्रतापगढ़। पुलिस अधीक्षक सतपाल अंतिल के निर्देशन में आगामी विधानसभा चुनाव, 2022 को निष्पक्ष व शांतिपूर्ण ढंग से सम्पन्न कराए जाने के दृष्टिगत जनपद पुलिस द्वारा निरंतर अभियान चलाकर अपराध/अपराधियों के विरूद्ध कार्यवाही की जा रही है। इसी क्रम में जनपद के थाना रानीगंज से उ0नि0 श्री अमरेश कुमार यादव मय हमराह द्वारा जिला बदर अभियुक्त ओम प्रकाश उर्फ बालक पुत्र नन्हकू निवासी ग्राम थरिया थाना रानीगंज, जिसे न्यायालय द्वारा 28 सितम्बर 2021 से छह माह के लिये जिला बदर किया गया था लेकिन न्यायालय का आदेश न मानने व घर पर ही रहने के कारण अभियुक्त को गिरफ्तार किया गया। इस सम्बन्ध में थाना स्थानीय पर मु0अ0सं0- 32/2022 धारा 10 उ0प्र0 गुण्डागर्दी नियंत्रण अधिनियम का अभियोग पंजीकृत किया गया।

जन सेवा केन्द्र से लाखों का सामान उठा ले गए चोर

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। शनिवार की रात अज्ञात चोरों ने दुकान में सेंधकाट कर लाखो का सामान उठा ले गए। पीड़त ने घटना की तहरीर पुलिस को तहरीर दी है। स्थानीय कोतवाली क्षेत्र कौशिल्या पुर (चकवा) निवासी सुजीत वर्मा रानीगंज कैथौला में सरदार पटेल इण्टर कालेज के पास जन सेवा केन्द्र खोल रखा है। प्रतिदिन की भाँति केन्द्र बंदकर घर चला गया।रविवार की सुबह केन्द्र खोला तो दुकान सेंध लगी देख कर आवाक रह गया।देखा तो तीन लैपटॉप, प्रिन्ट मशीन के साथ इंवर्टर बैटरा चोर उठा ले गए। पीड़ित ने घटना के बावत रानीगंज कैथौला पुलिस को तहरीर दी है।

मदनमोहन मालवीय पीजी कालेज के शिक्षकगण।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत व्यवसायिक पाठ्यक्रम प्रारंभ

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। मदनमोहन मालवीय पोस्ट ग्रेजुएट कालेज कालाकांकर प्रतापगढ़ में बी ए/बी काम भाग एक मे प्रो राजेन्द्र सिंह (रज्जू भइया) विवि प्रयागराज द्वारा निर्धारित रोजगारपरक/कौशल विकास के बेसिक ऑफ कंप्यूटर एप्लिकेशन, खाद्य प्रसंस्करण, आचार पापड़ तथा पोषण एवं स्वास्थ्य विषय की कक्षाओं का कोविड-19 के दिशा निदेर्शों के अनुरूप शुभारंभ किया। प्राचार्य डॉ शिवम श्रीवास्तव ने अपने उद्बोधन में पाठ्यक्रम की उपादेयता एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को विस्तार पूर्वक छात्र/छात्राओं को अवगत कराया। प्राचीन इतिहास के प्राध्यापक भूपेश प्रताप सिंह ने बेसिक ऑफ कंप्यूटर एप्लिकेशन के बारे में प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन वाणिज्य विभाग के प्रधानाध्यापक डॉ राम करन यादव ने किया। इस अवसर पर डॉ विनीता सिंह, रमेश गुप्ता, सूरज सिंह, डॉ उमा सिंह, डॉ कंचनलता, अब्दुल रज्जाक, अफसार अहमद, नवल कुमार आदि उपस्थित रहे।

मार्ग दुर्घटना में दो घायल

प्रतापगढ़। नगर कोतवाली थाना क्षेत्र के कटरा मेदनीगंज चैराहे के पास टेम्पों ने मोटरसाईकिल सवार को मारी टक्कर जिससे मोटरसाईकिल सवार महिला, पुरुष हुए गंभीर रूप से घायल हो गये। इस दौरान टक्कर मारते हुए टेम्पों ड्राइवर भुपियामऊ की तरफ फरार हो गया। मौके पर पहुंचे सिटी चैकी इंचार्ज गिरीश द्विवेदी ने घायलों को सुखपाल नगर पीएचसी भेजवाया जहां इलाज चल रहा है।

अवैध तमन्चा के साथ दो अभियुक्त गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। थाना उदयपुर से उ0नि0 पन्नालाल यादव मय हमराह द्वारा देखभाल क्षेत्र/चेकिंग के दौरान थाना क्षेत्र के कुरैशी का पुरवा मोड़ राहटीकर के पास से एक व्यक्ति सद्दाम खान पुत्र अलेमान खान निवासी कुरैशी का पुरवा, राहटीकर थाना उदयपुर को एक अदद तमन्चा 315 बोर व एक अदद जिन्दा कारतूस 315 बोर के साथ गिरफ्तार किया गया। उक्त बरामदगी के संबंध में थाना स्थानीय पर मु0अ0सं0 29/2022 धारा 3/25 आर्म्स एक्ट का अभियोग पंजीकृत किया गया है। उधर थाना मांधाता से उ0नि0 श्री राकेश चैरसिया मय हमराह द्वारा देखभाल क्षेत्र/चेकिंग के दौरान थाना क्षेत्र के दारापुर तिराहा के पास से एक व्यक्ति साजिद अली पुत्र साहिद अली निवासी सुबरनी थाना मांधाता, जनपद प्रतापगढ़ को एक अदद तमन्चा 315 बोर व एक अदद जिन्दा कारतूस 315 बोर के साथ गिरफ्तार किया गया। उक्त बरामदगी के संबंध में थाना स्थानीय पर मु0अ0सं0 46/2022 धारा 3/25 आर्म्स एक्ट का अभियोग पंजीकृत किया गया है।

पुलिस की गिरफ्तार में अभियुक्त।

वादाखिलाफी: एक भी मेला स्पेशल ट्रेन नहीं चली, रेलवे ने मेला स्पेशल चलाने की मंजूरी दी थी

स्नानार्थी करते रहे इंतजार एक भी ट्रेन नहीं आई

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। घोषणा के बाद भी रेलवे ने एक भी मेला स्पेशल नहीं चलाई जिससे गंगा में डुबकी लगाने की आस लिये स्टेशन पहुंचे स्नानार्थियों को काफी निराशा हुई। ट्रेन के प्रतीक्षा करने के बाद उन्हें सड़क मार्ग से संगम की राह पकड़ी। उधर, रेलवे का कहना है कि अगर भीड़ हुई होती तो स्पेशल ट्रेन अवश्य चलती। गौरतलब है कि माघ मेले के मद्देनजर रेलवे ने प्रतापगढ़ होकर जाने वाली तीन मेला स्पेशल चलाने की घोषणा की थी। जानकारी होने पर स्नानार्थी पूरी तैयारी के साथ स्टेशन पहुंचे। जब उन्हें पता चला की ट्रेन नहीं आएगी तो वे निराश लौट गए। बसंत पंचमी को भी लोगों की काफी भीड़ स्टेशन पर आई थी। इसके पूर्व मकर संक्रांति और मौनी अमावस्या जैसे प्रमुख स्नान पर्व पर भी मेला स्पेशल चलाने की जरूरत नहीं समझी गई। दोनो ही मौके पर स्नान करने जाने वालों की भीड़ काफी संख्या में स्टेशन पर मौजूद थी। लोगों का कहना है कि ऐसा पहली बार हुआ है कि घोषणा के बाद भी मेला स्पेशल का संचालन नहीं हो सका।

खबर संक्षेप

वांछित अभियुक्त को गिरफ्तार

कौशाम्बी। थाना कौशाम्बी पुलिस बल द्वारा पॉक्सो एक्ट से सम्बन्धित वांछित अभियुक्त राहुल कुशवाहा पुत्र राजेन्द्र उर्फ नत्थूलाल कुशवाहा निवासी नेतानगर कस्बा व थाना करारी को करारी बस स्टैंड से गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है।

चेकिंग के दौरान की गई कार्यवाही

कौशाम्बी। जनपद मे लाकडाउन के दृष्टिगत सरकार द्वारा निर्गत निदेशों के अनुपालन के क्रम में पुलिस अधीक्षक के निदेशानुसार जनपद स्तर पर विभिन्न धानों द्वारा अनावश्यक रूप से बाहर घूमने मारक न लगाने एवं सोशल डिस्टेसिंग का पालन करने वालों के विरुद्ध सघन चेकिंग की गई एंव चेकिंग के दौरान दो पहिया व चार पहिया वाहनों को चेक किया गया जिनमे 42 वाहनों का ई चालान किया गया।

गायब विवाहिता का 6 दिन बाद पुलिस ने बरामद किया अधजला नर कंकाल

अखंड भारत संदेश

भयाहू के प्रेम जाल में पागल आर्मी क्लर्क निकला पत्नी का हत्यारा

महिला की हत्या में गिरफ्तार आरोपी

कोखराज कौशाम्बी। आर्मी में तैनात एक क्लर्क ने अपनी पत्नी की हत्या करने के बाद उसके शव को पेट्रोल डालकर जला दिया है और पत्नी के गायब होने की अफवाह फैला दी है जांच के दौरान पुलिस को शिकायतकर्ता संदिग्ध प्रतीत हुआ जब पुलिस ने उससे कड़ाई से पूछताछ की तो उसने मामले का खुलासा स्वयं कर दिया है पुलिस ने आरोपी आर्मी क्लर्क और उसके भाई को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है घटना के पीछे बताया जाता है कि आर्मी क्लर्क अपने भाई की पत्नी से अवैध संबंध बनाकर रहता है जिसके चलते आर्मी क्लर्क की पत्नी विरोध करती थी और यही उस महिला की हत्या का कारण बन गया है। घटनाक्रम के मुताबिक कोखराज थाना क्षेत्र के नरवर पट्टी गांव निवासी भारत लाल की पुत्री सविता सिंह की शादी इसी थाना क्षेत्र के बरकतपुर गांव निवासी कुंवर सिंह के साथ हुई थी शादी के बाद से ही सविता सिंह का उत्पीड़न शुरू हो गया बताया जाता है कि कुंवर सिंह आर्मी मे अपर क्लर्क के पद पर तैनात हैं और उनके भाई की पत्नी से उनके नाजायज संबंध है सविता सिंह ने पति के हरकत का विरोध किया लेकिन यह बात पति को नागवार गुजरी और दोनों के बीच विवाद बढ़ता गया 30 जनवरी 2022 को विवाहिता सविता सिंह की हत्या करने के बाद लग्जरी कार में उसकी लाश को रखकर आर्मी क्लर्क कुंवर सिंह और उसका भाई विक्रम सरोज गंगा नदी के किनारे संदीपन घाट पहुंचे और विवाहिता के शव पर 10 लीटर पेट्रोल डालकर उसे आग के हवाले कर दिया वापस आकर अफवाह फैलाई कि विवाहिता फरार हो गई है लेकिन यह बात विवाहिता के मायके के लोगों को समझ नहीं आई और उन्होंने मामले की सूचना पुलिस को दी सूचना मिलने के बाद पुलिस ने विवाहिता सविता सिंह को खोजना शुरू किया तो जांच के दौरान मालूम हुआ कि मामले में विवाहिता का पति आर्मी क्लर्क कुंवर सिंह संदिग्ध है पुलिस ने कुंवर सिंह से पूछताछ शुरू की और जब पुलिस ने उससे कड़ाई से पूछताछ किया तो उसने गुनाह से पर्दा उठा दिया आरोपियों की निशानदेही पर पुलिस ने विवाहिता का अधजला नर कंकाल सिर हड्डी बरामद किया है और लग्जरी वाहन को बरामद कर आर्मी क्लर्क कुंवर सिंह उसके भाई विक्रम सरोज को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है।

तीन बच्चे हुए अनाथ

कोखराज कौशाम्बी। मृतक महिला सबिता सिंह के तीन बच्चे थे जो केंद्रीय विद्यालय में पढ़ाई करते थे महिला का पति आर्मी में अपर क्लर्क था परिजनों के अनुसार अपनी भयाहु से अवैध सम्बन्ध थे जिसके चलते महिला की हत्या की गई है माता की हत्या और पिता के जेल जाने के बाद बच्चे रो-रोकर बेहाल है।

न्यायमूर्ति ने परिवार न्यायालय भवन का किया शिलान्यास

परिवार न्यायालय भवन का शिलान्यास करते न्यायाधीश

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। जनपद न्यायालय कौशाम्बी में परिवार न्यायालय भवन का शिलान्यास न्यायमूर्ति शेखर कुमार यादव प्रशासनिक न्यायमूर्ति कौशाम्बी उच्च न्यायालय इलाहाबाद के कर कमलो द्वारा सम्पन्न हुआ परिवार न्यायालय भवन बन जाने से न्यायालय के कार्यों में आने वाली दिक्कतों का समाधान होगा परिवार न्यायालय भवन के शिलान्यास के अवसर पर जिला जज बृजेश कुमार मिश्र सहित समस्त न्यायिक अधिकारी गण बार एसोसिएशन अध्यक्ष मनुदेव त्रिपाठी एडवोकेट महामंत्री तुषार तिवारी एडवोकेट सुनील त्रिपाठी एडवोकेट हरीणांक द्विवेदी एडवोकेट ओम दत्त त्रिपाठी एडवोकेट सहित तमाम अधिवक्ता गण मौजूद रहे।

किसानो और मजदूरों का शोषण बंद हो : सुशील जयहिंद

सुशील जय हिंद ने कहा किसानों के शोषण अत्याचार और उत्पीड़न के खिलाफ उठाएंगे आवाज

प्रचार के दौरान समर्थकों के साथ मौजूद सुशील जय हिंद

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। चायल विधानसभा से उम्मीदवार जय जवान जय किसान मंच के संयोजक सुशील जय हिंद रविवार को चायल विधानसभा के बूंदा गांव भूरी गांव मलाका गांव समर्थकों के साथ पहुंचे और गांव के मतदाताओं से मुलाकात कर उनका हालचाल जाना बीते 5 वर्षों में गांव के विकास में भाजपा सरकार का क्या योगदान था।

उन्होंने आम जनमानस से वार्ता कर हकीकत खगाली विधानसभा प्रत्याशी सुशील जय हिंद ने विभिन्न ग्राम सभाओं में घर-घर पहुंचकर लोगों से जनसंपर्क किया उन्होंने कहा कि किसानों का मजदूरों का जो शोषण हो रहा है और जो शोषण किया गया था उसके.खिलाफ मैं किसानों मजदूरो की आवाज बन के उम्मीदवार के रूप में चुनाव मैदान में हूं उन्होंने कहा कि किसानों का मजदूरों का मुझे भरपूर समर्थन मिल रहा है और हम इस अत्याचार और उत्पीड़न के खिलाफ आवाज उठाएंगे किसानों को उनके अधिकार दिलाएंगे उन्होंने कहा कि जो लोग दल बदल कर के और करोड़ों रुपया देकर टिकट लेकर चुनाव मैदान में है वह लोग कभी भी किसानों का मजदूरों का भला नहीं कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि मैं किसान का बेटा हूं मैं किसानों के लिए काम करूंगा और सदैव उनकी समस्याओं में सहभागिता निभाऊंगा उनके सुख दुख में सदैव खड़ा रहूंगा जनसंपर्क के दौरान सुशील जय हिंद के साथ विपिन पटेल लव कुश पाल संजय यादव ठाकुर तेजवीर सिंह विकास चौहान सुरेश कुमार वर्मा अमित सिंह चौहान सहित तमाम कार्यकर्ताओं ने कोविड-19 को ध्यान में रखते हुए

दबंगों ने महिला का सिर फोड़ा, किया शिकायत

अखंड भारत संदेश

हमले में घायल महिला

कौशाम्बी। सराय अकिल थाना क्षेत्र के घोसिया गांव के दबंग युवक केशन गयाप्रसाद अमरसिंह से लड़की को लेकर विवाद हुआ था। सुबह घर पर चढ़कर लाठी डंडे कुलहरी से महिला का सिर फोड़ दिया हमले में महिला हेमा देवी को चोट आई है। सराय अकिल थाना में सूचना देकर प्राथमिकी दर्ज कराते हुए इलाज कराकर रिश्तेदारों ने पीड़ित महिला को घर पहुंचाया गया। लेकिन दबंगों को पुलिस का तनिक भी डर नही है और दुबारा जान से मारने के इरादा से ईट पत्थर और कुल्हारी के साथ हमला करने के बाद रिश्तेदारों की दो पहिया वाहन को छति पहुंचते हुए फिर गाली गलौज किया लेकिन अभी तक आरोपियों पर कोई कार्यवाही नही हुई है पीड़ित ने न्याय की गुहार लगाते हुए कहा कि हम लोगो को आरोपियों से जान की खतरा है।

सड़क पार कर रही महिला को डीसीएम ने मारी टक्कर मौत

चरवा थाना क्षेत्र के महंगाव में दावत जा रही महिला हुई हादसे का शिकार

चरवा कौशाम्बी। चरवा थाना क्षेत्र के महगांव में सड़क पार कर रही एक महिला को डीसीएम ने टक्कर मार दिया है जिससे महिला गंभीर घायल हो गई है घायल महिला को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है जहां चिकित्सकों ने महिला की मौत की पुष्टि कर दी हैं मौत की जानकारी मिलते ही परिवार में कोहराम मच गया है सूचना पाकर मौके पर पुलिस पहुंची है। घटनाक्रम में बताया जाता है कि महगांव निवासी सुखिया देवी उम्र 55 वर्ष पत्नी दीनानाथ अपने गांव में ही दावत में शामिल होने जा रही थी कि जैसे ही वह सड़क क्रॉस करने लगी तेज रफ्तार डीसीएम चालक ने जोरदार टक्कर मार दिया जिससे महिला घायल हो गई मौके पर मौजूद लोगों ने घायल महिला को एम्बुलेंस से जिला अस्पताल ले गये जिला अस्पताल में डॉक्टर ने घायल महिला को मृतक घोषित कर दिया परिजन लाश को घर लेकर चले आये और पति ने चरवा थाने में तहरीर दिया है।

जनसत्ता दल पार्टी के प्रत्याशी आज दाखिल करेगे नामांकन

अखंड भारत संदेश

नामांकन पत्र दाखिल के दौरान पार्टी नेताओं के साथ-साथ वैश्य समुदाय के लोग रहेंगे मौजूद

भरवारीकौशाम्बी। आगामी विधान सभा चुनाव में चायल विधानसभा से जनसत्ता दल लोकत्रांतिक पार्टी के प्रत्याशी अनिल कुमार केशरवानी 7 फरवरी को समर्थकों समेत नामांकन करेंगे।

इस मौके पर उनका काफिला अपने निवास सराय आकिल के पास से अपने सभी समथोकों व चायल के गणमान्य लोगो पार्टी के पदाधिकारियों के साथ विशाल जुलूस के साथ मंझनपुर निर्वाचन कार्यलय पहुचकर समय 11 बजे अपना नामांकन करेगे इस मौके पर प्रत्याशी अनिल कुमार केशरवानी के साथ जनसत्ता पार्टी के राष्ट्रीय प्रधान महासचिव शैलेन्द्र कुमार किसान मोर्चे के प्रदेश अध्यक्ष बलवीर सिंह चौहान युवा वाहिनी के जिलाध्यक्ष अश्वनी सिंह जिलाध्यक्ष मजीद अली राजू सिंह उर्फ डाहिया प्रधान नागेश अग्रहरी रेहान अहमद इरफान अहमद मंगल सिंह मयंक सिंह मनीष कुमार रामू सहित सैकड़ो लोग मौजूद थे। इससे पहले पार्टी के पदाधिकारियों ने एक आपात बैठक बुलाई जिसमे आगे विधानसभा चुनाव के परिपेक्ष्य में कैसे चुनाव लड़ना है व चुनाव जीतना है। इतना ही नही सभी कार्यकताओं को प्रमुख प्रधान महासचिव शैलेन्द्र ने सभी को आज से ही चुनाव में अपनी पूरी ताकत झोंक देने की बात कही वही प्रत्याशी अनिल केशरवानी के चेहरे पर अपने चुनाव में सभी का सहयोग व सभी का आशीर्वाद प्राप्त होने से चेहरा खुशी से खिला हुआ दिख रहा था और अपने चुनाव लड़ने से खुश थे बैठक की अध्यक्षता पार्टी के जिलाध्यक्ष मजीद अली ने की इस मौके पर बीडीसी प्रत्याशी संगीता सरोज ने फूलो का गुलदस्ता भेंटकर उनको जीत का आशीर्वाद दिया।

नामांकन में गए भाजपा कार्यकर्ताओं में प्रत्याशी के प्रति जबरदस्त आक्रोश

वाहनों का डीजल पेट्रोल और चाय नाश्ते का भाजपा विधायक प्रत्याशी द्वारा इंतजाम न किए जाने से उनके समर्थक हुए नाराज

अखंड भारत संदेश

कौशांबी। मंझनपुर विधायक लाल बहादुर के साथ नामांकन कराने आए तमाम कार्यकताओं में आक्रोश दिखाई पड़ रहा है कार्यकताओं का कहना है कि नामांकन में शामिल होने के लिए उन्हें बुलाया गया था और यह कहा गया था कि उनके वाहनों में पेट्रोल डीजल भरवाया जाएगा लेकिन नामांकन के बाद उनके वाहनों में डीजल पेट्रोल तेल नहीं लगाया गया नामांकन में शामिल कार्यकताओं का कहना है कि भाजपा प्रत्याशी लाल बहादुर द्वारा उनसे बात भी नहीं की गई नामांकन में शामिल लोगों को चाय नाश्ता का भी प्रबंध भाजपा विधायक प्रत्याशी द्वारा नहीं किया गया विधायक के इस प्रकार के व्यवहार से कार्यकताओं में जबरदस्त उबाल है नामांकन के बाद विधायक चुपचाप निकल गए कार्यकताओं से वह नहीं मिले उनके बाइक में डीजल पेट्रोल तेल डलवाने एवं नाश्ता पानी ना कराने से कार्यकताओं में आक्रोश दिखाई पड़ रहा है कार्यकताओं ने सोशल मीडिया पर वीडियो वायरल किया है।

अपना दल प्रत्याशी के नामांकन से आहत हुए अपना दल एस के नेता

अपना दल भाजपा गठबंधन प्रत्याशी नागेंद्र प्रताप सिंह पटेल कैसे विधानसभा चुनाव की वैतरणी पार करेंगे यह संशय बरकरार है

कौशाम्बी। दूसरे जनपद के व्यक्ति को अपना दल एस ने कौशांबी की चायल विधानसभा से प्रत्याशी बनाया है और अपना दल भाजपा गठबंधन से बनाए गए प्रत्याशी नागेंद्र प्रताप सिंह पटेल के कारनामे से कौशांबी के अपना दल एस पार्टी के नेता अपने को उपेक्षित महसूस करने लगे हैं नामांकन होते ही अपना दल एस नेताओं में प्रत्याशी के प्रति जबरदस्त आक्रोश व्याप्त है इन स्थितियों में अपना दल भाजपा गठबंधन प्रत्याशी नागेंद्र प्रताप सिंह पटेल कैसे विधानसभा चुनाव की वैतरणी पार करेंगे यह संशय बरकरार है। अपना दल प्रत्याशी नागेंद्र प्रताप सिंह पटेल पर पार्टी नेताओं ने आरोप लगाते हुए कहा है कि इन्होंने जिले की धरती में कदम रखते ही पार्टी नेताओं की उपेक्षा शुरू कर दी है चायल प्रत्यासी नागेंद सिंह पटेल ने अपना दल यस के विधान सभा अध्यक्ष के विना नामांकन किया जिससे नेवादा चायल ब्लाक के अपना दल एस कार्यकर्ता काफी नाराज है कार्यकताओं का कहना है कि चुनाव परिणाम हाथ से निकलने के बाद उन्हें अपना दल कार्यकताओं पदाधिकारियों की हैसियत समझ में आएगी जब कुछ भी नही हो सकता कार्यकताओं का कहना है कि चायल मे यदि जाति वादी की राजनीत हुई तो इसके गंभीर परिणाम दिखाई पड़ना तय है।

2 बच्चों की माँ हुई फरार ससुर थाना चौकी में लगा रहा गुहार

रोजी रोटी के सिलसिले में दूसरे प्रांत में कमाई करने गया है महिला का पति

अझुवा कौशाम्बी। सैनी कोतवाली क्षेत्र के धुमाई ग्राम सभा से 2 बच्चों की माँ नकदी गहने जेवर लेकर फरार हो गयी है। बल्लू पुत्र गाजी निवासी धुमाई ने बताया कि उसका पुत्र सुनील रोजी रोटी के सिलसिले में बाहर रहता है छत डलवाने के लिए रिश्तेदार से 50 हजार रुपए सुनील ने अपने पत्नी को दिलवाया था पत्नी अंजू छत न डलवाकर पिछले शनिवार को अपने मायके गहवर थाना खखरेरू चली गयी वहाँ से माँ के बीमार बता कर कि उसकी मां प्रयागराज में भर्ती है बहाना बनाकर 50 हजार नकदी जेवर लेकर फरार हो गयी बल्लू ने थाना सैनी के कैमा निवासी रिश्तेदार इंद्रजीत पुत्र रामभवन और विजय कुमार पुत्र अज्ञात के विरुद्ध शंका जाहिर कर 5 फरवरी को नामजद तहरीर दी है विवाहिता अपने 2 बच्चे रचना उम्र लगभग 4 वर्ष, पुत्र आनंद उम्र लगभग 2 वर्ष को घर धुमाई मे छोड़कर फरार हुई बताई जाती है।

समाज सेवी संस्था द्वारा आयोजित किया गया निशुल्क मेडिकल शिविर

अखंड भारत संदेश

कैंप में शुगर ब्लेड प्रेशर जुखाम बुखार दंत रोग नेत्र रोग एवं अन्य प्रकार के रोगियों को निशुल्क दवा बांटी गई

चिकित्सा शिविर के दौरान मौजूद चिकित्सक संस्था के लोग और मरीज

करारी कौशाम्बी। हजरत ख्वाजा कड़क शाह अब्दाल रहमतुल्लाहि अलैह के 727वें उर्स के मौके पर शहर काजी मुफ्ती खुशनूद आलम एहसानी के द्वारा 5,और 6 फरवरी को सुबह 10 से शाम 5 बजे तक दरगाह ख्वाजा कड़क शाह अब्दाल सुल्तानपुर ख्वाजा कड़क,कड़ा तहसील सिराथू में निशुल्क मेडिकल कैंप का आयोजन किया गया इस कैंप की अध्यक्षता हाफि ज राहत खान रजवी ने की यह मेडिकल शिविर समाज सेवी संस्था शैखे मिल्लत मिशन टीम के द्वारा किया गया। संस्था के सदस्य मुफ्ती मोहम्मद साजिद कादरी ने कहा कि हमारा प्रयास है कि लोगों की सेवा के माध्यम से इस्लाम के प्यार का संदेश फैलाया जाए और इसी मकसद के अंतर्गत हमने दिसंबर से गरीबों और असहाय लोगों में कपड़े प्रत्येक रविवार बांटने का काम शुरू किया था जो आज भी जारी है और यह काम जारी रहेगा। शहर काजी के पुत्र मौलाना मोहम्मद मियां कादरी सिद्दीकी ने कहा कि हजरत ख्वाजा कड़क शाह अब्दाल ने पूरी आयु दीन और समाज की सेवा की थी इसीलिए आज उनके देहांत को 700 साल हो गए मगर उनसे प्रेम करने वाले लोगों की गिनती कम नहीं हुई और न होगी। उन्होंने बताया कि इस मेडिकल कैंप में शुगर ब्लेड प्रेशर जुखाम बुखार दंत रोग नेत्र रोग एवं अन्य प्रकार के रोगियों को नीःशुक्ल दवा बांटी गईं इस मौके पर डॉक्टर मोबीन सिद्दीकी डॉक्टर इस्तिखार अहमद फिजिशियन एवं डॉक्टर एम ए सिद्दीकी डॉक्टर शिवेंद्र सिंह मोहम्मद आमिर हाफि ज जहीर मोहम्मद राशिद मोहम्मद उमर हाफि ज मोहम्मद शाहनवाज मोहम्मद गुफरान मोहम्मद नदीम मोहम्मद सरताज मोहम्मद कौसर खान अहमद खान मौजूद रहे।

कोखराज क्षेत्र में बढ़े अपराध से जनता परेशान

अखंड भारत संदेश

गंभीर घटनाओं के खुलासे में हाफ रही पुलिस ने पेंडिंग पत्रावली लिख कर बंद कर दी गम्भीर अपराधों की जांच

कौशांबी। कोखराज थाना क्षेत्र में बढ़ते अपराध से आम जनता परेशान है घटनाओं का खुलासा पुलिस नहीं कर पा रही है पूर्व की गम्भीर घटनाओं को पेंडिंग पत्रावली लिखकर बंद कर दिया गया है इलाके में बढ़ते अपराध पर पुलिस ने मुकदमा नही दर्ज करने की ठान ली है जिससे आला अधिकारियों की नजर में कोखराज पुलिस की कार्यशैली की छवि बेहतर बनी हुई है इलाके के लोगों ने आला अधिकारियों का ध्यान आकृष्ट कराते हुए कोखराज थाना पुलिस की कार्यशैली पर अंकुश लगाए जाने की मांग की है। बताते चलें कि कोखराज थाना की पुलिस चौकी भरवारी क्षेत्र में 2 जनवरी को चोरी के वाहन पार्ट्स को दो ट्राली में लेकर जा रहे अपराधियों को पुलिस ने पकड़ा माल तो बरामद हो गया लेकिन चोर भाग गए पुलिस ने माल जप्त कर लिया आरोप है कि चोर से पैसा लेकर पुलिस ने छोड़ दिया है 2 जनवरी को ट्रैक्टर चालक को लूट लिया गया 10 जनवरी को सिहोरी टोल प्लाजा के पास लेखपाल से नगदी और बाइक लूट ली गई है इसी तरह आशीष पांडेय के साथ 15 जनवरी को सिंधिया पुल के पास लूटपाट हुई है 17 जनवरी को भरवारी डाकघर से बाइक चोरी हो गई और 18 जनवरी को फिर टेगाई जलालपुर में जयप्रकाश को लूट लिया गया इतने पर भी अपराधियों पर पुलिस अंकुश नहीं लगा सकी और लगातार घटनाएं घटित होती रही 18 जनवरी को गोवंश काट दिए गए जिसको लेकर इलाके में आक्रोश फैल गया और थाना पुलिस को भी जलालत झेलनी पड़ी 19 जनवरी को शोभना निवासी सर्वेश कुमार की बाइक की डिग्गी तोड़कर के मूरतगंज में 50 हजार रुपए टप्पेबाज उठा ले गए इस मामले का भी खुलासा नहीं हुआ 31 जनवरी को एक गेस्ट हाउस से रामपाल अलीगंज की बाइक चोरी हो गई मामले में मुकदमा नहीं दर्ज हुआ 28 जनवरी को पुलिस चौकी के पास से विक्रम चोरी हो गई जो दूसरे दिन अषाढा के पास से बिक्रम बरामद हुई मुकदमा नहीं लिखा गया और मामले में आरोपी से 15,000 लेकर छोड़ दिया गया इलाके में चोरी की बाइक के साथ आरोपी पकड़े गए लेकिन 20 हजार रुपए लेकर उन्हें भी छोड़ने का आरोप पुलिस पर लगा है 4 फरवरी को हररायपुर चौराहे से सराफा कारोबारी की दुकान में तीन लाख की टप्पे बाजी दिनदहाड़े हो गई इस मामले में भी पुलिस रत्ती भर आगे नहीं बढ़ सकी है। बालक मऊ गांव में 3 वर्षों पूर्व चिकित्सक हत्याकांड का खुलासा भी पुलिस नहीं कर सकी है इलाके में बढ़ते अपराध से आम जनता त्रस्त है संगठित अपराध गांजा की बिक्री जुए के अड्डे डग्गामार वाहनों से वसूली हरे पेड़ों की कटाई बालू के ओवरलोड वाहनों से वसूली के लिए सिपाही पूरे दिन मुस्तैद हैं। अपराधों के खुलासे में पुलिस फिसड्डी साबित हो रही है। पुलिस की असफलता पर इलाके के लोगों ने अधिकारियों का ध्यान आकृष्ट कराते हुए थाना और चौकी पुलिस पर कार्यवाही की मांग की है।

मां बेटियों को दबंग महिलाओं ने पीटा

कौशांबी। चरवा थाना क्षेत्र के सिरियावा कला गांव की राइसुनिशा पत्नी अमीर उद्दी रविवार की दोपहर खेत पर थी इसी बीच गांव की रुबीना और अमीना बेगम ने राइसुनिशा को जमीन पर पटक कर बेरहमी से लात घूस से पीटा है महिला को बाल पकड़कर खेतों में घसीटा गया है मौके पर कोई पुरुष मौजूद नहीं था दबंग महिलाओं ने दूसरी महिला को बेरहमी से पीट कर फरार हो गई हैं मार खाने के बाद महिला अपने घर पहुंची और घर में मौजूद विवाहित बेटियों से वह पूरे दास्तान को बता रही थी इतने में हमला करने वाली महिलाएं आधा दर्जन अन्य महिलाओं के साथ पीड़ित महिला के घर घुस गई और गाली गलौज करते हुए धमकी देते हुए फिर मां बेटियों को लात घूसा से बेरहमी से पीटा है माँ बेटी के बाल पकड़कर जमीन में घसीटे गए हैं दबंग महिलाओं ने अत्याचार आतंक के मामले में पुरुषों को भी पीछे छोड़ दिया है मामले की सूचना पीड़ित मां बेटी ने स्थानीय पुलिस को दिया है।

डिप्टी सीएम के भाई के साथ व्यापार मंडल पदाधिकारियों ने किया नगर भ्रमण

अखंड भारत संदेश

प्रांतीय महामंत्री रमेश अग्रहरी ने डिप्टी सीएम केशव मौर्य के पक्ष में व्यापारियों से मांगा समर्थन

डिप्टी सीएम के पक्ष में प्रचार करते व्यापार मंडल के पदाधिकारी

अझुवा कौशाम्बी। व्यापार मण्डल के प्रान्तीय महामंत्री रमेश अग्रहरी ने अझुवा क्षेत्र के व्यापारियों संग नवीन मंडी समिति प्रांगण में एक बैठक की है जिसमे व्यापारियों ने एक मत से भारतीय जनता पार्टी के सिराथू प्रत्याशी केशव प्रसाद मौर्य डिप्टी सीएम को समर्थन देने की बात कही है रमेश अग्रहरी ने कहा कि व्यापारी ठेका नही मांगता व्यापारी केवल सुरक्षा मांगता है जो भाजपा सरकार में व्यापारियों की सुरक्षा का कोई मुद्दा ही नही है इसलिए सभी व्यापारी भाई खुलकर व्यापार करें और भारतीय जनता पार्टी के प्रत्यासी उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य को समर्थन दे इस बात पर सैकड़ों की संख्या में एकत्र व्यापारियों ने समर्थन का वादा किया और मौके पर पहुंचे उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य के छोटे भाई राजेन्द्र मौर्य के साथ नगर के व्यापारियों दुकानदारों आमजनमानस से मिलकर आने वाली 27 फरवरी को केशव प्रसाद मौर्य को रिकार्ड मतों से विजयी बनाने का समर्थन मांगा है इस दौरान उनके साथ मुख्यरूप से व्यापारी कपूर चन्द्र केशरवानी,रमेश अग्रहरी राकेश केसरवानी दीपक केसरवानी रमेश प्रसाद केसरवानी गुड्डू दराना केसरवानी चुन्नू केसरवानी ओमप्रकाश कुशवाहा अनिल कुमार चेयरमैन श्रवण केसरवानी आकाश मौर्य सहित क्षेत्र के सैकड़ों व्यापारी मौजूद रहे।

संपादक की कलम से

कैसा हो जन हितकारी बजट

-भरत झुनझुनवाला-

बजट में बुनियादी संरचना जैसे हाईवे, बंदरगाह इत्यादि में सरकारी निवेश बढ़ने की पूरी संभावना है। यह सही भी है। लेकिन बुनियादी संरचना दो प्रकार की होती हैद्धएक बड़ी और दूसरी छोटी। बड़ी बुनियादी संरचना से बड़े उद्योगों को लाभ अधिक होता है जैसे हाईवे बनने से सूरत से कोलकाता माल पहुंचाना आसान हो जाता है। लेकिन इसी बड़ी संरचना से कोलकाता के छोटे उद्यमियों का धंधा पिटता है। जैसे यदि सूरत का सस्ता कपड़ा कोलकाता आसानी से पहुंचे तो कोलकाता के बुनकरों का धंधा पिटता है। इसलिए जरूरी है कि बड़ी संरचना के साथ-साथ छोटे आम आदमी के लिए लाभप्रद संरचना जैसे छोटे कस्बों में मुफ्त वाईफाई, गांव में सड़क, गांव में सीवेज का निस्तारण, बिजली की व्यवस्था इत्यादि में पर्याप्त निवेश किया जाए। ऐसा निवेश करने से गांव के लोगों को अपना माल सस्ता बनाने में सहूलियत होगी और वे बड़े उद्यमियों के सामने खड़े होकर अपना माल बेच सकेंगे और अपना जीवनयापन कर सकेंगे। इसलिए मात्र बुनियादी संरचना में निवेश बढ़ाना पर्याप्त नहीं होगा। उसकी दिशा आम आदमी के लिए उपयोगी बुनियादी संरचना की तरफ मोड़ना जरूरी है। बजट में सरकारी इकाइयों के निजीकरण की प्रक्रिया तेज करने के आसार हैं। जैसे एयर इंडिया का हाल में निजीकरण किया गया और कुछ बैंकों के भी निजीकरण की चर्चा हो रही है। अभी तक की व्यवस्था थी कि घाटे में चल रही सार्वजनिक इकाइयों मात्र का निजीकरण किया जाता है। यह विचारधारा ठीक नहीं है क्योंकि इसका अर्थ यह हुआ कि जब तक कोई सरकारी इकाई लाभ कमाती है, तब तक उसे सरकारी घेरे में रखा जाएगा और जब वह घाटे में चली जाए तब ही उसका निजीकरण किया जाए। यह उसी प्रकार हुआ जब तक फल सड़ न जाए तब तक उसकी बिक्री न करें। इसके स्थान पर सरकार को घाटे में चल रही इकाइयों के साथ-साथ लाभ में चल रही इकाइयों के निजीकरण पर भी ध्यान देना चाहिए जिससे कि वे घाटे में जाए अथवा फल सड़े उससे पहले ही उसकी बिक्री हो जाए जिससे कि सरकार को पर्याप्त धन मिल सके।

162 साल पहले पेश हुआ था देश का पहला बजट

-योगेश कुमार गोयल-

संसद की दोनों सभाओं के समक्ष रखा जाने वाला 'वार्षिक वित्तीय विवरण' केन्द्र सरकार का बजट कहलाता है, जो देश के विकास को प्रभावित करने वाला सबसे बड़ा कारक होता है। 'बजट' एक पुराने फ्रांसीसी शब्द से लिया गया है, जिसका अर्थ है 'पर्स'। भविष्य की योजनाओं और उद्देश्यों के आधार पर बजट एक निश्चित अवधि के लिए पूर्व निर्धारित राजस्व और व्यय का अनुमान होता है, जो भविष्य की वित्तीय स्थितियों को दशार्ता है और वित्तीय लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करता है। यह एक ऐसा दस्तावेज है, जो प्रबंधन व्यवसाय के लिए अपने लक्ष्यों के आधार पर आगामी अवधि के लिए राजस्व और खर्चों का अनुमान लगाने के लिए बनाया जाता है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 112 के अनुसार, एक वर्ष का केन्द्रीय बजट, जिसे वार्षिक वित्तीय विवरण भी कहा जाता है, उस विशेष वर्ष के लिए सरकार की अनुमानित प्राप्तियों और व्यय का विवरण होता है। केन्द्रीय बजट को राजस्व बजट तथा पूंजीगत बजट में वगीर्कृत किया जा सकता है। बजट के जरिये सरकार आर्थिक नीतियों को लागू करती है और हर साल पेश किए जाने वाले बजट का मुख्य उद्देश्य दुर्लभ संसाधनों का अधिकतम उपयोग करना है। इस दस्तावेज में आगामी वित्तीय वर्ष के लिए अनुमानित आय और व्यय पर विस्तृत टिप्पणियां दी

जाती हैं। बजट में शामिल प्रस्ताव संसद की स्वीकृति मिल जाने के बाद 1 अप्रैल से लागू हो जाते हैं, जो अगले साल 31 मार्च तक लागू रहते हैं। बजट निर्माण की पूरी जिम्मेदारी वित्त मंत्रालय की ही होती है। वित्त वर्ष 2022-23 के लिए वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा एक फरवरी को बजट पेश किया गया। यह लगातार चौथा ऐसा अवसर है, जब उन्होंने देश का आम बजट पेश किया है। वैसे यह जानना दिलचस्प है कि आगामी वित्त वर्ष के लिए जो केन्द्रीय बजट कुछ घंटों में पेश कर दिया जाता है, उसकी तैयारी करीब पांच माह पहले ही शुरू हो जाती है। इन तैयारियों के दौरान वित्त मंत्रालय केन्द्र सरकार के अन्य मंत्रालयों और विभागों के अधिकारियों के साथ मीटिंग करता है, जिसके आधार पर ही यह तय किया जाता है कि किस मंत्रालय अथवा विभाग को वित्त वर्ष के लिए कितनी रकम दी जाए। इन मीटिंग्स में तय होने के बाद एक ब्लूप्रिंट तैयार किया जाता है। बजट का प्रारूप तैयार हो जाने के बाद वित्त मंत्रालय तथा प्रधानमंत्री एक बैठक में मंत्रिमंडल के सदस्यों के साथ मिलकर बजट का अवलोकन करते हैं और वित्त तथा राजस्व संबंधी नीतियों को निश्चित करते हैं। सम्पूर्ण मंत्रिमंडल द्वारा स्वीकृत होने के बाद केन्द्रीय बजट संसद में प्रस्तुत किया जाता है। भारत में वित्त वर्ष प्रतिवर्ष एक अप्रैल से शुरू होकर 31 मार्च को समाप्त होता है और बजट के विवरण में इस पूरे वित्तीय वर्ष के लिए भारत सरकार की अनुमानित प्राप्तियों तथा व्यय का ब्यौरा शामिल होता है। सरल शब्दों में कहें तो बजट आगामी वित्त वर्ष के लिए सरकार की वित्तीय योजना होती है, जिसके जरिये यह तय करने का प्रयास किया जाता है कि सरकार अपने राजस्व की तुलना में खर्च को किस हद तक बढ़ा सकती है। यह कवायद इसीलिए होती है क्योंकि सरकार को अपने राजकोषीय घाटे का एक लक्ष्य हासिल करना होता है। बजट आमतौर पर तीन प्रकार का होता है- संतुलित बजट, अधिशेष बजट और घाटे का बजट। संतुलित बजट में आय और खर्च की मात्रा का समान होना जरूरी है जबकि अधिशेष बजट में सरकार की आय खर्चों से अधिक होती है और घाटे के बजट में सरकार के खर्च उसकी आय के स्रोतों से अधिक होते हैं। सरकारी बजट तीन प्रकार के होते हैं, परिचालन या चालू बजट, पूंजी या निवेश बजट और नकदी या नकदी प्रवाह बजट। सरकार की आय के प्रमुख साधनों में विभिन्न प्रकार के कर और राजस्व, सरकारी शुल्क, जुमार्ना, लाभांश, दिए गए ऋण पर ब्याज आदि तरीके शामिल होते हैं बजट से जुड़े कुछ रोचक पहलुओं पर नजर डालना भी काफी दिलचस्प है। पहले बजट की कुछ प्रतियां छपती थी लेकिन अब बजट पूरी तरह डिजिटल हो गया है। 2016 तक फरवरी माह के अंतिम दिन आम बजट पेश किया जाता था किन्तु 2017 में तत्कालीन वित्तमंत्री अरुण जेटली ने बजट पेश करने का दिन बदलकर 1 फरवरी कर दिया। 1999 तक बजट भाषण फरवरी के अंतिम कार्यदिवस पर शाम पांच बजे पेश किया जाता था लेकिन 1999 में यशवंत सिन्हा ने इसे बदलकर सुबह 11 बजे कर दिया। 2017 से पहले रेल बजट भी अलग से पेश किया जाता था लेकिन 2017 में उसे आम बजट में ही समाहित कर दिया गया। 1955 तक बजट केवल अंग्रेजी में ही पेश किया जाता था लेकिन उसके बाद इसे हिन्दी तथा अंग्रेजी दोनों भाषाओं में पेश करना शुरू कर दिया गया। 1950 तक बजट का मुद्रण राष्ट्रपति भवन में होता था किन्तु इसके लीक होने के बाद इसका मुद्रण दिल्ली की मिंटो रोड स्थित प्रेस में होने लगा और 1980 से वित्त मंत्रालय के अंदर सरकारी प्रेस में ही इसका मुद्रण होता है। 1947 से लेकर अब तक देश में 73 आम बजट, 14 अंतरिम बजट व 4 विशेष या मिनी बजट पेश किए जा चुके हैं। वैसे भारत में बजट पेश करने का सिलसिला 162 वर्ष पहले शुरू हुआ था, जब 7 अप्रैल 1860 को ईस्ट इंडिया कम्पनी से जुड़े स्कॉटिश अर्थशास्त्री व नेता जेम्स विल्सन ने ब्रिटिश साम्राज्ञी के समक्ष पहली बार भारत का बजट रखा था।

राष्ट्रीय उत्सव के नए आयाम

-डॉ. दिलीप अग्निहोत्री-

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी राष्ट्रीय पर्वों पर औपचारिकता के निर्वाह तक सीमित नहीं रहते। राष्ट्रीय चेतना से जनमानस को जोड़ते हैं। देश के सुदूर क्षेत्रों तक इस भावना का विस्तार करते हैं। गणतंत्र दिवस समारोह का एक हफ्ते तक विस्तार किया गया। इसमें राष्ट्र नायकों के स्मरण के अवसर समाहित किया गए। इसके पहले नरेंद्र मोदी ने आजादी का अमृत महोत्सव प्रारंभ किया था। इसे अनेक स्तरों के समारोहों से सजाया गया। राष्ट्रीय राजधानी से लेकर गांवों व जनजातीय इलाकों तक इसका प्रकाश पहुंचाया गया। इसमें राष्ट्रभाव के अनेक उपेक्षित प्रसंग उजागर हुए। इसके पहले नरेन्द्र मोदी पद्म सम्मानों को भी सुदूर क्षेत्रों तक पहुंचा चुके थे। देश में गुमनामी में रहते हुए भी अनेक लोग विलक्षण कार्य करते हैं। नरेन्द्र मोदी सरकार 'जहां ना पहुंचे रवि' कहावत के अनुरूप उन लोगों तक पहुंच गई। उनको पद्म सम्मान मिलने लगे। इसबार मन की बात में नरेंद्र मोदी ने ऐसे लोगों का उल्लेख किया। देश के सुदूर क्षेत्रों में अनेक लोग समाज सेवा के विलक्षण कार्य करते रहे हैं। कुछ वर्ष पहले तक सरकारों का ध्यान उनकी तरफ जाता नहीं था। नरेन्द्र मोदी ने प्रधानमंत्री बनते समय अपनी सरकार को गरीबों के प्रति समर्पित बताया था। अनेक सामाजिक, आर्थिक व लोक कल्याण के विषयों जैसे विचार पर अमल किया जा रहा है। इतना ही नहीं पिछले कुछ वर्षों से पद्म सम्मानों में भी यह परिलक्षित है। राष्ट्रपति भवन में पद्म सम्मान ग्रहण करने वाले वनवासी, ग्रामीण व अन्य निर्धन वर्ग के लोग भी मुख्यधारा में दिखाई देने लगे हैं। मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद पद्म पुरस्कारों में नया अध्याय जुड़ा है। इसमें गुमनाम समाजसेवकों, कलाकारों को भी शामिल किया गया। इस प्रकार यह प्रतिष्ठित पुरस्कार गांव ही नहीं वनवासी क्षेत्रों तक पहुंच गया है। इस संबध में पिछले कुछ वर्षों की पद्म पुरस्कार सूची देखना दिलचस्प है। अब पद्म सम्मान समारोह में अद्भुत दृश्य दिखाई देते हैं। अक्सर चित्र भी अपने में बहुत कुछ कह जाते हैं। जब कोई गरीब महिला राष्ट्रपति के सिर पर आशीर्वाद का हाथ रखती है, जब ऐसे ही किसी अन्य सम्मानित व्यक्ति से प्रधानमंत्री हाथ जोड़ बतियाते हैं। कुछ वर्ष पहले तक ऐसी कल्पना भी मुश्किल थी। अब परंपरा का रूप ले चुकी है। प्रतिवर्ष पद्म सम्मान वितरण के समय ऐसा ही दृश्य रहता है। ऐसा ही चित्र प्रयागराज कुंभ में देखने को मिला था, जिसमें प्रधानमंत्री सफाईकर्मियों के पैर धो रहे हैं। काशी में वह सफाई व अन्य कर्मियों पर पुष्प वर्षा करते हैं। देश के विभिन्न इलाकों में अनेक गुमनाम समाजसेवी हैं। जिन्होंने समाज के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। धन-दौलत, पद, यश, वैभव किसी की चाह नहीं थी। मीडिया या प्रचार से दूर रहे, गुमनामी में अपना कार्य करते रहे। पहले इनकी ओर शासन का ध्यान नहीं जाता था। कोई पहाड़ तोड़ कर अकेले ही सड़क बनाता रहा। शासन का ध्यान उधर गया होता तो उनका कार्य आसान हो गया होता। लेकिन हार नहीं मानी। पहाड़ तोड़ कर मार्ग बनाकर ही दम लिया। इसी प्रकार अनेक लोग अपने अपने ढंग से समाजसेवा में जुटे हुए हैं। नरेन्द्र मोदी ने ऐसे गुमनाम लोगों को पद्म सम्मान देने का निर्णय लिया था। अब प्रतिवर्ष ऐसे लोगों को सम्मान पुरस्कार देने की परंपरा शुरू हुई।। इस बार का राष्ट्रीय पर्व गणतंत्र दिवस पूरे देश में आजादी का अमृत महोत्सव के रूप में मनाया गया। सरकार ने तय किया है कि अब हर साल गणतंत्र दिवस का पर्व 23 से 30 जनवरी तक सप्ताह भर का होगा। समारोह 23 जनवरी को नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती से शुरू होकर 30 जनवरी को शहीद दिवस तक चलेंगे। राजपथ पर भारतीय वायुसेना के 75 विमान और हेलीकॉप्टर भव्य फ्लाईपास्ट किया था। यह आजादी के अमृत महोत्सव का शौर्य उद्घोष था। इंडिया गेट पर नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की डिजिटल प्रतिमा स्थापित की गई है। नरेंद्र मोदी ने कहा कि आजादी के अमृत महोत्सव में देश अपने राष्ट्रीय प्रतीकों को पुनर्प्रतिष्ठित कर रहा है। इंडिया गेट के समीप अमर जवान ज्योति और पास में ही नेशनल वॉर मेमोरियल पर प्रज्ज्वलित ज्योति को एक किया गया। विजय चौक पर आयोजित बीटिंग रिट्रीट समारोह में शनिवार को पहली बार भव्य ड्रोन शो ने आसमान को चकाचौंध कर दिया। इस शो में स्वदेशी तकनीक के जरिए तैयार किए गए एक हजार ड्रोन शामिल थे। आजादी का अमृत महोत्सव मनाने के लिए समारोह में कई नई धुनें जोड़ी गईं। इनमें हिंद की सेना और ऐ मेरे वतन के लोगों गीत भी शामिल था। नरेन्द्र मोदी की देश में लोकप्रियता एक बार फिर प्रमाणित हुई। उनकी एक बात पर देश के एक करोड़ बच्चों ने पत्र लिख दिए। आजादी के अमृत महोत्सव के दृष्टिगत एक करोड़ से अधिक बच्चों ने अपने मन की बात, पोस्टकार्ड के जरिये लिखकर भेजी है। मोदी ने मन की बात में भारतीय संस्कृति की व्यापकता का उल्लेख किया। कहा कि भारतीय संस्कृति अमेरिका कनाडा, दुबई, सिंगापुर, पश्चिमी यूरोप एवं जापान में बहुत लोकप्रिय है। भारतीय संस्कृति का लैटिन अमेरिका और दक्षिण अमेरिका में भी बड़ा आकर्षण है। अर्जेंटीना में हस्तिनापुर फाउंडेशन नामक एक संस्था है। यह फाउंडेशन अर्जेंटीना में भारतीय वैदिक परम्पराओं के प्रसार में जुटा है। हस्तिनापुर फाउंडेशन के 40 हजार से अधिक सदस्य हैं और अर्जेंटीना एवं अन्य लैटिन अमेरिकी देशों में इसकी करीब तीस शाखाएं हैं।

भाजपा को दिया अपनों ने झटका

-रमेश सर्राफ धमोरा-

पार्टी विद डिफरेंस की टैग लाइन के साथ राजनीति में खुद को अन्य सभी पार्टियों से अलग व श्रेष्ठ बताने वाली भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) इन दिनों अपनों द्वारा दिए जा रहे झटकों से उबर नहीं पा रही है। देश के पांच राज्यों उत्तर प्रदेश, पंजाब, उत्तराखंड, गोवा और मणिपुर में विधानसभा चुनाव की प्रक्रिया प्रारंभ हो चुकी है। पांचों प्रदेशों में चुनाव लड़ने वाले सभी राजनीतिक दलों द्वारा अपने-अपने प्रत्याशियों के नामों की घोषणा की जा रही है। इसी दौरान विभिन्न पार्टियों के नेताओं द्वारा दलबदल का खेल भी जोरों से चल रहा है। इस दौरान सबसे अधिक झटका भाजपा को लगा है। कुछ वर्षों पूर्व सत्ता के लालच में भाजपा में शामिल होकर सत्ता का सुख भोगने वाले नेता ऐन चुनाव के वक्त भाजपा छोड़कर दूसरे दलों में शामिल होने लगे हैं। भाजपा के बढ़ते जनाधार को देखकर दूसरे दलों के बहुत से ऐसे मौकापरस्त नेता जिनकी अपने दलों में दाल नहीं गल रही थी, वो सभी भाजपा में शामिल हो गए। भाजपा ने भी दूसरे दलों से आने वाले नेताओं को भरपूर उपकृत किया। उन्हें विधानसभा व लोकसभा का चुनाव भी लड़वाया तथा चुनाव जीतने पर उनको मंत्री भी बनाया। ऐसे में दलबदल कर पार्टी में आने वाले नेताओं के क्षेत्रों में वर्षों से भाजपा के लिए काम करने वाले पार्टी नेता

खुद को उपेक्षित महसूस करने लगे। दल-बदलू नेताओं को भाजपा में पूरी तरजीह मिली। इसका फायदा उठाकर उन्होंने जहां आर्थिक रूप से मजबूती प्राप्त की, वही पार्टी के पुराने कार्यकताओं को दरकिनार कर अपने समर्थकों को विभिन्न पदों पर बैठाया। इससे पार्टी के मूल कार्यकताओं में निराशा व्याप्त होने के कारण वह धीरे-धीरे मुख्यधारा से किनारे हो गए। लंबे समय तक सत्ता का दोहन करने के कारण अन्य दलों से भाजपा में आये बहुत से नेताओं पर भ्रष्टाचार के आरोप लगने लगे। उनके नाम के साथ कई तरह के विवाद जुड़ गए। ऐसे में चुनाव नजदीक आने पर जब उन्हें पार्टी में फिर से टिकट नहीं मिलने का अंदेशा हो गया तो उन्होंने अपने पद पर रहते ही भाजपा विरोधी किसी अन्य पार्टी में शामिल हो गए। इससे एक तो चुनाव के वक्त पार्टी छोड़ने से जहां भाजपा की हवा खराब हुई। वहीं, पार्टी के सामने एकाएक मजबूत प्रत्याशी खड़ा करना मुश्किल हो गया। दूसरे दलों से भाजपा में आए कई नेताओं ने तो पद पर रहते ही भाजपा को अलविदा कह कर पार्टी की किरकिरी भी कराई। 2014 के लोकसभा चुनाव से पहले कांग्रेस से भाजपा में आए नाना पटोले ने भाजपा टिकट पर प्रफुल्ल पटेल जैसे दिग्गज नेता को पराजित किया था। मगर तीन साल बाद ही उन्होंने भाजपा व संसद से इस्तीफा देकर कांग्रेस की सदस्यता ले ली थी। नाना पटोले के इस्तीफा देने के बाद भंडारा गोंदिया लोकसभा सीट पर हुए उपचुनाव में राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के मधुकर राव कुकड़े ने भाजपा प्रत्याशी हेमन्त श्रवण पटेल को हरा दिया था। उस उप चुनाव में राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के प्रत्याशी को कांग्रेस का भी समर्थन प्राप्त था। पिछले लोकसभा चुनाव के दौरान दूसरी पार्टी से भाजपा में आए उत्तर पश्चिम दिल्ली में सांसद उदित राज, उत्तर प्रदेश में बहराइच के सांसद रही सावित्रीबाई फुले, आजमगढ़ से पूर्व सांसद रमाकांत यादव, हिमाचल प्रदेश के सुखराम जैसे कई बड़े नेताओं ने भाजपा छोड़कर दूसरे दलों का दामन थाम लिया था।

जो कुछ वर्षों पूर्व ही दूसरी पार्टियों से भाजपा में आए थे। पश्चिम बंगाल में विधानसभा चुनाव से पूर्व मुकुल राय सहित बहुत से बड़े नेता भाजपा में शामिल हुए थे। सभी को बंगाल में भाजपा सरकार बनती दिख रही थी। इसलिए अपने लाभ के लिए भाजपा में आने वालों की बहुत बड़ी संख्या थी। मगर जैसे ही विधानसभा चुनाव के नतीजे आए और ममता बनर्जी भारी बहुमत से तीसरी बार मुख्यमंत्री बनी। उसके बाद भाजपा में दूसरे दलों से आए दलबदलू नेताओं ने पार्टी को छोड़ना शुरू कर दिया।

आदिवासी एवं हिन्दू धर्म

-एडवोकेट हिम्मत तावड़-

देश में सैकड़ों विभिन्न जनजातियां मौजूद हैं और उनके अपने रीति-रिवाज हैं लेकिन वे आदिवासी धार्मिक प्रथाओं और सनातन धर्म के बीच प्रकृति पूजा (पेड़, पशु, नदी, सूर्य, चंद्रमा आदि) की तरह कई समानताओं के कारण सनातन धर्म का अभिन्न अंग हैं। हमारे दक्षिणी राजस्थान के आदिवासियों में सनातन हिन्दू धर्म की अन्य जातियों की तरह समान गोत्र में विवाह नहीं होते हैं तथा हमारे गांवों में प्रत्येक गोत्र के अलग-अलग देवरा (मंदिर) मौजूद हैं। इनमें भैरूजी, चामुंडा मां, अम्बे मां, रामदेवजी, महादेवजी, गणेशजी एवं कुलदेवी की मूर्तियां स्थापित हैं। यहां वर्ष में एक बार रात्रि जागरण के बाद सुबह पूरी गोत्र के लोग शामिल होकर चूरमे का भोग लगाकर पूजा-पाठ करते हैं तथा भोपे (पुजारी) वहां आने वाले दर्शनार्थियों व मन्नत मांगने वालों को पूजा कराकर आशीर्वाद देते हैं। रात्रि जागरण के समय पाण्डव-कौरव, रामायण के प्रसंगों तथा देवी-देवताओं के आह्वान के गीत महिलाओं एवं पुरुषों के द्वारा श्रद्धा भाव से गोला बनाकर नृत्य करते हुए गाये जाते हैं। पूजा पद्धति भी हम आदिवासियों में हिन्दू धर्म की ही रीति-नीति से होती है। हमारे देवरों में आने वाले दर्शनाथियों के तिलक लगाये जाते हैं। वहां पर नारियल भी वधेरा (फोड़ा) जाता है, उस नारियल के साथ बिल्व पत्र को तोड़कर उसमें मखाने भी जाते हैं। इन सबको प्रसाद के रूप में भगवान का आशीर्वाद मानकर सभी में वितरित किया जाता है। बिल्व पत्र भगवान शंकर को भी चढ़ाया जाता है। हमारे 102 वर्ष के दादाजी मालाजी को मैंने पूछा कि ये देवरा (मंदिर) की पूजा हम कब से करते हैं? तो उन्होंने मुझे बताया कि अपना जो देवरा (मंदिर) है वह जादूओं के समय का है। इसका मतलब हम यह समझ सकते हैं कि ये पूजा पद्धति कई पीढ़ी दर पीढ़ी से चली आ रही है। हमारे यहां छोटे बच्चों के चोटी रखने की परम्परा है। जो बच्चा परिवार में बड़ा होता है उसकी चोटी रखी जाती है, जब वह विवाह करता है उससे पूर्व उसके मामा के वहां, गांव वाले व उसके माता-पिता उसको सजा-धजाकर गीत गाते हुए लेकर जाते हैं। वहां स्थानीय कुलदेवी की प्रतिमा के समक्ष मामा पूजा-अर्चना कर चोटी के बाल काट कर अर्पित करते हैं। उसके बाद ही लड़के का विवाह सम्पन्न होता है। इसे हम विवाह होने तक ब्रह्मचर्य के पालन से जोड़ सकते हैं। हम आदिवासियों में विवाह के समय दूल्हा या दुल्हन के घर हल्दी रस्म के समय अड़ोस-पड़ोस के लोगों को बुलाया जाता है। दूल्हा या दुल्हन की मां थाली में दीपक लेकर आगे होती है। दूल्हा या दुल्हन के ऊपर सफेद वस्त्र लोग आगे पीछे पकड़कर चलते हैं। पुरुष ढोल बजाते व महिलाएं गणेशजी के आवाहन के गीत गाते हुए खेत की तरफ जाते हैं। खेत की पवित्र मिट्टी का अगरबत्ती व दीपक से पूजन किया जाता है। उसके बाद उस पवित्र मिट्टी से गणेश बनाकर वापस आदर व श्रद्धा के साथ ढोल बजाते हुये घर पर लाकर गणपति स्थापना की जाती है।

चुनावी घोषणाओं से भरा बजट

-सिद्धार्थ शंकर-

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने संसद में पेश किए बजट में किसानों के लिए सौगातों का पिटारा खोला। बजट में सभी तबके के लोगों का ध्यान रखने की कोशिश की गई। पांच राज्यों में होने वाले विधानसभा चुनाव से पहले सरकार ने इस बजट में किसानों के लिए कई बड़ी घोषणाएं की। इसमें किसानों को डिजिटल सेवा देना, तिलहनों के उत्पादन को बढ़ावा देने का अभियान शुरू किया जाना शामिल है। इसके अलावा पांच नदियों को आपस में जोड़ा जाएगा, सिंचाई-पेयजल सुविधा बढ़ाने पर जोर दिया जाएगा। हालांकि, 12 करोड़ से अधिक किसानों की उम्मीदों को झटका लगा है। पीएम किसान के 12 करोड़ से अधिक किसानों को उम्मीद थी कि इस बार बजट में पीएम किसान की राशि कम से कम डेढ़ गुनी हो जाएगी, पर ऐसा नहीं हो सका। नौकरी-पेशा करने वाले लोगों को भी मायूसी हाथ लगी है। सीतारमण ने बजट 2022 में इनकम टैक्स को लेकर कोई भी घोषणा नहीं की। इससे इनकम टैक्स स्लैब में बदलाव और इनकम टैक्स रेट्स घटाए जाने की उम्मीद लगाए हुए आम लोगों को निराशा ही हाथ लगी है। वित्त मंत्री बजट में वर्क फ्रॉम होम डिडक्शन या स्टैंडर्ड डिडक्शन लिमिट में बढ़ोतरी से जुड़ी कोई भी घोषणा नहीं की और न ही स्टैंडर्ड डिडक्शन की लिमिट में कोई बदलाव किया गया है। बावजूद इसके बाजार ने बजट का दिल खोलकर स्वागत किया। बजट पेश होने के बाद शेयर बाजार में रौनक देखने को मिली। बजट भाषण के दौरान बैंकिंग स्टॉक में जबरदस्त तेजी रही। बजट भाषण के बाद सेंसेक्स करीब 750 अंक मजबूत होकर 58,780 अंक के पार कारोबार कर रहा था। बजट पर सरकार ने किसानों पर खास जोर दिया है। किसान आंदोलन के नुकसान से निपटने सरकार ने कोई कसर बाकी नहीं रखी। किसानों को डिजिटल सेवा देने, तिलहनों के उत्पादन को बढ़ावा देने, देशभर में गंगा के किनारे 5 किलोमीटर के दायरे में केमिकल फ्री नेचुरल फार्मिंग को बढ़ावा देने के ऐलान किए गए हैं। साल 2023 को सरकार ने मोटा अनाज वर्ष घोषित करने का फैसला लिया है। पिछले वर्ष मोटे अनाज को लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विस्तार से बात की थी। अब बजट में ऐलान किया गया है कि सरकार मोटे अनाज उत्पादों की राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय ब्रांडिंग पर जोर देगी। वहीं, वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने 44 हजार 605 करोड़ रुपए की लागत से केन-बेतवा लिंक परियोजना को शुरू करने का ऐलान किया है।

चुनौती बनती जा रही बढ़ती आर्थिक असमानता

-योगेश कुमार गोयल-

पिछले दिनों वीडियो कॉन्फ्रेंस के जरिये आयोजित विश्व आर्थिक मंच के दावोस एजेंडा शिखर सम्मेलन के दौरान पेश गैर सरकारी संगठन 'ऑक्सफैम' की रिपोर्ट 'इनइक्वलिटी किल्स' के अनुसार कोरोना महामारी के दौर में अमीर जहां और अमीर होते जा रहे हैं, वहीं गरीब और गरीब हो रहे हैं। रिपोर्ट के अनुसार महामारी के दौरान भारत के अरबपतियों की कुल सम्पत्ति बढ़कर दोगुने से अधिक हो गई और इस दौरान भारत में अरबपतियों की संख्या भी 39 फीसदी बढ़कर 142 हो गई है। देश के दस सर्वाधिक अमीर लोगों के पास इतनी सम्पत्ति है, जिससे पूरे ढाई दशकों तक देश के हर बच्चे को स्कूली शिक्षा और उच्च शिक्षा दी जा सकती है। आर्थिक असमानता पर आई इस रिपोर्ट के मुताबिक 142 भारतीय अरबपतियों के पास कुल 719 अरब अमेरिकी डॉलर यानी 53 लाख करोड़ रुपये से अधिक की सम्पत्ति है और देश के सबसे अमीर 98 लोगों की कुल सम्पत्ति भारत के 55.5 करोड़ सबसे गरीब लोगों की कुल सम्पत्ति के बराबर है। ऑक्सफैम की रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि महामारी के दौरान सबसे धनी 10 फीसदी लोगों ने राष्ट्रीय सम्पत्ति का 45 फीसदी हिस्सा हासिल किया, जबकि निचले स्तर की 50 फीसदी आबादी के हिस्से मात्र छह फीसदी राशि ही आई। रिपोर्ट में सरकार से राजस्व सृजन के प्राथमिक स्रोतों पर पुनर्विचार करने तथा कर प्रणाली के अधिक प्रगतिशील तरीकों को अपनाने का आग्रह करते हुए सुझाव दिया गया है कि इन अरबपतियों पर वार्षिक सम्पत्ति कर लगाने से प्रतिवर्ष 78.3 अरब अमेरिकी डॉलर मिलेंगे, जिससे सरकारी स्वास्थ्य बजट में 271 फीसदी बढ़ोतरी हो सकती है। कोरोना महामारी के इस दौर में एक ओर जहां करोड़ों लोगों के काम-धंधे चौपट हो गए, लाखों लोगों की नौकरियां छूट गई, अनेक लोगों के कारोबार घाटे में चले गए, वहीं कुछ ऐसे व्यवसायी हैं, जिन्हें इस महामारी ने पहले से कई गुना ज्यादा मालामाल कर दिया है। आंकड़े देखें तो भारत में मार्च 2020 से नवम्बर 2021 के बीच देश के 84 फीसदी परिवारों की कमाई में कमी आई और 4.6 करोड़ लोग तो अत्यंत गरीबी में चले गए। इस बीच जितने लोग पूरी दुनिया में गरीबी के दलदल में फंसे, भारत में यह संख्या उसकी आधी है। एक ओर जहां गरीबों की संख्या बड़ी तेजी से बढ़ी है, वहीं भारत में अब इतने अरबपति हो गए हैं, जितने फ्रांस, स्वीडन तथा स्विट्जरलैंड को मिलाकर भी नहीं हैं। अति धनाढ्य वर्ग तथा अत्यंत गरीबी में फंसे लोगों के बीच की चौड़ी होती खाई अन्य कमजोर वर्गों को भी प्रभावित कर रही है। आर्थिक विषमता चिंताजनक स्थिति तक बढ़ गई है और विश्व बैंक पहले ही चेतावनी दे चुका है कि दस करोड़ से ज्यादा लोग चरम गरीबी में धकेले जा सकते हैं। ऑक्सफैम की रिपोर्ट में पिछले साल भी स्पष्ट शब्दों में कहा गया था कि यदि कोरोना के कुबेरों से वसूली होती तो भुखमरी नहीं फैलती। विश्व के कई अन्य देशों के साथ भारत में भी बढ़ती आर्थिक असमानता काफी चिंताजनक है क्योंकि बढ़ती विषमता का दुष्प्रभाव देश के विकास और समाज पर दिखाई देता है और इससे कई तरह की सामाजिक और राजनीतिक विसंगतियां भी पैदा होती हैं। करीब दो साल पहले भी यह तथ्य सामने आया था कि भारत के केवल एक फीसदी सर्वाधिक अमीर लोगों के पास ही देश की कम आय वाली सत्तर फीसदी आबादी की तुलना में चार गुना से ज्यादा और देश के अरबपतियों के पास देश के कुल बजट से भी ज्यादा सम्पत्ति है। आज विश्व आर्थिक पत्रिका 'फोर्ब्स' की अरबपतियों की सूची में सौ से भी ज्यादा भारतीय हैं जबकि तीन दशक पहले तक इस सूची में एक भी भारतीय नाम नहीं होता था। हालांकि देश में अरबपतियों की संख्या बढ़ना प्रत्येक भारतीय के लिए गर्व की बात होनी चाहिए लेकिन गर्व भी तो तभी हो सकता है, जब इसी अनुपात में गरीबों की आर्थिक सेहत में भी सुधार हो। बहरहाल, ऑक्सफैम की रिपोर्ट में मांग की गई है कि धनी लोगों पर उच्च सम्पत्ति कर लगाते हुए श्रमिकों के लिए मजबूत संरक्षण का प्रबंध किया जाए।

राष्ट्रीय स्कीइंग चैंपियनशिप की तैयारियां पूरी

औली/जोशीमठ। विश्व विख्यात हिमक्रीड़ा केन्द्र औली में सोमवार 7 फरवरी से आयोजित होने वाली राष्ट्रीय स्कीइंग और स्नो बोर्ड चैम्पियनशिप की तैयारियां पूरी हो गई हैं। कोरोना काल के बाद औली में आयोजित होने वाली राष्ट्रीय स्तर की इस प्रतियोगिता को लेकर आयोजन समिति और शीतकालीन खेल प्रेमियों में खासा उत्साह है। चैम्पियनशिप में प्रतिभाग करने वाली टीमें देर सायं तक औली पहुंचेंगी।

जीएमवीएन द्वारा स्कीइंग स्लोप के दोनों ओर नेट (जाली) लगाने का कार्य पूरा कर लिया गया है। रोप वे प्रोजेक्ट की मशीनें एवरेस्ट, स्नो बीटर, व अन्य हल्की मशीनों द्वारा स्कीइंग की ढलानों को समतल किया जा रहा है। राष्ट्रीय स्तर की इस चैम्पियनशिप में विभिन्न प्रदेशों की 16 टीमें प्रतिभाग कर रही हैं।

राउंडग्लास अकादमी ने मशहूर टेनिस उपकरण ब्रांड बाबोला के साथ किया करार

मोहाली। राउंडग्लास स्पोर्ट्स की प्रमुख स्पोर्ट्स अकादमी, राउंडग्लास टेनिस अकादमी ने दुनिया के सबसे अधिक प्रतिष्ठित और आइकोनिक टेनिस उपकरण ब्रांडों में से एक, बाबोला के साथ तीन साल के करार की घोषणा की है। 1 जनवरी, 2022 से शुरू हुई साझेदारी अकादमी में सभी खिलाड़ियों और कोचों के लिए बाबोला प्रायोजक टेनिस उपकरण मुहैया कराएगी। इस साझेदारी का उद्देश्य भारतीय टेनिस के विकास का समर्थन करना है। साझेदारी के बारे में बात करते हुए, स्टैग इंटरनेशनल (बाबोला इंडिया) के बिजनेस हेड, मयूर वसंत ने कहा, "राउंडग्लास टेनिस अकादमी और बाबोला का साथ में हाथ मिलाने से मुझे काफी खुशी हुई है । भारत में टेनिस को विकसित करने और बढ़ावा देने में सहायता प्रदान करना हमारे प्रमुख लक्ष्यों में से एक है और हमें उम्मीद है कि इस साझेदारी के माध्यम से, हम अकादमी से भविष्य की प्रतिभाओं को खोजने में और उन्हें विकसित करने में मदद कर सकते हैं जो एटीपी और डब्ल्यूटीए सर्किट पर अपनी पहचान बना सेकेंगे।" राउंडग्लास स्पोर्ट्स के मार्केटिंग लीड, हृषिकेश शेंडे ने कहा, "हम इस बात को लेकर काफी उत्साहीत हैं कि दुनिया के सबसे प्रतिष्ठित टेनिस ब्रांडों में से एक बाबोला हमारे साथ जुड़ रहा है। राउंडग्लास टेनिस अकादमी का लक्ष्य उभरते हुए एथलीटों को विश्व स्तरीय इंफ्रास्ट्रक्चर, कोचिंग और उपकरण प्रदान करना है, और उनकी काबिलियत को निखारने में सहायता करना है।"

बता दें कि 1875 में फ्रांस के ल्यों में स्थापित हुई बाबोला दुनिया की सबसे पुरानी रैकेट स्पोर्ट्स कंपनियों में से एक है। दुनिया के कुछ सर्वश्रेष्ठ टेनिस खिलाड़ी जैसे राफेल नडाल, डोमिनिक थिएम और जेनिफर ब्रैडी, के साथ-साथ एटीपी और डब्ल्यूटीए के कई शीर्ष खिलाड़ी बाबोला से जुड़े हुए हैं।

ईशान किशन मेरे साथ पारी का आगाज करेंगे क्योंकि वही एकमात्र विकल्प उपलब्ध हैं : रोहित शर्मा

अहमदाबाद। भारत के नये वनडे कप्तान रोहित शर्मा ने शनिवार को कहा कि वेस्टइंडीज के खिलाफ पहले एकदिवसीय में ईशान किशन उनके साथ पारी का आगाज करेंगे क्योंकि टीम में इस युवा के अलावा कोई विकल्प उपलब्ध नहीं हैं और मयंक अग्रवाल भी अपना अनिवार्य पृथकवास पूरा कर रहे हैं। शिखर धवन और रुतुराज गायकवाड़ कोविड-19 पॉजिटिव आये थे और अब पृथकवास में हैं जिसके बाद किशन को वनडे टीम में शामिल किया गया था। रोहित ने श्रृंखला के शुरूआती मैच की पूर्व संध्या पर कहा, हमारे पास ईशान किशन एकमात्र विकल्प हैं और वह मेरे साथ पारी का आगाज करेंगे। उन्होंने कहा, मयंक को टीम में शामिल किया गया था, पर वह अब भी पृथकवास में हैं। वह देर से टीम से जुड़े और हमारे कुछ नियम हैं। अगर कोई यात्रा करता है तो हम उसे तीन दिन के अनिवार्य पृथकवास में रखते हैं। उनका पृथकवास अभी पूरा नहीं हुआ है इसलिये ईशान पारी का आगाज करेंगे। रोहित ने कहा, अगर कोई चोटिल नहीं होता है क्योंकि हमें आज भी ट्रेनिंग करनी है और अभी ऐसा कुछ नहीं है।

1000वां वनडे : मध्यक्रम पर फोकस, रोहित-द्रविड़ के साथ भारत की निगाहें वनडे में नयी शुरूआत पर

अहमदाबाद। नये कप्तान रोहित शर्मा की मौजूदगी में भारतीय टीम रविवार को यहां वेस्टइंडीज के खिलाफ शुरू हो रही वनडे श्रृंखला के साथ नये युग में प्रवेश करेगी जिसमें वह अपनी पुरानी मध्यक्रम की समस्या से निजात पाने की कोशिश करेगी। श्रृंखला का शुरूआती मैच भारत के लिये ऐतिहासिक 1000वां वनडे होगा। भारतीय टीम 2023 विश्व कप के लिये अपनी तैयारियां अभी से शुरू करना चाहेगी जिसमें वह 2015 और 2019 में ट्राफी हासिल नहीं कर सकी थी और अब वह अपनी रणनीति में वास्तव में बदलाव करना चाहेगी। कमजोर दक्षिण अफ्रीकी टीम के खिलाफ उसकी सरजमीं पर हार झेलने के बाद भारतीय टीम अब नये वनडे कप्तान रोहित के साथ जीत की लय में आना चाहेगी जिसमें उनके साथ कोच राहुल द्रविड़ भी शामिल हैं। रोहित-द्रविड़ की जोड़ी अगले कुछ महीनों में 50 ओवर प्रारूप के लिये भारतीय टीम की रणनीति तय करेगी क्योंकि यह स्पष्ट हो गया है कि सुधार के लिये थोड़े फेरबदल की जरूरत है। इसलिये रविवार से शुरू हो रही श्रृंखला जूझ रहे मध्यक्रम को सही करने पर ध्यान लगाने के लिये बिलकुल सही मंच होगी। पहले तो कप्तान रोहित को उदाहरण पेश करके अगुआई करनी होगी जो सफेद गेंद के बेहतरीन बल्लेबाज हैं। पहले मैच में केएल राहुल की अनुपस्थिति और अन्य विशेषज्ञ सलामी बल्लेबाज शिखर धवन और रूतुराज गायकवाड़ के कोविड-19 पॉजिटिव पाये जाने के बाद ईशान किशन रोहित के साथ पारी का आगाज करेंगे जिन्हें टीम में शामिल किया गया है। इसके लिए मयंक अग्रवाल भी विकल्प है लेकिन पृथकवास में होने के कारण बिना ट्रेनिंग सत्र के उन्हें मैच में उतारना जोखिम भरा हो सकता है। अगर रोहित लय में हों तो किसी भी दिन किसी भी तरह के गेंदबाजी आक्रमण की धज्जियां उड़ा सकते हैं और वेस्टइंडीज का आक्रमण भी अपवाद नहीं होगा।दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ श्रृंखला में ऋषभ पंत की दूसरे मैच में पारी को छोड़ दें तो तीनों मुकाबलों में मध्यक्रम पूरी तरह से चरमरा गया और अब जरूरत है कि मध्यक्रम में प्रभावशाली खिलाड़ी मौजूद रहें। श्रृंखला के लिये श्रेयस अय्यर उपलब्ध नहीं हैं तो आक्रामक सूर्यकुमार यादव और साथ ही दीपक हुड्डा के पास भी राष्ट्रीय चयनकताओं को लुभाने का मौका है। इन दोनों के अलावा काफी कुछ निर्भर करेगा कि विराट कोहली कैसा प्रदर्शन करते हैं। भारत ने दक्षिण अफ्रीका में मध्यक्रम में वेंकटेश अय्यर को आजमाया था लेकिन यह प्रयोग सफल नहीं रहा। गेंदबाजी की बात की जाये तो बायें हाथ के कलाई के स्पिनर कुलदीप यादव वनडे टीम में वापस आ चुके हैं और पूरी उम्मीद है कि वह अपने अनुभवी जोड़ीदार युजवेंद्र चहल के साथ अंतिम एकादश में शामिल होंगे।

आईएसएल : एक-दूसरे को जीत की पटरी से उतारने के लिए भिड़ेंगे जमशेदपुर और बेंगलुरू

बैम्बोलिन। हीरो इंडियन सुपर लीग (आईएसएल) 2021-22 की अंक तालिका में शीर्ष चार पर मौजूद दो टीमें बेंगलुरू एफसी और जमशेदपुर एफसी आज बैम्बोलिन स्थित जीएमसी एथलेटिक स्टेडियम में जब आपस में भिड़ेंगी, तो दोनों एक-दूसरे को जीत से राह से उतरने की कोशिश करेंगी। जमशेदपुर ने दो हफ्तों में अपने पिछले तीनों मैच जीते हैं और वो लीग लीडर हैदराबाद एफसी से चार अंक पीछे रहकर दूसरे स्थान पर है लेकिन उसके पास दो अतिरिक्त मैच हैं। उसने 12 मैचों में छह जीत और चार ड्रा से 22 अंक बटोरे हैं। जीत उसे हैदराबाद के करीब ले जाएगी लेकिन उसका सामना बेंगलुरू के रूप में ऐसे प्रतिद्वंद्वी से होगा, जिसने फॉर्म वापस पा ली है।

ब्लूज ने इस सीजन में पहली बार लगातार दो मैच जीते हैं। उन्होंने पिछले मुकाबले में केरला ब्लास्टर्स को हराकर शीर्ष चार में पहली बार स्थान बनाया है। बेंगलुरू 14 मैचों में पांच जीत और पांच ड्रा से 20 अंक लेकर तालिका में चौथे स्थान पर है। गुरुवार को जन्मदिन मना चुके गोलकीपर गुरप्रीत सिंह संधू पूर्व चैम्पियनों के लिए गोलपोस्ट के आगे अडिग नजर आ रहे हैं। बेंगलुरू के इस गोलची ने सात मैचों में से चार क्लीन शीट रखी है। इन चार क्लीन शीट में से तीन तो पिछले चार मैचों में आई है। इस दौरान उन्होंने मात्र एक ही गोल खाया है। डिफेंडर रोशन सिंह नाओरेम ने पिछले मैच में अपना पहला हीरो आईएसएल गोल किया था और वह इस सीजन में बढ़िया खेलते नजर आ रहे हैं। वह रक्षण के अलावा हमलों में प्रभाव डाल रहे हैं। रोशन की तुलना में तीन डिफेंडरों ने इस सीजन में अधिक गोल योगदान दिया है। जमशेदपुर के बारे में पूछने पर बेंगलुरू के कोच मार्को पेजैउओली ने कहा, जमशेदपुर एक मजबूत टीम है, उनके पास (डैनियल) चीमा के रूप में एक नया खिलाड़ी है जो बहुत गति लाता है, और बहुत सारे गोल कर सकता है। हमारा पिछला मैच एक अच्छा व कड़ा था। मुझे लगता है कि यह निश्चित रूप से एक कठिन मैच होगा, लेकिन क्वारेंटाइन के बाद हमने सात दिनों में तीन मैच खेले हैं। हम अभी भी अपने सर्वश्रेष्ठ स्वरूप में वापस नहीं आए हैं और यह कुछ ऐसा है जिस पर हम काम करना चाहते हैं।

अंडर-19 विश्व कप जीतने वाली भारतीय टीम के प्रत्येक खिलाड़ियों को 40 लाख रुपए देगी बीसीसीआई

नई दिल्ली। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने अंडर-19 पुरुष विश्व कप 2022 का खिताब जीतने पर भारतीय टीम को बधाई दी है। साथ ही बीसीसीआई ने टीम के प्रत्येक खिलाड़ियों को 40 लाख रूपए नकद देने की घोषणा की है। इसके अलावा सपोर्ट स्टाफ के प्रत्येक सदस्यों को भी 25 लाख रुपए बतौर पुरस्कार दिये जाएंगे। बता दें कि भारत ने अंडर-19 विश्व कप के फाइनल में इंग्लैंड को चार विकेट से हरा दिया और पांचवीं बार खिताब अपने नाम किया। इससे पहले टीम इंडिया 2000, 2008, 2012 और 2018 में विश्व कप जीत चुकी है। वहीं, 2006, 2016 और 2020 में भारतीय टीम को फाइनल में हार का सामना करना पड़ा था। खिताबी मुकाबले में टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए इंग्लैंड की टीम 44.5 ओवर में 189 रन पर ऑलआउट हो गई। जेम्स रियू ने

सबसे ज्यादा 95 रन बनाए। वहीं, भारत की ओर से राज बावा ने पांच और रवि कुमार ने चार विकेट झटके। जवाब में भारत ने 47.4 ओवर में छह विकेट गंवाकर लक्ष्य हासिल कर लिया। भारत की ओर से निशांत सिंधू 50 रन बनाकर नाबाद रहे। वहीं, शेख रशीद ने भी 50 रन की पारी खेली। दिनेश बाना ने 48वें ओवर में लगातार दो छक्के लगाकर टीम इंडिया को जीत दिलाई। बीसीसीआई अध्यक्ष सौरव गांगुली ने भारतीय टीम को बधाई देते हुए कहा, ह्लहमें भारत की अंडर-19 टीम को पांचवां विश्व कप जीतने के लिए बधाई देता हूं। वे सभी विभागों में प्रभावशाली थे। उनका ऑन-फील्ड प्रदर्शन शानदार था, टीम ने कई खिलाड़ियों के संक्रमित होने के बावजूद मजबूती से वापसी करने के लिए धैर्य, दृढ़ संकल्प और साहस दिखाया। मैंमुख्य कोच हृषिकेश कानितकर के साथ उनके कोचिंग ग्रुप के सदस्यों, सहयोगी स्टाफ और वीवीएस लक्ष्मण (राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी में क्रिकेट हेड) द्वारा किए गए प्रयासों की भी सराहना करता हूं, - जिस तरह से उन्होंने टीम का मार्गदर्शन किया वह बेहतरीन था। गांगुली ने आगे कहा, ह्लचयनकताओं ने क्रिकेटरों के व्यापक पूल में से सही टीम चुनने में बहुत अच्छा काम किया है। लड़कों के आगे उनका करियर लंबा है और मैं उन्हें शुभकामनाएं देता हूं। बीसीसीआई सचिव जय शाह ने कहा, ह्लमैं इस अवसर पर अपनी विजयी भारत की अंडर-19 टीम को शुभकामनाएं देता हूं। टीम ने मैदान पर अपार कौशल का प्रदर्शन किया और कोविड के प्रकोप के बीच साहस दिखाया। अंडर-19 विश्व कप के इतिहास में भारत सबसे सफल पक्ष है और पांचवां खिताब हमारे आयु वर्ग के क्रिकेटरों के लिए हमारे पास मौजूद मजबूत प्रणाली और संरचना का एक वसीयतनामा है।

बेंगलुरु बुल्स और दबंग दिल्ली ने खेला टाई

बेंगलुरु। प्रो कबड्डी लीग में शुक्रवार की रात तीन मैच खेले गए। लीग के 92वें मुकाबले में हरियाणा स्टीलर्स ने बंगाल वारियर्स को हराते हुए अंक तालिका में चौथा स्थान हासिल कर लिया है। दूसरे मुकाबले में बेंगलुरु बुल्स और दबंग दिल्ली ने टाई खेला है। टाई के बावजूद दिल्ली पहले स्थान पर आ गई है। दिन के आखिरी मैच में पटना पाइरेट्स ने गुजरात जायंट्स को हराया है।

हरियाणा बनाम बंगाल

बंगाल बनाम हरियाणा मुकाबले के पहले हाफ में दोनों टीमें 19-19 से बराबरी पर रही थीं। हाफ खत्म होने से चार मिनट पहले ही बंगाल की टीम ऑल आउट हुई थी। दूसरे हाफ में बंगाल को दो बार और ऑल आउट करके हरियाणा ने मैच अपने नाम किया। हरियाणा की डिफेंस ने

14 प्वाइंट लिए तो वहीं बंगाल की डिफेंस को केवल चार प्वाइंट मिले। रेडिंग में बंगाल ने हरियाणा से तीन प्वाइंट अधिक लिए थे। मनिंदर सिंह ने पहले हाफ में सबसे अधिक नौ रेड प्वाइंट और मैच में सबसे अधिक 13 प्वाइंट लिए। हरियाणा के लिए तीन डिफेंडर्स ने तीन या उससे अधिक टैकल प्वाइंट लिए।

दिल्ली बनाम बेंगलुरु

बेंगलुरु बनाम दिल्ली मुकाबले के पहले हाफ में दिल्ली के पास चार प्वाइंट की बढ़त थी। नवीन कुमार ने इसमें सबसे अधिक सात अधिक रेड प्वाइंट लिए थे। बेंगलुरु पहले हाफ में एक बार ऑल आउट हुई थी। दूसरे हाफ में बेंगलुरु ने वापसी की और दिल्ली को ऑल आउट देकर एक समय बढ़त ले ली थी, लेकिन अंतिम दो रेड में दिल्ली ने वापसी करते हुए मैच को टाई करा लिया। पवन सहरावत ने मैच में सबसे अधिक 16 रेड प्वाइंट लेकर इस सीजन का 13वां सुपर-10 लगाया है। नवीन ने भी आठवां सुपर-10 पूरा करते हुए कुल 13 रेड प्वाइंट लिए।

गुजरात बनाम पटना

गुजरात बनाम पटना मुकाबले में ऑल आउट होने के बाद पटना ने वापसी की और गुजरात को ऑल आउट करके पहले हाफ में दो प्वाइंट की बढ़त ली थी। दूसरे हाफ में चार मिनट का खेल ही हुआ था कि गुमान ने पांच प्वाइंट की रेड लगाकर गुजरात को दोबारा ऑल आउट करके पटना को नौ प्वाइंट की बढ़त दिलाई।

अल्वेरो वाजकुएज ने दिखाया फिसड्डी नॉर्थईस्ट यूनाइटेड को ब्लास्टर्स का दम

वास्को। अंतिम 20 मिनट तक दस खिलाड़ियों से खेलने के बावजूद केरला ब्लास्टर्स ने हीरो इंडियन सुपर लीग (आईएसएल) 2021-22 के लीग मुकाबले में फिसड्डी नॉर्थईस्ट यूनाइटेड को 2-1 से हरा दिया। शुक्रवार को वास्को डे गामा स्थित तिलक मैदान स्टेडियम में खेले गए मुकाबले में गजब का गोल करने के लिए अल्वेरो वाजकुएज को हीरो ऑफ द मैच अवार्ड से नवाजा गया। उनका यह गोल निर्णायक रहा।अपनी छठवीं जीत से केरला 12 मैचों में 23 अंक लेकर तालिका में तीसरे से दूसरे स्थान पर पहुंच गई है। कोच इवान वुकोमैनोविक की टीम ने छह मैच जीते हैं और पांच ड्रा खेले हैं। वहीं, अपनी दसवीं हार के बाद नॉर्थईस्ट यूनाइटेड तालिका में सबसे निचले 11वें स्थान बरकरार है। कोच खालिद जमील की टीम 16 मैचों में दो जीत और चार ड्रा से मात्र दस अंक ही जुटा सकी है। पहला हाफ गोलरहित रहने के बाद मैच का पहला गोल 62वें मिनट में आया, जब जोर्गे डियाज के हैडर से केरला ब्लास्टर्स 1-0 से आगे हो गए। बाएं फ्लैंक से निशु कुमार ने एक फ्लोटेड क्रॉस सेकेंड पोस्ट की तरफ डाला, जिस पर हरमनजोत खाबरा ने हैडर क्रॉस डालते हुए गेंद हवा में जोर्गे की तरफ खेली और अर्जेंटीना के स्ट्राइकर ने हैडर करके गोलकर दिया। नॉर्थईस्ट यूनाइटेड के गोलकीपर सुभाशीष रॉय को इसे रोकने का कोई अवसर नहीं मिला। 70वें मिनट में आयुश अधिकारी को मैच में दूसरे पीला कार्ड मिलने कारण मैदान छोड़ने पर मजबूर होना पड़ा और केरला को झटका लगा। ब्लास्टर्स को मैच के शेष समय 10 खिलाड़ियों से खेलना पड़ा। रैफरी प्रतीक मंडल ने मध्यांतर के ठीक बाद 47वें मिनट में इस डिफेंसिव मिडफील्डर को पहला पीला कार्ड दिखाया था। 82वें मिनट में अल्वेरो वाजकुएज ने बेहतरीन गोल करके केरला ब्लास्टर्स की बढ़त को 2-0 कर दिया। उन्होंने अपने हाफ में नॉर्थईस्ट यूनाइटेड के डिफेंडर मशहूर शरीफ का पास बीच में ही छीनते हुए लम्बी दूरी से राइट फुटर शॉट लगाया और गेंद गोलकीपर सुभाशीष रॉय के आगे टिप्पा खाने के बाद गोलपोस्ट के अंदर चली गई। स्पेनिश फॉरवर्ड ने अपने विपक्षी गोलकीपर को दूर से ही ऑफ द लाइन देख लिया था और फिर बेहतरीन प्रयास किया, जिसे सुभाशीष तमाम प्रयास के बावजूद गेंद को नहीं रोक सके। पांच मिनट के स्टॉपेज टाइम 90+5वें मिनट में डिफेंडर मोहम्मद इरशाद ने नॉर्थईस्ट यूनाइटेड के लिए सांत्वना गोल दागा।

लैंगर ने आस्ट्रेलिया पुरुष क्रिकेट टीम के कोच पद इस्तीफा दिया

मेलबर्न। सीनियर खिलाड़ियों से अपनी कठोर कोचिंग शैली की लगातार शिकायत झेलने वाले आस्ट्रेलिया पुरुष टीम के कोच जस्टिन लैंगर ने अपने पद से शनिवार को इस्तीफा दे दिया।

समझा जा रहा है कि खिलाड़ियों की शिकायत के बाद भी लैंगर क्रिकेट आस्ट्रेलिया (सीए) ह्यबोर्ड ऑफ डायरेक्टर्सह्ल के साथ किसी तरह के समझौते के लिए तैयार नहीं थे।

लैंगर की प्रबंधन कंपनी डीएसईजी के एक बयान में यह घोषणा की गयी। जब यह घोषणा की गई उस समय लैंगर मेलबर्न से अपने गृहनगर पर्थ के लिए उड़ान भर रहे थे।

बयान के मुताबिक, डीएसईजी पुष्टि करता है कि हमारे क्लाइंट जस्टिन लैंगर ने आज सुबह आस्ट्रेलियाई पुरुष क्रिकेट टीम के कोच के रूप में अपना इस्तीफा दे दिया है।

बयान के मुताबिक, उन्होंने कल शाम क्रिकेट आस्ट्रेलिया के साथ बैठक के बाद इस्तीफा दे दिया। उनका इस्तीफा तत्काल प्रभाव से लागू हो गया है।

उनका चार साल का कार्यकाल इस साल जून के महीने तक प्रभावी था। कार्यकाल को आगे बढ़ाने को लेकर कई सप्ताह के मंथन के बाद क्रिकेट आस्ट्रेलिया बोर्ड ने शुक्रवार को 51 वर्षीय इस पूर्व खिलाड़ी के भविष्य पर चर्चा करने के लिए बैठक की थी।

क्रिकेट आस्ट्रेलिया ने एक बयान में कहा कि लैंगर को उनके मौजूदा अनुबंध के लिए एक अल्पकालिक विस्तार की पेशकश की गई थी, लेकिन यह दुखद है कि उन्होंने इसे स्वीकार नहीं करने का विकल्प चुना है।

उसने यह भी कहा कि सहायक कोच एंड्रयू मैकडोनाल्ड को अंतरिम मुख्य कोच नियुक्त किया गया है।

आस्ट्रेलिया के पूर्व कप्तान और लैंगर के करीबी दोस्त रिकी पोंटिंग ने आस्ट्रेलियाई ब्रॉडकास्टिंग कॉर्प रेडियो से कहा कि उनका मानना है कि लैंगर को उनके पद से हटाया गया है और यह देश के क्रिकेट के लिए वास्तव में दुखद दिन है।

पोंटिंग ने इस स्थिति को शर्मनाक करार दिया।

पिछले कई महीनों में आस्ट्रेलियाई मीडिया में आई कई रिपोर्ट में कहा गया है कि लैंगर की कठोर कोचिंग शैली के कारण आस्ट्रेलिया के वरिष्ठ खिलाड़ियों ने सीए के अधिकारियों से शिकायत की थी। कप्तान पैट कमिंस ने भी शुक्रवार को एक रेडियो साक्षात्कार के दौरान लैंगर का खुलकर समर्थन नहीं किया था। उन्होंने कहा कि लैंगर की स्थिति का आकलन करना जरूरी है।

लैंगर के कोच रहते टीम ने नवंबर में संयुक्त अरब अमीरात में टी20 विश्व कप में अप्रत्याशित जीत दर्ज की। आस्ट्रेलिया ने इसके बाद घरेलू सरजमीं पर एशेज श्रृंखला में इंग्लैंड को 4-0 के बड़े अंतर से मात दी। क्रिकेट आस्ट्रेलिया ने कहा कि अगर लैंगर का अनुबंध विस्तार प्रस्ताव स्वीकार कर लिया तो वह साल के अंत में आस्ट्रेलिया में अपने टी20 विश्व कप खिताब की रक्षा करने में आस्ट्रेलिया की मदद करने के लिए प्रभारी बने रहेंगे।

बायें हाथ के सलामी बल्लेबाज लैंगर ने खिलाड़ी के तौर पर आस्ट्रेलिया के लिए 105 टेस्ट में 23 शतक और 30 अर्धशतक की मदद से 7,696 रन बनाये है। उन्हें और मैथ्यू हेडन को इस सदी के पहले दशक में सबसे सफल सलामी जोड़ियों में से एक माना जाता है।

आईसीसी अंडर-19 विश्व कप : आस्ट्रेलिया ने अफगानिस्तान को हराकर तीसरा स्थान हासिल किया

ओसबोर्न (एंटीगा)। आस्ट्रेलिया ने निवेतन राधाकृष्णन के हरफनमौला प्रदर्शन से अफगानिस्तान पर दो विकेट की जीत से आईसीसी अंडर-19 विश्व कप में तीसरा स्थान हासिल किया। आल राउंडर राधाकृष्णन ने 31 रन देकर तीन विकेट हासिल कर अफगानिस्तान को 201 रन पर समेटने में अहम भूमिका निभायी और फिर उन्होंने लक्ष्य का पीछा करते हुए अर्धशतकीय पारी खेली। आस्ट्रेलिया को हालांकि लक्ष्य का पीछा करने में थोड़ा पसीना बहाना पड़ा लेकिन अंत में उसने पांच गेंद रहते जीत हासिल की।

अफगानिस्तान को टूर्नामेंट के इस चरण में अपने पिछले सर्वश्रेष्ठ (2018 में चौथे स्थान) नतीजे से बेहतर करने की उम्मीद थी। उसने टॉस जीतकर बल्लेबाजी का फैसला किया। लेकिन विलियम साल्जमैन (43 रन देकर तीन विकेट) ने नानगेयालिया खारोटे और अल्लाह नूर के विकेट झटककर उसका स्कोर दो विकेट पर 15 रन कर दिया।

मोहम्मद इशाक (34) और कप्तान सुलीमान शफी (37) ने संभलकर खेलते हुए 70 रन जोड़े। साल्जमैन ने इशाक को रन आउट किया जिसके तीन गेंद बाद शफी को राधाकृष्णन ने आउट किया।

इजाज अहमद अहमदजई एक छोर पर डटे रहे और उन्होंने 81 रन की पारी खेली, पर दूसरे छोर पर विकेट गिरना जारी रहा। वह आउट होने वाले नौवें खिलाड़ी रहे जिन्हें साल्जमैन ने 201 के स्कोर पर अपना तीसरा शिकार बनाया।

कप्तान कूपर कोनोली (30 रन देकर दो विकेट) ने अंतिम ओवर में अपना दूसरा विकेट झटका जिससे आस्ट्रेलिया को जीत के लिये 202 रन का लक्ष्य मिला।

कैम्पबेल केलावे (51) और टीगुए विली (13) ने मिलकर पहले विकेट के लिये अर्धशतकीय साझेदारी निभायी। पर नानगेयालिया ने विली की पारी का अंत किया जिसके बाद राधाकृष्णन क्रीज पर उतरे।

भारतीय क्रिकेट टीम ने बांह पर काली पट्टी बांधकर लता मंगेशकर को दी श्रद्धांजलि

अहमदाबाद। वेस्टइंडीज के खिलाफ यहां नरेंद्र मोदी स्टेडियम में खेले जा रहे पहले एकदिवसीय मैच में भारतीय खिलाड़ी महान गायिका लता मंगेशकर को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए बांह पर काली पट्टी बांधकर मैदान पर उतरे।

भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने ट्विट किया, "भारत रत्न लता मंगेशकर जी को श्रद्धांजलि देने के लिए भारतीय क्रिकेट टीम आज बांह पर काली पट्टी बांधे हुए है। लता जी रविवार की सुबह अपने स्वर्गीय निवास के लिए निकलीं। संगीत की रानी, लता दीदी को क्रिकेट से प्यार था, उन्होंने हमेशा क्रिकेट और टीम इंडिया का समर्थन किया।" "भारत रत्न" लता मंगेशकर का रविवार को 92 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उन्हें 8 जनवरी कोरोना और निमोनिया से संक्रमित होने पर मुंबई के ब्रीच कैंडी अस्पताल में भर्ती

कराया गया था। वह कोरोना संक्रमण से उबर चुकीं थी, हालांकि शनिवार को स्थिति खराब होने के बाद उन्हें वेंटिलेटर सपोर्ट पर रखा गया था।

लता मंगेशकर की याद में दो दिवसीय राष्ट्रीय शोक की घोषणा की गई है। सम्मान के तौर पर दो दिनों तक राष्ट्रीय ध्वज आधा झुका रहेगा और राजकीय सम्मान के साथ उनका अंतिम संस्कार किया जाएगा।

अमेरिका में कोरोना से मरने वालों की संख्या पहुंची नौ लाख के पार

वाशिंगटन। अमेरिका में वैश्विक महामारी कोरोना वायरस से मरने वालों की संख्या नौ लाख के पार पहुंच गयी है।

जॉन हॉपकिंस यूनिवर्सिटी की ओर शुक्रवार दोपहर में जारी आंकड़ों के मुताबिक अमेरिका में कोविड-19 के कारण 9,00,334 लोगों की मौत हो चुकी है तथा 7.60 करोड़ से अधिक लोग अब तक इसकी चपेट में आ चुके हैं।

उल्लेखनीय है कि दिसंबर महीने के मध्य में अमेरिका में कोरोना से मरने वालों की संख्या आठ लाख के पार पहुंची थी। इस तरह से यहां दो महीने से कम समय में एक लाख लोगों ने इस महामारी के कारण जान गंवाई है।

ब्राजील में कोरोना 1,84,311 नए मामले

साओ पाउलो। ब्राजील में पिछले 24 घंटों के दौरान कोरोना वायरस के 1,84,311 नए मामले दर्ज किये गये तथा 493 मरीजों की मौत हो गयी। इसके साथ ही यहां पर कुल संक्रमितों की संख्या 2, 6,275,831 तथा मृतकों की संख्या 6, 30,494 हो गयी। स्वास्थ्य सचिवों की राष्ट्रीय परिषद ने बताया कि दक्षिण अमेरिकी देश ब्राजील में कोरोना के ओमिक्रॉन वैरिएंट की वजह से इस संक्रमण की नई लहर पिछले दिसंबर महीने में आई। परिषद ने बताया कि देश में कोरोना वायरस से बचाव के लिए चलाए जा रहे टीकाकरण अभियान के तहत 40.70 करोड़ टीके राज्यों, नगर पालिकाओं तथा संघीय जिला को वितरित किये जा चुके हैं। इनमें से 35.90 करोड़ टीके लगाए जा चुके हैं। उल्लेखनीय है कि कोविड-19 से होने वाली मौते के मामले में ब्राजील अमेरिका के बाद दूसरे नंबर पर है। वहीं इस संक्रमण के मामले में यह अमेरिका तथा भारत के बाद तीसरे नंबर पर है।

पेरू में विमान दुर्घटना, सात की मौत

लीमा। पेरू के नाजका रेगिस्तान में पर्यटकों को लेकर जा रहा एक विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया, जिसके कारण सात लोगों की मौत हो गई है। आरपीपी न्यूज चैनल के मुताबिक दुर्घटना के समय विमान पर्यटकों को नाजका लाइन्स दिखाने के लिए लेकर जा रहा था। नाजका लाइन्स दुनियाभर में विशाल भू-आकृति के लिए मशहूर है, जिसे एक जेट से सबसे अच्छे तरीके से देखा जा सकता है।

दुर्घटनाग्रस्त विमान में नीदरलैंड और चिली के नागरिक सवार थे। अभी तक हादसे की वजहों का पता नहीं चल पाया है।

अमेरिका ने मास्को में डीडब्ल्यू के दफ्तर को बंद कराए जाने के फैसले की निंदा की

वाशिंगटन। अमेरिका ने जर्मनी में रूस के आरटी डीई चैनल के प्रसारण को रोके जाने के विरोध में जर्मनी मीडिया कंपनी डॉयचे वेले (डीडब्ल्यू) के मास्को स्थित ब्यूरो दफ्तर को बंद करने के रूस के फैसले की निंदा किया है।

अमेरिका के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता नेड प्राइस ने शुक्रवार को ट्वीट कर कहा, "अमेरिका डॉयचे वेले के मास्को कार्यालय को बंद करने के रूसी सरकार के फैसले की निंदा करता है। हम स्वतंत्र मीडिया, राजनीतिक विरोध और नागरिक समाज पर रूस की कार्रवाई का सामना करने के लिए डॉयचे वेले और जर्मनी के साथ खड़े हैं।ह्व

उल्लेखनीय है कि रूस के विदेश मंत्रालय ने गुरुवार को घोषणा की थी कि जर्मनी में आरटी-डीई पर लगाए प्रतिबंध के जवाब में मास्को में डीडब्ल्यू के ब्यूरो दफ्तर को बंद किया जाएगा। डीडल्यू के कर्मचारियों की मान्यता को रद्द कर देगा और डब्ल्यूडी उपग्रह और अन्य प्रसारणों को समाप्त करेगा।

पेरू के नाजका लाइन्स में विमान के दुर्घटनाग्रस्त होने से सात लोगों की मौत

लीमा। पेरू के नाजका लाइन्स रेगिस्तान में शुक्रवार को एक हल्के विमान के दुर्घटनाग्रस्त होने से उसमें सवार सभी सात लोगों की मौत हो गई। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। नाजका में 82वीं फायर कंपनी के एक दमकलकर्मी ब्रिगेडियर जुआन तिराडो ने बताया कि विमान शहर के एक हवाई अड्डे के पास गिरा और उसमें सवार ह्यह्यकोई व्यक्ति जीवित नहीं बचा। विमान के मालिकाना हक वाली कंपनी एयरो सांतोस ने बताया कि विमान में पांच पर्यटक, एक चालक और एक सह चालक था। पर्यटकों की पहचान अभी नहीं हो पाई है।

पंजगुर हमले के बाद की गई कार्रवाई में बलूचिस्तान में तीन आतंकवादी मारे गए: पाकिस्तानी सेना

क्वेटा (पाकिस्तान)। पाकिस्तान के पंजगुर और नौशकी में सेना के शिविरों पर हुए हमलों के एक दिन बाद बलूचिस्तान प्रांत के बालघाटार इलाके में सुरक्षा बलों की कार्रवाई में शुक्रवार को तीन आतंकवादी मारे गए। सेना की मीडिया संबंधी मामलों की शाखा ने बताया कि आतंकवादी पंजगुर इलाके के फ्रंटियर कोर्प शिविर में हुए हालिया हमले संबंधी एक ठिकाने में सेना के अभियान के दौरान मारे गए।पाकिस्तान के अशांत दक्षिण-पश्चिमी बलूचिस्तान प्रांत में हथियारों से लैस हमलावरों ने बृहस्पतिवार को सुरक्षा बलों के शिविरों पर हमला कर दिया था, जिसके बाद हुई भीषण मुठभेड़ में कम से कम 15 आतंकवादी मारे गए थे। इस घटना में चार सैनिकों की भी मौत हो गई थी। एक अन्य घटना में बलूचिस्तान के सीमावर्ती शहर चमन में आतंकवादियों ने एक हथगोला फेंककर हमला किया, जिसमें लेवी (अर्द्धसैन्य कानून प्रवर्तन संगठन) के दो कर्मियों सहित छह लोग घायल हो गए।

प्रिंस चार्ल्स बने राजा तो कैमिला होंगी ब्रिटेन की नई महारानी

लंदन। ब्रिटेन की महारानी एलिजाबेथ द्वितीय ने देश की अगली महारानी के नाम का ऐलान कर दिया है। महारानी बनने की 70वीं वर्षगांठ के मौके पर महारानी ने कहा कि प्रिंस चार्ल्स के राजा बनने पर उनकी पत्नी कैमिला देश की नई महारानी होंगी। प्रिंस चार्ल्स ने अपनी पहली पत्नी प्रिंसेस डायना की एक दुर्घटना में मौत के बाद वर्ष 2005 में कैमिला से विवाह किया था।

महारानी एलिजाबेथ ने ब्रिटेन की जनता के नाम एक पत्र लिखकर ब्रिटेन की जनता द्वारा उनके प्रति दिखाए गए स्नेह को याद करते हुए कहा है कि वह चाहेंगी कि जब प्रिंस चार्ल्स राजा बनें तो कैमिला को महारानी की उपाधि मिले। प्रिंस चार्ल्स व कैमिला ने 2005 में विंडसर महल में समारोहपूर्वक शादी की थी। महारानी एलिजाबेथ

द्वितीय के इस एलान से कैमिला को राजपरिवार के सदस्य के रूप में मान्यता मिल गई है। महारानी एलिजाबेथ 6 फरवरी, 1952 को उस समय ब्रिटेन की महारानी बनी थी जब उनके पिता किंग जार्ज षष्टम का अचानक निधन हो गया था। महारानी एलिजाबेथ ने अपने पत्र में कहा है कि जब भी समय आएगा, उनका बेटा चार्ल्स राजा बनेगा। उन्होंने उम्मीद जताई है कि ब्रिटेन की जनता प्रिंस चार्ल्स और उनकी पत्नी कैमिला को वैसा ही समर्थन प्रदान करेंगे, जैसा उन्हें मिलता रहा है। उन्होंने इच्छा जाहिर की है कि जब समय आए तो कैमिला को ब्रिटेन की महारानी माना जाए और वह इसी रूप में देश की सेवा करें। 95 साल की एलिजाबेथ द्वितीय ब्रिटेन पर 70 साल राज करने वाली ब्रिटेन की पहली शासक हैं।

अफगानिस्तान में आतंक को आजादी, तालिबान से मिला ओसामा का बेटा -संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की रिपोर्ट में रहस्योद्घाटन

काबुल। अफगानिस्तान की सत्ता तालिबान के हाथ में आने के बाद से वहां आतंक को आजादी मिल गई है। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की एक हालिया रिपोर्ट में इसे लेकर चिंता जताते हुए रहस्योद्घाटन किया गया है कि कुख्यात आतंकी सरगना ओसामा बिन लादेन के बेटे ने तालिबान से मुलाकात की है।

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद अफगानिस्तान में आतंक के विस्तार को लेकर चिंतित है। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने अपनी रिपोर्ट में अफगानिस्तान को लेकर बड़े खतरे का संकेत दिया है। रिपोर्ट में कहा गया है कि अलकायदा के मारे गए आतंकी ओसामा बिन लादेन के बेटे ने अक्टूबर 2021 में तालिबान से मुलाकात की थी। रिपोर्ट में कहा गया है कि अफगानिस्तान में आर्तकियों

को अभी जैसी आजादी हालिया इतिहास में कभी नहीं मिली। रिपोर्ट का दावा है कि इस बात के कोई संकेत नहीं हैं कि तालिबान ने अफगानिस्तान में विदेशी आतंकियों की गतिविधियों पर काबू के कोई कदम उठाए हैं। इसके उलट वहां आतंकी गुटों को और ज्यादा छूट मिल गई है।संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की वर्ष में दो बार पाबंदी नियंत्रण समिति की रिपोर्ट जारी करता है ताकि इस्लामिक स्टेट व अलकायदा जैसे संगठनों के आतंकियों पर पाबंदियों को और सख्त किया जा सके। हाल ही में जारी समिति की 29 वीं रिपोर्ट में कहा गया है कि अलकायदा के सरगना रहे ओसामा बिन लादेन के बेटे ने अक्टूबर में अफगानिस्तान जाकर तालिबान के नेताओं से मुलाकात की थी।

अमेरिका ने दी ईरान को परमाणु कार्यक्रम के प्रतिबंधों पर राहत, ट्रंप ने खत्म की थी छूट

वाशिंगटन। अमेरिका ने ईरान को परमाणु कार्यक्रम के प्रतिबंधों से छूट देने के साथ दोनों देशों के बीच के तनाव को थोड़ा कम करने का काम किया है। जो बाइडन प्रशासन के विदेश विभाग के अधिकारी ने कहा कि 2020 में डोनाल्ड ट्रम्प प्रशासन ने परमाणु कार्यक्रम पर प्रतिबंध लगा दिया था। अब तेहरान के परमाणु कार्यक्रम को नियंत्रित करने के लिए वियना में नए समझौते पर वार्ता की जा सकती है। ईरान की असैन्य परमाणु गतिविधियों से संबंधित कई प्रतिबंधों से छूट देने के लिए हस्ताक्षर किए गए हैं। गौरतलब है कि, अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के प्रशासन ने ये छूट समाप्त कर दी थीं। अमेरिकी अधिकारी ने कहा कि इन छूटों का उद्देश्य ईरान को 2015 के समझौते के पालन के लिए प्रेरित करना है,

जिसका ईरान उल्लंघन कर रहा है। ट्रंप 2018 में इस समझौते से पीछे हट गए थे और ईरान पर अमेरिकी प्रतिबंधों को फिर से लागू कर दिया था। अमेरिकी अधिकारी ने कहा कि समझौते में वापसी के लिए समर्थन जुटाना महत्वपूर्ण है। उन्होंने इस बात से इनकार किया कि वे ईरान को कोई रियायत दे रहे हैं।

अधिकारियों ने कहा कि अन्य पक्षों ब्रिटेन, चीन, फ्रांस, जर्मनी, रूस और यूरोपीय संघ को समझौते की वार्ता में शामिल करने के लिए छूट आवश्यक है। अमेरिकी अधिकारी ने कहा कि, हमने ईरान को प्रतिबंधों से राहत नहीं दी है। हम ईरान के ह्यसंयुक्त व्यापक कार्य योजनाह्ल (जेसीपीओए) के तहत अपनी प्रतिबद्धताओं पर लौटने तक ऐसा नहीं करेंगे। ईरान का कहना है कि वह समझौते की शर्तों का सम्मान नहीं कर रहा है, क्योंकि अमेरिका ही पहले इससे अलग हो गया था। ईरान ने सभी प्रतिबंधों से राहत की बहाली की मांग की है। हालांकि, अधिकारियों ने दोनों पक्षों को अलग करने वाले सबसे कठिन मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए वाशिंगटन और तेहरान के बीच सीधी बातचीत का प्रस्ताव रखा। अधिकारी ने कहा कि अगर कोई अंतिम समझौता नहीं होता है तो परमाणु हथियारों के अप्रसार पर चर्चा करने के लिए छूट महत्वपूर्ण है, पूरी दुनिया के हित में है। अधिकारी ने जोर देकर कहा कि यह कदम एक बदले की भावना का हिस्सा नहीं था, क्योंकि जेसीपीओए वार्ता में भागीदार प्रमुख मुद्दों पर ईरान की प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

तालिबान राज में बंद हुए थोक के भाव मीडिया संस्थान, 300 से अधिक ने बोरिया बिस्तर समेटा

काबुल। अफगानिस्तान में पिछले साल 15 अगस्त को तालिबान की वापसी के बाद सब कुछ बदल गया है। आर्थिक हालात हर दिन के साथ बदतर होते जा रहे हैं। मीडिया के अधिकांश संस्थान तालिबान राज में दम तोड़ रहे हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार पिछले छह माह में 300 से अधिक मीडिया संस्थान अपना बोरिया बिस्तरा समेट चुके हैं। करीब 73 फीसदी महिला पत्रकारों की नौकरी जा चुकी है। तालिबान के सत्ता संभालने के बाद एक तरफ जहां महिलाओं के मौलिक अधिकारों को दबाया गया तो वहीं दूसरी तरफ देश में मीडिया और पत्रकारों ने अपनी स्वतंत्रता खो दी है।

तालिबान शासन में अफगान के हालात दिन-ब-दिन बिगड़ते जा रहे हैं। महामारी, आर्थिक संकट, सूखे -भुखमरी के साथ-साथ देश ढेरों परेशानियों से जूझ रहा है। अभी भी तालिबान सरकार की दहशतगर्दी खत्म होने का नाम नहीं ले रही है। एक रिपोर्ट के मुताबिक अफगानिस्तान के 34 प्रांतों में से 33 में कम से कम 318 मीडिया आउटलेट को बंद कर दिया गया है।

इंटरनेशनल फेडरेशन आफ जर्नलिस्ट्स (आईएफजे) ने गुरुवार को एक रिपोर्ट जारी कर कहा कि 51 टीवी स्टेशनों, 132 रेडियो स्टेशनों और 49 आनलाइन मीडिया आउटलेट्स ने अपना संचालन बंद कर दिया है। संकट के समय में समाचार पत्रों पर सबसे ज्यादा असर पड़ा है, जिसमें 114 में से केवल 20 समाचार पत्रों ने अपना प्रकाशन जारी रखा है। आईएफजे ने कहा कि 5069 में केवल 2,334 पत्रकार फिलहाल कार्यरत हैं। नौकरी गंवाने वाले पत्रकारों में 72 फीसदी महिलाएं शामिल हैं। आइएफजे की रिपोर्ट में कहा गया है, 'मीडिया द्वारा अभी भी 243 महिलाओं को रोजगार दिया जाता है।' आईएफजे महासचिव एंथोनी बेलांगर ने कहा कि खतरों से लेकर कठोर रिपोर्टिंग प्रतिबंधों और आर्थिक पतन से लेकर विकास निधि को वापस लेने तक की तस्वीर न केवल उन पत्रकारों के लिए विनाशकारी है, जो अपनी नौकरी खो चुके हैं या भागने के लिए मजबूर हो गए हैं बल्कि उन नागरिकों के लिए भी, जिन्हें सूचना की पहुंच से वंचित किया जा रहा है। अफगान इंडिपेंडेंट जर्नलिस्ट्स एसोसिएशन के प्रमुख हुजतुल्लाह मुजादीदी ने कहा कि अफगान मीडिया समुदाय ने तालिबान से मीडिया को सूचना तक पहुंच बनाने में मदद करने का आह्वान किया है।

अमेरिकी दबाव में तालिबान ने 14 महिला कार्यकर्ताओं को किया रिहा

काबुल। अमेरिकी और दूसरे देशों के दबाव के चलते तालिबान ने 'लापता' 14 महिला कार्यकताओं को रिहा कर दिया है। एक रिपोर्ट के अनुसार तालिबान ने वैश्विक दबाव से निपटने के लिए इन महिला कार्यकताओं को रिहा किया है। अफगानिस्तान की राजधानी काबुल की महिला जेल से 14 महिलाओं को रिहा किया गया है।

तालिबान के आंतरिक मामलों के मंत्रालय में काउंटर नार्कोटिक बॉडी के डिप्टी मौलेई अब्दुल हक ने कहा है कि रिहा किए गए कैदियों ने सामाजिक व्यवस्था को नुकसान पहुंचाने वाली गतिविधियों को नहीं करने का वादा किया है। लापता महिला अधिकार कार्यकताओं की दूसरी घटना की रिपोर्ट के बीच तालिबान ने यह कदम उठाया है। महिला कार्यकर्ता जहरा मोहम्मदी और मुरसल अयार दो दिन पहले ही लापता हो गई थीं। करीब दो हफ्ते पहले तमना परयानी और परवाना इब्राहिमखिल भी लापता हो गई थीं।

अफगान महिलाओं के लिए अमेरिका की

विशेष दूत रीना अमीरी ने कहा कि तालिबान अगर दुनिया के देशों से वैधता चाहता है तो उसे अफगान लोगों के मानवाधिकारों का सम्मान करना चाहिए, खासकर महिलाओं के लिए। उन्होंने कहा है कि ये अन्यायपूर्ण नजरबंदी बंद होनी चाहिए। इन महिलाओं और अन्य कार्यकताओं को तुरंत रिहा करना चाहिए। वैश्विक दबाव के आगे तालिबान को झुकते हुए इन महिला कार्यकताओं को रिहा करना पड़ा है।

अफगानिस्तान में हवाई अड्डे पर हुए आत्मघाती हमले को रोका नहीं जा सकता था: पेंटागन

वाशिंगटन। अफगानिस्तान से अमेरिकी सैनिकों की वापसी के दौरान हुए हमले की सैन्य जांच के बाद निष्कर्ष निकला है कि हमले को 20 पाउंड विस्फोटक लिये हुए आत्मघाती हमलावर ने अकेले अंजाम दिया था और इस हमले में 170 अफगान नागरिकों और अमेरिका के 13 सैनिकों की मौत को रोका नहीं जा सकता था। यह विस्फोट 26 अगस्त को काबुल हवाई अड्डे के ह्यएबे गेटह्ल के बाहर हुआ था, जिसमें अमेरिका के 11 नौसैनिक, एक नाविक और एक सैनिक की मौत हो गई थी, जो अफगानिस्तान पर तालिबान के नियंत्रण के बाद देश से निकलने की कोशिश कर रहे हजारों अफगान नागरिकों की जांच कर रहे थे।

हमले की जिम्मेदारी इस्लामिक स्टेट ने ली थी। पेंटागन में शुक्रवार को सैन्य अधिकारियों ने ग्राफिक्स के जरिये बम हमले की मिनट-दर-मिनट की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने कहा कि हमले में जान गंवाने वालों के घाव ह्वइतने जानलेवाह्ल थे कि उन्हें बचाया नहीं जा सकता था। उन्होंने यह भी कहा कि शुरूआत में लगा था कि हमले में गोलीबारी की गई, लेकिन यह बात सही नहीं निकली। अमेरिकी सेंट्रल कमान के प्रमुख जनरल फ्रैंक मैकेंजी ने कहा, ह्वएबे गेट पर हुए हमले को एक विस्फोटक उपकरण के जरिये अंजाम दिया था, जिसमें 170 अफगान नागरिकों और 13 अमेरिकी सैनिकों की मौत हो गई थी। उन्होंने कहा कि इस उपकरण की घातकता का अंदाजा इस बात के लगाया जा सकता है कि बेहतरीन बम रोधी जैकेट और हेलमेट पहने होने के बावजूद अमेरिकी सैनिकों की मौत हो गई। जांचकताओं ने कहा कि हमलावर तालिबान और अन्य सुरक्षा चौकियों को चकमा देकर गेट के पास पहुंचा। उन्होंने कहा कि ऐसा लगता है कि तालिबान को हमले के बारे में पता नहीं था, सुरक्षा सावधानी बरती जा रही थी और उस दिन प्रसारित होने वाले संभावित खतरों के बारे में खुफिया जानकारी स्पष्ट नहीं थी। जांच का नेतृत्व करने वाले ब्रिगेडियर जनरल लांस कर्टिस ने कहा, ह्वहमारी जांच के आधार पर, सामरिक स्तर पर इसे रोका नहीं जा सकता था।

तनाव के बीच फ्रांस, जर्मनी के नेता रूस, यूक्रेन के दौरे पर

पेरिस। फ्रांस के राष्ट्रपति और जर्मनी के चांसलर आगामी सप्ताह में रूस और यूक्रेन की यात्रा करेंगे। इस यात्रा से यूक्रेन को लेकर बढ़ते तनाव से निपटने के लिए रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के साथ बातचीत कर इसका हल तलाशने के राजनयिक प्रयासों को बल मिलेगा। फ्रांस के राष्ट्रपति एमैनुएल मैक्रों सोमवार को मास्को और मंगलवार को कीव की यात्रा करेंगे, जबकि जर्मनी के चांसलर ओलाफ शोल्ज 14 फरवरी को कीव और 15 फरवरी को मास्को की यात्रा करेंगे।

ये उच्च-स्तरीय यात्राएं ऐसे वक्त में हो रही हैं, जब चीन ने यूक्रेन को शामिल कर नाटो (उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन) को विस्तार करने से रोकने संबंधी रूस की मांग का समर्थन किया है। अमेरिका ने बृहस्पतिवार को क्रेमलिन पर आरोप लगाया कि रूस, यूक्रेन की सेना के एक फर्जी हमले की साजिश रच रहा है, ताकि इसके जवाब में मास्को इस पड़ोसी देश के खिलाफ सैन्य कार्रवाई कर सके। अमेरिका ने इन दावों के समर्थन में विस्तृत जानकारी नहीं दी है, हालांकि रूस ने इन दावों को अस्वीकार किया है।

फ्रांस नाटो में एक प्रमुख सदस्य देश है और संभावित रूसी कार्रवाई के जवाब में गठबंधन की तैयारी के तहत रोमानिया में सैनिकों को भेज रहा है। मैक्रों भी पुतिन के साथ बातचीत पर सक्रिय रूप से जोर दे रहे हैं और उन्होंने हाल के हफ्तों में उनसे कई बार बात की है। मैक्रों के कार्यालय ने शुक्रवार को कहा कि दोनों नेता सोमवार को प्रत्यक्ष मुलाकात करेंगे। मैक्रों भू-राजनीतिक परिदृश्य में अमेरिका से अलग रास्ता अपनाने की फ्रांसीसी परंपरा का पालन कर रहे हैं, साथ ही संकट के समय में अपनी छाप छोड़ने और यूरोप के हितों की रक्षा करने की कोशिश कर रहे हैं।

जर्मनी ने तनाव से निपटने के लिए विभिन्न राजनयिक प्रारूपों के महत्व पर जोर दिया है और यूक्रेन को हथियार भेजने से इनकार कर दिया है, जिससे कुछ सहयोगी नाखुश हैं। संकट के समय में बढ़ चढ़कर भागीदारी नहीं दिखाने के लिए जर्मनी में शोल्ज को आलोचना का भी सामना करना पड़ा है। यूक्रेन के विदेश मंत्री दिमित्रो कुलेबा ने शुक्रवार को कहा कि ह्यह्यशीर्ष स्तर की यात्राएं सुरक्षा के क्षेत्र में चुनौतियों को गंभीरता से कम कर सकती हैं और क्रेमलिन (रूस के राष्ट्रपति कार्यालय) की योजनाओं को प्रभावित कर सकती हैं।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
211019 से प्रकाशित
स्वामी श्री योगी सत्यम एवम् योग सत्संग समिति द्वारा
विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज
से मुद्रित एवम् क्रियायोग आश्रम अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।
Title UPHIN 29506